# मॉयल भारती

अंक 11 : अप्रैल -सितंबर 2024

मॉयल लिमिटेड, मॉयल भवन, 1– ए , काटोल रोड, नागपुर – 440013

मॉयल
MOIL
MOIL LTD.
Adding Strength to Steel!
मॉयल ने
वर्ष 2023-24 में
इतिहास रचा!
उत्पादन 17.56 लाख टन, 35% की वृद्धि
बिक्री 15.36 लाख टन, 30% की वृद्धि
एक्सप्लोरेशन कोर ड्रिलिंग 85,000+ मीटर
गत वर्ष से दो गुना

# अनुक्रमाणिका


| क्र. | विषय | क्र. |
|---|---|---|
| 1 | इस्पात सचिव जी का संदेश | 02 |
| 2 | अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक जी का संदेश | 03 |
| 3 | निदेशक (वित्त) जी का संदेश | 04 |
| 4 | निदेशक (मा.सं.) जी का संदेश | 05 |
| 5 | निदेशक (उ. एवं यो.) जी का संदेश | 06 |
| 6 | निदेशक (वाणिज्य) जी का संदेश | 07 |
| 7 | मुख्य सतर्कता अधिकारी जी का संदेश | 08 |
| 8 | संपादकीय | 09 |
| 9 | वार्षिक कार्यक्रम- 2024-25 | 10 |
| 10 | मॉयल भारती की अब तक की यात्रा | 11-12 |
| 11 | हिन्दी अंग्रेजी शब्द | 13-14 |
| 12 | टिप्पणियाँ | 15-16 |
| 13 | अशुद्ध एवं शुद्ध शब्द | 17 |
| 14 | उपयोगी कार्यलयीन शब्दों के हिंदी पर्याय | 18 |
| 15 | हिंदी में ई-टूल का प्रयोग | 19 |
| 16 | राजभाषा संक्षेप सार | 20 |
| 17 | राजभाषा अधिनियम / कविता - मेरा संघर्ष - संयुक्ता दास | 21 |
| 18 | खानस्तर पर हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताएं एवं कार्यक्रम की झलकियाँ | 22-23 |
| 19 | सगोष्ठी एवं काव्य गोष्ठी | 24 |
| 20 | हिंदी कार्यशाला | 25 |
| 21 | कुछ यादगार पल | 26 |
| 22 | ज्योतिष : प्रारब्ध का फल या पुरुषार्थ की प्रेरणा - श्री राजेश श्रीवास्तव | 27-29 |
| 23 | सन्त काव्य का भाव पक्ष एवं कला पक्ष - डॉ. प्रणव शास्त्री | 30-32 |
| 24 | गुरु पूर्णिमा का महत्व - राधाकांत पाण्डेय | 33-34 |
| 25 | मॉयल : समाचार पत्रो में | 35-36 |
| 26 | बचत - रामअवतार देवांगन | 37 |
| 27 | नशामुक्ती अभियान - अनिल घरडे | 38 |
| 28 | राजभाषा का अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर महत्व - अनिल घरडे | 39 |
| 29 | पर्यावरण के प्रति कैसे जागरुक रहेंगे - शैलेश भिवगड़े | 40 |
| 30 | हिंदी प्रचार - प्रसार को बढ़ावा देने के नियम - रीता ठाकरे | 41 |
| 31 | राजभाषा हिंदी - निजहत खान | 42 |
| 32 | हिंदी का प्रचार-प्रसार- सचिन सोनटक्के | 43 |
| 33 | फुलोंवाली साड़ी - अनिल घरडे / खान का मजदूर - दिव्येश लिम्बाचिया | 44 |
| 34 | आज कुछ अलग सी बात है - अपने हिस्से का पानी - दिनेश कनोजे देहाती | 45 |
| 35 | एक कहानी - हमारी आपकी - भारती रमेश पिल्ले | 46-47 |
| 36 | हिंदी भाषा - हेमलता वि. साखरे | 48 |
| 37 | राष्ट्रीय साहित्यकार सम्मेलन सम्पन्न | 49 |
| 38 | चंदा मामा दूर के - संदीप देवांगन | 50 |
| 39 | शिक्षा एवं राजनीति में युवाओ की भागीदारी - अफरोज अख्तर | 51 |
| 40 | नई पिढ़ियों पर मोबाईल का प्रभाव एवं दुष्प्रभाव - संकटराम ब्रम्हवंशी | 52 |
| 41 | अधिष्ठान - सुखराम ब्रम्हे | 53-54 |
| 42 | गरीब आदमी और उसकी दयालुता - योगेश करमरकर | 55 |
| 43 | सबसे अनमोल तोहफा - अनिता लाड़गे | 56 |
| 44 | अनाथ लड़की - नीता गुजर | 57-59 |
| 45 | लाल चुनरी - विजय कांबडे / बारिश की बुंदे - अंकुर पासी | 60 |
| 46 | चिड़िया से सिख - शमा खोब्रागड़े | 61 |
| 47 | बोले हुए शब्द वापस नहीं आते - नितीन रोकडे | 62 |
| 48 | खाली डिब्बा - अर्चना उम्बर्गी | 63 |
| 49 | अपनी तुलना दुसरों से ना करें - सोनू वासनिक | 64 |

भारत सरकार
इस्पात मंत्रालय
GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF STEEL

नागेन्द्र नाथ सिन्हा
भा. प्र. से. सचिव

# संदेश

मॉयल लिमिटेड के 62वें स्थापना दिवस की ढ़ेर सारी शुभकामनाएं।

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'मॉयल भारती के ग्यारहवें अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में विभागीय पत्रिकाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है तथा विभागीय कर्मचारियों को अपने विचार व्यक्त करने का सशक्त मंच प्रदान करती है।

हिंदी एक व्यावहारिक भाषा है। एक भाषा के रूप में हिंदी न सिर्फ भारत की पहचान है बल्कि यह हमारे जीवन जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की संवाहक भी है। हिंदी भाषा में सभी भाषाओं के शब्दों को अपने में समाहित करने का गुण है। हिंदी हमारी संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और इसके प्रचार-प्रसार से लोगों को देश की समृद्ध विरासत से जुड़ने में मदद मिल सकती है। राजभाषा हिंदी में कार्य करना हमारा नैतिक कर्तव्य ही नहीं बल्कि संवैधानिक दायित्व भी है। हमें सरल, सहज व सुगम हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करना चाहिए ताकि प्रशासन की बात जनमानस तक आसानी से पहुंच सके।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि मॉयल भारती पत्रिका का यह अंक भी अपने पूर्व अंकों की भांति अपने उद्देश्य में सफल होगा।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को बधाई।

नागेन्द्र

**नागेन्द्र नाथ सिन्हा**

मॉयल लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)
मॉयल भवन, 1–ए, काटोल रोड,
नागपुर – 440013

अजित कुमार सक्सेना
अध्यक्ष–सह–प्रबंध निदेशक

# संदेश

प्रिय साथियों,

**आप सभी को मॉयल लिमिटेड के 62वें स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं!!**

मुझे अत्यन्त प्रसन्नता है कि मॉयल लिमिटेड के राजभाषा विभाग की पत्रिका **'मॉयल भारती' के ग्यारहवें अंक का प्रकाशन** कंपनी के 62वें स्थापना दिवस पर किया जा रहा है। पत्रिका का प्रकाशन न केवल राजभाषा हिंदी में कामकाज को गति देता है अपितु कार्मिकों में भाषा की समझ और रचनात्मकता को भी विकसित करता है।

मेरा विश्वास है कि मॉयल अपने प्रयासों से निश्चित ही राजभाषा के क्षेत्र में अव्वल दर्जा हासिल करेगी। हिंदी के प्रति कर्मचारियों की लगन और प्रतिभा हमें इसका भरोसा दिलाती है। देश के स्वतंत्रता संग्राम से लेकर अब तक देश की प्रगति में हिंदी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है और अब यह हमारा दायित्व है कि राष्ट्र की सेवा के लिए हम हिंदी को अपना माध्यम बनाएं और देश के गौरव को बढाएं।

मैं आशा करता हूँ कि पत्रिका 'मॉयल भारती' का यह अंक आप सभी के लिए रुचिकर एवं ज्ञानप्रद होगा तथा राजभाषा हिंदी के प्रयोग हेतु प्रोत्साहित करेगा।

**अजित कुमार सक्सेना**

मॉयल लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)
मॉयल भवन, 1-ए, काटोल रोड,
नागपुर - 440013

राकेश तुमाने
निदेशक (वित्त)

# संदेश

**प्रिय साथियों,**

**आप सभी को मॉयल लिमिटेड के 62वें स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।**

'मॉयल भारती' के ग्यारहवें अंक के माध्यम से अपने विचार व्यक्त करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। किसी भी संगठन की गृह पत्रिका का प्रकाशन उसके अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपनी रचनात्मक प्रतिभा की अभिव्यक्ति का एक सशक्त मंच प्रदान करती है और राजभाषा हिंदी के प्रति अपने विचारों को व्यक्त करने का भी उत्तम माध्यम होती है।

हिंदी एक समृद्ध भाषा है, जिसके पास विशाल शब्द भंडार है। साथ ही साथ यह विचार अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम भी है। भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुसार हमारा संवैधानिक दायित्व राजभाषा हिंदी को उसका महत्वपूर्ण एवं समुचित स्थान दिलाने के लिए सतत प्रयत्नशील रहना है एवं कार्यालयीन कामकाज में हिंदी का अधिकतम प्रयोग हमारा उद्देश्य होना चाहिए।

'मॉयल भारती' पत्रिका के ग्यारहवें अंक के प्रकाशन से जुड़े सभी कर्मियों को बधाई एवं पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

**राकेश तुमाने**

मॉयल लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)
मॉयल भवन, 1–ए, काटोल रोड,
नागपुर – 440013

उषा सिंह
निदेशक (मानव संसाधन)

# संदेश

**प्रिय हिन्दी प्रेमियों !**

**आप सभी को मॉयल लिमिटेड के 62वें स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं!!**

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि मॉयल लिमिटेड के 62वें स्थापना दिवस पर हिंदी गृह पत्रिका **'मॉयल भारती' के ग्यारहवें** अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। इस अवसर पर मैं पत्रिका के प्रकाशन में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं अन्य सदस्यों को बधाई देती हूँ। हिन्दी हमारी राजभाषा हैं इस नाते सरकारी कामकाज में हिन्दी का प्रयोग हमारा संवैधानिक तथा नैतिक कर्तव्य है। इसी कर्तव्य को निभाने के लिए राजभाषा अनुभाग द्वारा गृह पत्रिका का प्रकाशन किया जाता है, जिसके माध्यम से हिन्दी को लोकप्रिय बनाने के साथ–साथ कार्यालय के कर्मचारियों की रचनात्मक प्रतिभा को एक प्लेटफार्म प्रदान किया जाता है। इस उद्देश्य की पूर्ति में पत्रिका 'मॉयल भारती' पहले भी सफल रही है।

इस पत्रिका में छपे लेख एवं कविताएँ प्रभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की रचनात्मक प्रतिभा को उजागर करते हैं। इसके साथ ही ये रचनाएँ राजभाषा के प्रति लगाव व सम्मान भी दिखाती है, मै इस पत्रिका में योगदान देने वाले सभी कर्मचारियों को बधाई देती हूँ।

मै पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति हेतु शुभकामनाएं देती हूँ।

उषा सिंह

**उषा सिंह**

मॉयल लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)
मॉयल भवन, 1–ए, काटोल रोड,
नागपुर – 440013

एम एम अब्दुल्ला
निदेशक (उत्पादन एवं योजना)

# संदेश

**प्रिय साथियों,**

**आप सभी को मॉयल लिमिटेड के 62वें स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं !!**

अत्यंत हर्ष का विषय है कि मॉयल लिमिटेड अपनी राजभाषा गृह पत्रिका **'मॉयल भारती' के ग्यारहवें अंक का प्रकाशन** करने जा रहा है।

राजभाषा हिंदी विभिन्न भाषा–भाषियों तथा संस्कृतियों के बीच एक सेतु का कार्य करती है। राजभाषा हिंदी सांस्कृतिक और सामाजिक परंपरा से धनी है और विचारों व भावों की अभिव्यक्ति में पूर्ण सक्षम भी है। यह भारत के जन–जन के मन में बसी भाषा है।

अतः हमारा संवैधानिक दायित्व और नैतिक कर्तव्य भी है कि हम हिंदी को अपने अधिकारिक विभागीय कार्यों की भाषा बनाएं।

मुझे विश्वास है कि पत्रिका में प्रकाशित रचनाएं पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक, रोचक तथा रचनात्मक भाव सृजन करने में सफल होगी।

राजभाषा गृह पत्रिका 'मॉयल भारती' के ग्यारहवें अंक के प्रकाशन हेतु असीम शुभकामनाएं।

**एम एम अब्दुल्ला**

मॉयल लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)
मॉयल भवन, 1-ए, काटोल रोड,
नागपुर - 440013

रश्मि सिंह
निदेशक (वाणिज्य)

# संदेश

**प्रिय साथियों,**

**आप सभी को मॉयल लिमिटेड के 62वें स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं!!**

कार्यालय की गृह हिंदी पत्रिका 'मॉयल भारती' के ग्यारहवें अंक का प्रकाशन मेरे लिए अत्यंत हर्ष का विषय है। पत्रिका का सफल प्रकाशन, कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों का राजभाषा हिंदी के प्रति प्रेम एवं आस्था को दर्शाता है ।

भारत के संविधान में हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्रदान किया गया है। अतः राजभाषा हिंदी के प्रयोग में प्रगति करना भारत के नागरिकों का संवैधानिक कर्त्तव्य है। इस दिशा में 'मॉयल भारती' की भूमिका काफी प्रशंसनीय एवं उपलब्धिपूर्ण है क्योंकि राजभाषा प्रचार-प्रसार का जो लक्ष्य रखा गया है उसे पूरा करने में राजभाषा पत्रिकाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहता है।

मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक भी पूर्व में प्रकाशित अंको की भाँति पाठकों की उम्मीदों पर खरा उतरेगा तथा राजभाषा हिंदी के विकास में सहायक होगा। पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए पत्रिका के सफल प्रकाशन एवं रचनात्मक उन्नति हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं ।

रश्मि सिंह

**रश्मि सिंह**

मॉयल लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)
मॉयल भवन, 1–ए, काटोल रोड,
नागपुर – 440013

प्रदीप कामले
मुख्य सतर्कता अधिकारी

# संदेश

**प्रिय साथियों,**

आप सभी को **मॉयल लिमिटेड के 62वें स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं!!**

राजभाषा हिन्दी विभिन्नता में एकता का प्रतीक है। हिंदी विभिन्न भाषा–भाषियों तथा संस्कृतियों के बीच एक सेतु का कार्य करती है। राजभाषा हिंदी सांस्कृतिक और सामाजिक परंपरा की धनी है और विचारों व भावों की अभिव्यक्ति में पूर्ण सक्षम भी है। यह भारत के जन–जन के मन में बसी भाषा है। अतः हमारा संवैधानिक दायित्व एवं नैतिक कर्तव्य भी है कि हम हिंदी को अपने अधिकाधिक विभागीय कार्यों की भाषा बनाएं। मुझे विश्वास है की पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक तथा रचनात्मक भाव सृजन करने में सफल होंगी।

मै पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा इसकी उत्तरोत्तर प्रगति हेतु शुभकामनाएं देता हूँ।

प्रदीप

**प्रदीप कामले**

# संपादकीय

## संपादक मंडल

**अजित कुमार सक्सेना**
अध्यक्ष
सह प्रबंध निदेशक

**उषा सिंह**
निदेशक
(मानव संसाधन)

**नितीन पागनीस**
संयुक्त महाप्रबंधक (कार्मिक)

**एन. डी. पाण्डेय**
कंपनी सचिव

**पूजा वर्मा**
राजभाषा अधिकारी

प्रिय पाठक गण,

कंपनी के 62वें स्थापना दिवस पर गृह पत्रिका 'मॉयल भारती' के ग्यारहवें अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है।

राजभाषा हिंदी, सांस्कृतिक विविधता में एकता का प्रतीक है। हिंदी विभिन्न भाषा–भाषियों के बीच एक सेतु का कार्य करती है। राजभाषा हिंदी सांस्कृतिक और सामाजिक परंपरा की धनी है और विचारों और भावों की अभिव्यक्ति में पूर्ण सक्षम भी है। यह भारत के जन–जन के मन में बसी भाषा है। अतः हमारा संवैधानिक दायित्व तथा नैतिक कर्तव्य भी है कि हम हिंदी को अपने अधिकाधिक विभागीय कार्यों की भाषा बनाएं।

इस पत्रिका में, हमारे शीर्ष नेतृत्व के मार्गदर्शन के साथ ही मॉयल कर्मियों की साहित्यिक अभिव्यक्तियों को भी स्थान दिया गया है।

मुझे आपकी प्रतिक्रिया का इंतजार रहेगा तो आईये इस ग्यारहवें अंक की यात्रा का शुभारंभ करते है।

धन्यवाद !

जय हिन्द! जय हिन्दी !

**पूजा वर्मा**
संपादक– मॉयल भारती

**अस्वीकरण**

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के है। कंपनी का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। रचनाओं की मौलिकता के लिए भी लेखक स्वयं जिम्मेदार है।

# संघ की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए वार्षिक कार्यक्रम वर्ष 2024-25

| क्र.सं. | कार्य विवरण | ''क'' क्षेत्र | ''ख'' क्षेत्र | ''ग'' क्षेत्र |
|---|---|---|---|---|
| 1 | हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित) | 1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100 %<br>2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100 %<br>3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 65%<br>4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र 100 % के राज्य/ संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/ व्यक्ति | 1. ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 90%<br>2. ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 90%<br>3. ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55%<br>4. ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र 90% के राज्य/ संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/ व्यक्ति | 1. ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 55%<br>2. ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 55%<br>3. ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55%<br>4. ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र 55% के राज्य/ संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/ व्यक्ति |
| 2 | हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना | 100% | 100% | 100% |
| 3 | हिंदी में टिप्पण | 75% | 50% | 30% |
| 4 | हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम | 70% | 60% | 30% |
| 5 | हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती | 80% | 70% | 40% |
| 6 | हिंदी में डिटेक्शन/ की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा) | 65% | 55% | 30% |
| 7 | हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि) | 100% | 100% | 100... |
| 8 | द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना | 100% | 100% | 100% |
| 9 | जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्ताकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल सामग्री अर्थात हिंदी ई-पुस्तक, सीडी/डीवीडी, पैन ड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तको की खरीद पर किया गया व्यय। | 50% | 50% | 50% |
| 10 | हिंदी और अंग्रेजी दोनो भाषाओं में काम करने की सुविधायुक्त इलेक्ट्रानिक उपकरणों जिनमें कंप्यूटर भी शामिल है, की खरीद | 100% | 100% | 100% |
| 11 | वेबसाइट द्विभाषी हो | 100% | 100% | 100% |
| 12 | नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्ड आदि द्विभाषी रूप में प्रदर्शित किए जाएं। | 100% | 100% | 100% |
| 13 | (i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों क अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण | 25% (न्यूनतम) | 25% (न्यूनतम) | 25% (न्यूनतम) |
| | (कार्यालयों का प्रतिशत) | | | |
| | (ii)) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण | 25% (न्यूनतम) | 25% (न्यूनतम) | 25% (न्यूनतम) |
| | (iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयो/ उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण | वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण | | |
| 14 | राजभाषा संबंधी बैठके | | | |
| | (क) हिंदी सलाहकार समिति | वर्ष में 2 बैठकें | | |
| | (ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति | वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक) | | |
| | (ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति | वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक) | | |
| 15 | कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया साहित्य का हिंदी अनुवाद | 100% | 100% | 100% |
| 16 | मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/ बैकों/उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हों। | 40% | 30% | 20% |
| | | (न्यूनतम अनुभाग)<br>सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, '' क '' क्षेत्र में कुल कार्य का 40% ''ख'' क्षेत्र में 25 % और ''ग'' क्षेत्र में 15% कार्य हिंदी में किया जाए। | | |

# मॉयल भारती की अब तक की यात्रा

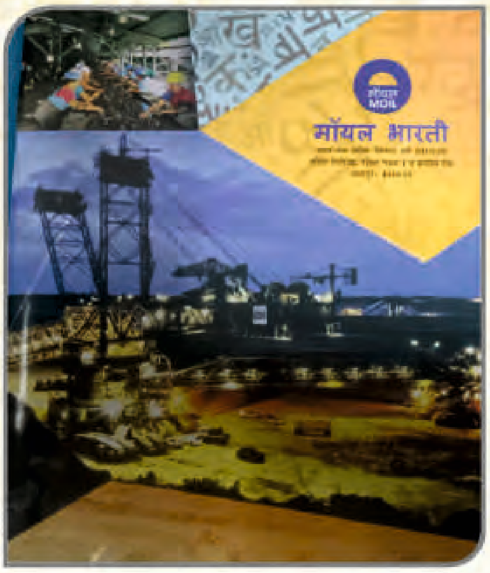


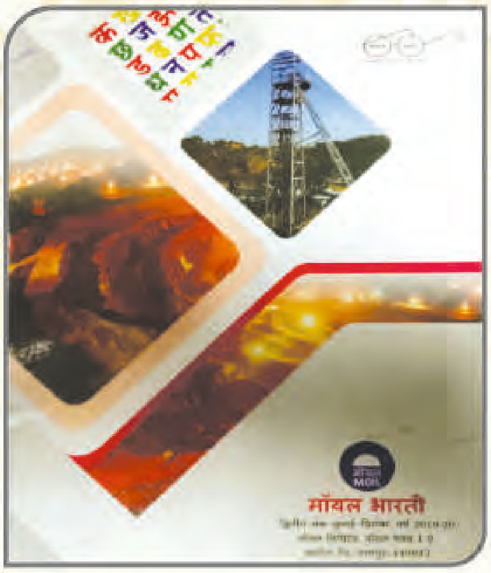


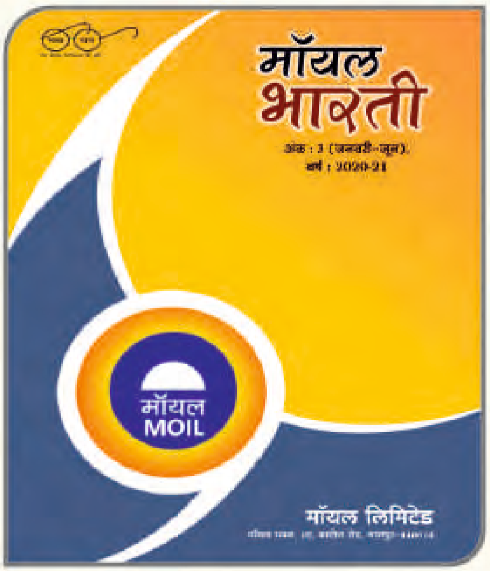

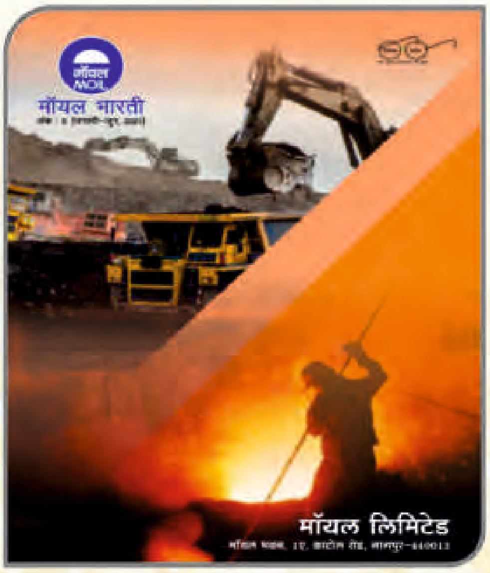


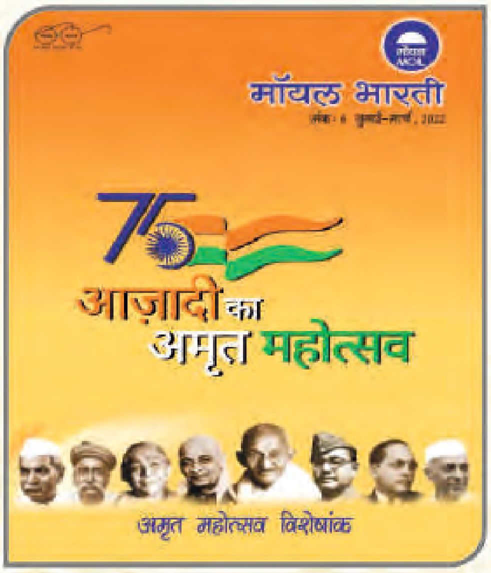

# मॉयल भारती की अब तक की यात्रा

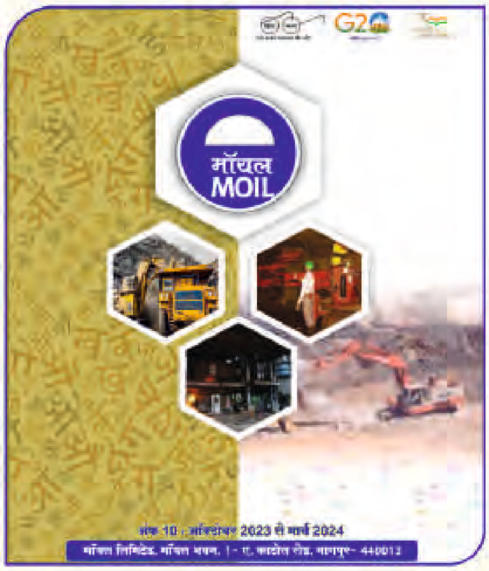


## हिंदी को प्रोत्साहित करती गृह पत्रिका मॉयल भारती

भारत सरकार के केंद्रीय इस्पात उपक्रमों में से एक मिनी रत्न 'ए' शेड्युल कंपनी मॉयल लिमिटेड ऐसा उपक्रम है जो सीमित साधन एवं सुविधाओं में सभी राष्ट्रीय कार्यक्रमों का संचालन सफलता पूर्वक करते हुए अपने दायित्वों का निर्वाहन बिना किसी अवरोध के करते आ रहा है। केंद्र सरकार की मंशा के अनुसार मॉयल लिमिटेड मातृभाषा हिंदी को प्रोत्साहित करने एवं कंपनी का अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करने के लिये लगातार सक्रिय है। राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार को उत्तरोत्तर बढाने के लिये यह जरूरी है कि हम हिंदी को अपनी मूल प्रक्रिया का माध्यम बनाये, भाषा जो हमे एक दूसरे से जोड़ती है। यह देश में सबसे अधिक बोली व समझी जाने वाली मातृभाषा है ।

"मॉयल भारती" को वर्ष **2020-21** के लिए "ख" क्षेत्र हेतु राजभाषा कीर्ति पुरस्कार से भी पुरस्कृत किया गया है ।

"मॉयल भारती" ई– पत्रिका के रूप में राजभाषा विभाग की वेबसाइट पर भी उपलब्ध है ।

# हिन्दी अंग्रेजी शब्द

| | | | |
|---|---|---|---|
| Absenteeism | अनुपस्थिति | Festival Advance | त्यौहार अग्रिम |
| Absence on duty | कर्तव्य/कार्य से अनुपस्थिति | Geological Survey | भूगर्भ परीक्षण |
| Absence without leave | बिना छुट्टी के गैरहाजिर | Gist | निष्कर्ष, तात्पर्य |
| Absolute disregard of law | नियम या कानून की पूर्ण अवहेलना | Give effect to | कार्यान्वित करना |
| Absorption, Immediate | तत्काल | Given under my hand | मेरे हस्ताक्षर से दिया गया |
| Benevolent Fund | हितकार्य निधी | Govt. Order | सरकारी आज्ञा |
| Bipartite | द्विपक्षीय | Good Behavior | अच्छा व्यवहार |
| Birth Certificate | जन्मतिथि प्रमाणपत्र | Hamper | बाधा डालना |
| Board of Trustee | न्यासीमंडल | Hand-cuff | हथकड़ी लगाना |
| Bonafide | वास्तविक, प्रामाणिक | Heading | शीर्षपंक्ति |
| Censure | परिनिन्दा | Health | स्वास्थ्य |
| Certain | अचूक, अटल | Heir | उत्तराधिकारी |
| Certified Copy | प्रमाणित प्रतिलिपि | Imprest | अग्रधन, पेशगी |
| Character Verification | चरित्र सत्यापन | Initiate action accordingly | तदनुसार उत्तर भेज दे |
| Character Roll | चरित्र लेखा | Imputation | अभ्यारोपण, लांछन |
| Debts Due | प्राप्य ऋण | In Abeyance | स्थगित |
| Deceased | मृत | Incentive | प्रोत्साहन |
| Decided on | निश्चय किया गया | Jt. Secretary | संयुक्त सचिव |
| Declaration | घोषणा | Journey | यात्रा |
| Decree | न्यायपत्र | Judge | न्यायाधीश |
| Election | निर्वाचन, चुनाव | Judgement | निर्णय, फैसला |
| Election Campaign | चुनाव अभियान | Judicial | न्यायिक, अदालती |
| Elected | निर्वाचित | Lay-out | अभिन्यास |
| Elementary | प्रारंभिक, प्राथमिक | Lacuna | रिक्ति, कमी |
| Eligible | पात्र, योग्य | Land | भूमि |
| Fall short of | कम होना | Land Acquisition | भूमि अर्जन |
| Family Pension Scheme | परिवार पेंशन योजना | Leave Travel Concession | छुट्टी यात्रा प्रसुविधा |
| Fatel | घातक | Market Rate | बाजार दर |
| Feasible | साध्य | Mark Sheet | अंकसूची |
| Matter | पदार्थ, विषय, मामला | Schedule of Rate | दरों की अनुसूची |
| May be considered | विचार किया जाए | Secondary Evidence | गौण साक्ष्य |

# हिन्दी अंग्रेजी शब्द

| | | | |
|---|---|---|---|
| May be informed accordingly | तद्नुसार सूचित किया जाए | Serious Misconduct | गंभीर अवचार |
| Nominate | मनोनित करना | Scholarship | छात्रवृत्ति |
| Nominee | मनोनित व्यक्ति | Scope | विस्तार, क्षेत्र |
| No Objection Certificate | अनापत्ति प्रमाणपत्र | Scheme | योजना |
| Normally | सामान्यतः | Scrutiny | सूक्ष्म परीक्षा |
| Not avilable | अप्राप्य | Take Measure | उपाय करना |
| Offer of appointment | नियुक्ति प्रस्ताव | Take stock of situation | स्थिति को समझ लेना |
| Obligation | देय, दायित्व | Take care of | सावधानी रखना |
| Observe | अवलोकन करना | Take effect | लागू होना |
| Occasional Check | आकस्मिक पड़ताल | Take of granted | मान लेना |
| Occupier | अधिभोगी | Take notice | ध्यान में रखना |
| Pay bill | वेतन चिठ्ठा | Take off | दूर करना, हटाना |
| Pay Data | वेतन डेटा | Take the orders | आदेश पालन करना |
| Payee | प्राप्तिकर्ता, पानेवाला | Take Notice | ध्यान में रखना |
| Payment Order | भुगतान आदेश | Target | लक्ष्य, उद्देश्य |
| Personal Pay | वैयक्तिक वेतन | Task | कार्यभार |
| Quorum | कोरम, गणपूर्ति | Tech. Knowledge | प्रौद्योगिक ज्ञान |
| Ready cash | नकदी रकम | Tender | निविदा |
| Ready Reckoner | शीघ्रगणना तालिका | Tender form rate | निविदा पत्र की दर |
| Reasonable | उचित | Tenure | पदावधि |
| Reassessment | पुनः कर निर्धारण | Terms | शर्तें |
| Reconciliation | समझौता | Termination | समाप्ति |
| Sale | बिक्री, विक्रय | That is to say | अर्थात |
| Salable | विक्रय योग्य | Theory | सिद्धान्त |
| Salient | स्पष्ट, मुख्य | Thereby | उसमें |
| Sanction | स्वीकृत | Unacceptable | अस्वीकार्य |
| Sample | नमूना | Uncalled for | अनुचित, अपचित |
| Satisfactory | संतोषप्रद | Unanimous | सर्वसम्मत |
| Scale of pay | वेतनमान | Unauthorised | अनाधिकृत |
| Scheduled | अनुसूचित | Unavoidable | अपरिहार्य, अनिवार्य |

# टिप्पणियाँ

| | |
|---|---|
| Bill has been scrutinised and found in order | बिल की जांच की गई एवं सही पाया गया। |
| Credit Goes to .... | इसका श्रेय .... को जाता है। |
| Draft for approval | प्रारुप/मसौदा अनुमोदनार्थ। |
| Dereliction of duty | कर्तव्य की अवहेलना। |
| Draft as amendment is put up | यथा संशोधित मसौदा प्रस्तुत है। |
| Draft is concurred in | प्रारुप से सहमति है। |
| Effective Date | प्रभावी होने/अमल मे आने की तारीख |
| Empowered to | को अधिकार दिया गया। |
| Explanation from the defaulter may be obtained | चूक कर्ता से जवाब मांगा जाए। |
| Ex-parte proceeding | एक पक्षीय/इकतरफा कार्यवाही। |
| Follow up action | अनुवर्ती कार्यवाही। |
| For Favourable action | अनुकूल कार्रवाई के लिए। |
| For expression of opinion | मत प्रकट करने के लिए। |
| For onward transmission | आगे भेजने के लिए। |
| For remark | अभियुक्ति के लिए। |
| Forwarded & recommended | अंग्रेषित एवं संस्तुत। |
| Give details | विस्तृत जानकारी दे। |
| Hard and fast rules | सुनिश्चित नियम। |
| Highly objectionable | अत्यंत आपत्तिजनक। |
| Hold lie on post to | पद पर पुर्नग्रहण अधिकार। |
| In the prescribed manner | विहित/निर्धारित ढंग से। |
| I have no further comments | मुझे कुछ नही कहना है। |
| Issue today | आज ही जारी करे। |
| In anticipation of | की प्रतीक्षा/प्रत्याशा में। |
| In Order of preference | वरीयता/अधिमान्यता के क्रम में। |
| Keep in Abeyance | रोके रखा जाए। |
| Matter is under consideration | विषय मामला विचाराधीन है। |
| May be treated as urgent | इसे अति आवश्यक समझा जाए। |
| May be informed accordingly | तदनुसार सूचित किया जाए। |
| No action required/ necessary | किसी कार्रवाई की आवश्यकता नही है |

# टिप्पणियाँ

| | |
|---|---|
| Order are solicited | कृपया आदेश दें। |
| Placed under suspension | निलंबित। |
| Please expedite compliances | शीघ्र अनुपालन करे। |
| Put up for verification | सत्यापन के लिए प्रस्तुत करें। |
| Reminder may be sent | अनुस्मारक/स्मरणपत्र भेजा जाए। |
| Required to be confirmed | पुष्टीकरण अपेक्षित है। |
| Self-contained note | स्वतः पूर्ण टिप्पणी। |
| The file in question is placed below | संदर्भित फाइल नीचे रखी है। |
| The proposal is quite in order | यह प्रस्ताव नियमाकूल है। |
| Violation of rules | नियमों का उल्लंघन। |
| Urgently required | अंविलब चाहिए, तुरंत चाहिए। |
| We are not concerned with this | इसका हमसे कोई संबंध नही है। |
| With retrospective effect | पूर्वप्रभावी/पूर्वव्यापी प्रभाव सहित। |
| You are hereby authorised to | आपको एतद् द्वारा प्राधिकृत किया जाता है। |
| Your requested can not be acceded to | आपका अनुरोध स्वीकार नही किया जा सकता है। |
| In a nutshell | संक्षेप में। |
| Anyhow | येन-केन प्रकारेण/किसी भी तरह सें। |
| Collect the information from concerned section | संबंधित अनुभागों से सूचनाएं एकत्र करें। |
| Dispose the matter in 30 days | 30 दिन के अंदर मामले का निपटान करें। |
| Reply to petitioner | याचिका कर्ता को जवाब दें। |
| Deposit the application fee | आवेदन शुल्क जमा करवाएं। |
| Why disciplinary action may not be taken | अनुशासनिक कार्यवाई क्यों न की जाए। |
| The warning can  be issue to Mr. ... | श्री ..... को चेतावनी दी जा सकती है। |
| This is the last warning to Mr. ..... | श्री ...... को यह अंतिम चेतावनी है। |
| A committee may be formed for disciplinary action | अनुशासनिक कार्यवाई करने के लिए समिति का गठन किया जाए। |
| Take action for suspension | निलंबित करने की कार्यवाही करें। |
| The government servant should not indulge | सरकारी कर्मचारी निजी रोजगार न करें। |
| Converted leave may be granted | परिवर्तित छुट्टी दी जा सकती है। |
| Every new entrance in Govt. service is required to declare his/her home town | सरकारी सेवा में प्रवेश करने वाले प्रत्येक कार्मिक द्वारा अपने गृह नगर की घोषणा करना आवश्यक है। |

# अशुद्ध एवं शुद्ध शब्द

| अशुद्ध शब्द | शुद्ध शब्द | अशुद्ध शब्द | शुद्ध शब्द |
|---|---|---|---|
| अध्यन | अध्ययन | अर्ध | अर्द्ध |
| अगम | अगम | अगामी | आगामी |
| अनुगृह | अनुग्रह | अग्यान | अज्ञान |
| अतिथी | अतिथि | अत्याधिक | अत्यधिक |
| अंताक्षरी | अंत्याक्षरी | अहल्या | अहिल्या |
| अधःगति | अधोगति | आवश्यकीय | आवश्यक |
| अपरान्ह | अपराह्न | इतिहासिक | ऐतिहासिक |
| ईस्वर | ईश्वर | ऐक्य | ऐक्य |
| ऐच्छिक | ऐच्छिक | एश्वर्य | ऐश्वर्य |
| ओद्योगिक | औद्योगिक | ओरत | औरत |
| उपरोक्त | उपर्युक्त | उपलक्ष | उपलक्ष्य |
| क्लेस | क्लेश | कारन | कारण |
| मंत्रि | मंत्री | बंधू | बंधु |
| गाइका | गायिका | ग्रहणी | गृहिणी |
| ग्यान | ज्ञान | घबड़ाना | घबराना |
| घुमना | घूमना | चरन | चरण |
| चाहिये | चाहिए | चांद | चाँद |
| चिंगारी | चिनगारी | चिड़ीया | चिड़िया |
| तदंतर | तदनंतर | तत्व | तत्त्व |
| छिमा | क्षमा | तुफान | तूफान |
| तोल | तौल | जनम | जन्म |
| तैय्यार | तैयार | थान | स्थान |
| जागृत | जाग्रत | जाग्रति | जागृति |
| दीवाली | दिपावली | दुपहर | दोपहर |
| दुश्शासन | दुःशासन | धेनू | धेनु |
| नयी | नई | नर्क | नरक |
| निरोग | नीरोग | ध्वनी | ध्वनि |
| पकोड़ी | पकौड़ी | परमाण | प्रमाण |
| निर्धनी | निर्धन | नीलमा | नीलिमा |
| परिक्षण | परीक्षण | परमैश्वर | परमेश्वर |
| प्रशन | प्रश्न | दिवार | दीवार |
| पती | पति | पड़ौस | पड़ोस |
| सप्ताहिक | साप्ताहिक | वापिस | वापस |
| अधार | आधार | आधीन | अधिन |

# उपयोगी कार्यालयीन शब्दों के हिंदी पर्याय

| क्र. | अंग्रेजी | हिंदी | क्र. | अंग्रेजी | हिंदी |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | Acknowledgement | पावती | 16 | Financial Year | वित्तीय वर्ष |
| 2 | Agenda | कार्यसूची | 17 | General Provident Fund | सामान्य भविष्य निधि |
| 3 | Allotment | आबंटन | 18 | House Rent Allowance | मकान किराया भत्ता |
| 4 | Amendment | संशोधन | 19 | Minutes | कार्यवृत्त |
| 5 | Annual Increment | वार्षिक वेतन वृद्धि | 20 | Nomination | नामांकन |
| 6 | Appropriate Action | उचित कारवाई | 21 | Notice | सूचना |
| 7 | Beneficiary | लाभार्थी | 22 | Notification | अधिसूचना |
| 8 | Circular | परिपत्र | 23 | Office Order | कार्यालय आदेश |
| 9 | Clarification | स्पष्टीकरण | 24 | Office Memorandum | कार्यालय ज्ञापन |
| 10 | Contract | संविदा | 25 | Particulars | विवरण |
| 11 | Correspondence | पत्राचार | 26 | Reference | संदर्भ |
| 12 | Dearness Allow-ance | महंगाई भत्ता | 27 | Resolution | संकल्प |
| 13 | Deputation | प्रतिनियुक्ति | 28 | Service Book | सेवा पुस्तिका |
| 14 | Enclosed | संलग्न | 29 | Subordinate | अधीनस्थ |
| 15 | Expenditure | व्यय | 30 | Tender | निविदा |

# विभिन्न प्रकार की छुट्टीयों के हिंदी पर्याय

| क्र. | अंग्रेजी | हिंदी | क्र. | अंग्रेजी | हिंदी |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | Casual Leave | आकस्मिक छुट्टी | 10 | Extraordinary Leave | असाधारण छुट्टी |
| 2 | Earned Leave | अर्जित छुट्टी | 11 | Leave Without Pay | अवेतन छुट्टी |
| 3 | Half Pay Leave | अर्ध वेतन छुट्टी | 12 | Leave Not Due | अर्जन-शोध्य छुट्टी |
| 4 | Medical Leave | चिकित्सा छुट्टी | 13 | Special Leave | विशेष छुट्टी |
| 5 | Maternity Leave | मातृत्व छुट्टी | 14 | Study Leave | अध्ययन छुट्टी |
| 6 | Paternity Leave | पितृत्व छुट्टी | 15 | Quarantine Leave | संगरोध छुट्टी |
| 7 | Child Care Leave | संतान देखभाल छुट्टी | 16 | Disability Leave | नि:शक्तता छुट्टी |
| 8 | Commuted Leave | परिवर्तित/परिणत छुट्टी | 17 | Special Disability Leave | विशेष नि:शक्तता छुट्टी |
| 9 | Special Casual Leave | विशेष आकस्मिक छुट्टी | 18 | Leave Preparatory To Retirement | सेवानिवृत्ति-पूर्व छुट्टी |

# हिंदी में ई-टूल्स का प्रयोग

हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक हिंदी भारत की पहचान भी है। हिंदी बहुत सरल, सहज और सुगम भाषा होने के साथ विश्व की संभवतः सबसे वैज्ञानिक भाषा है जिसे दुनिया भर में समझने, बोलने और चाहने वाले लोग बहुत बड़ी संख्या में मौजूद हैं। समय के साथ-साथ हिंदी ने भी अपने विकास के लिए आधुनिक तकनीकों का सहारा लिया है। हिंदी की बढ़ती लोकप्रियता के कारण ही आज मोबाइल एवं कंप्यूटर जैसे आधुनिक तकनीकी यंत्रों में हिंदी का प्रयोग बहुतायत से हो रहा है।

मोबाइल फोन एवं कंप्यूटर पर हिंदी का प्रयोग ई-टूल्स के माध्यम से किया जा रहा है। मोबाइल एवं कंप्यूटर पर हिंदी में सीधे टाइपिंग और इन्हीं यंत्रों पर बोलकर हिंदी लिखना आसानी से संभव है, जिसके बारे में विस्तृत रूप से निमन्वत चर्चा की गयी है।

### मोबाइल फोन पर हिंदी टाइपिंग का प्रयोग :

1. प्ले स्टोर में जाकर गूगल इंडिक की.बोर्ड डाउनलोड करके इंस्टॉल करें।

2. सेटिंग में जाकर लैंग्वैज एंड इनपुट में जाकर की.बोर्ड एंड इनपुट मेथड में से करेंट की.बोर्ड या डिफॉल्ट की-बोर्ड में से इंग्लिश एंड इंडिक लैंग्वैज गूगल इंडिक की-बोर्ड को चुनें। इसमें विभिन्न भाषाओं में से एक हिंदी का चयन करें।

3. लिप्यंतरण मोड -उच्चारण को अंग्रेजी अक्षरों में लिखकर अपनी मातृभाषा में आउटपुट प्राप्त करें।

4. मूल कीबोर्ड मोड- सीधे मूल लिपि में लिखें।

5. हिंग्लिश मोड- यदि आप हिंदी को एक इनपुट भाषा के रूप में चुनते हैंए तो अंग्रेजी की.बोर्ड अंग्रेजी और हिंग्लिश दोनों तरह के शब्दों का सुझाव देगा।

### कंप्यूटर में फोनेटिक / रोमन की-बोर्ड सक्रिय का प्रयोग :

1. फोनेटिक की-बोर्ड रोमन हिंदी प्रणाली पर कार्य करता है अर्थात यदि फोनेटिक/ट्रांसलेशन की-बोर्ड पर 'Namaste' लिखा जाए तो वह ट्रांसलिट्रेशन होकर 'नमस्ते' में बदल जाता है।

2. इस की-बोर्ड का विकास विशेष रूप से उन लोगों के लिए किया गया है जिनको हिंदी टाइपिंग नहीं आती है। ऐसे लोग फोनेटिक की-बोर्ड के माध्यम से हिंदी यूनिकोड टाइपिंग कर सकते हैं।

३. इस की.बोर्ड को कंप्यूटर में इंस्टॉल करने के लिए माइक्रोसॉफ्ट इंडिक लैंग्वैज इनपुट टूल सॉफ्टवेयर की आवश्यकता होती है।

लिंक. http://bhashaindi.comueehttp://hindietool.nic.in

### विंडोज 8.1 आधारित कंप्यूटरों के लिए :

यदि विंडोज 8.1 ऑपरेटिंग सिस्टम में .net framework 3.5 की समस्या आए तो पहले.net farmework 3.5 को डाउनलोड करके इंस्टॉल करें। यह सॉफ्टवेयर हम निःशुल्क डाउनलोड कर सकते हैं। इस पैकेज को ऑफलाइन एवं ऑनलाइन दोनों वर्जन में डाउनलोड कर सकते हैं।

### विंडोज 10 और इसके ऊपर में फोनेटिक की-बोर्ड सक्रिय करना :

विंडोज 10 और इसके ऊपर के कंम्प्यूटरों में फोनेटिक की-बोर्ड को सक्रिय करने के लिए लैंग्वैज एंड की-बोर्ड में जाकर लैंग्वैज एड करके फोनेटिक की-बोर्ड ऑप्शन जोड़ सकते हैं।

### गूगल वॉयस टाइपिंग :

1. क्रोम ब्राउजर में http://docs.google.com लिखकर अपने जी-मेल आईडी से लॉगिन करें।

2. गूगल डॉक्स में एक नया दस्तावेज खोलें।

3. टूल्स मेनू में जाकर वॉयस टाइपिंग (Voice typing) पर क्लिक करें। पॉप.अप माइक्रोफोन बॉक्स भाषा (हिंदी) का चयन करें।

4. अगर आप अपना विषय बोलने के लिए तैयार हैं, तो माइक्रोफोन बॉक्स पर क्लिक करें।

5. सामान्य गति और वोल्यूम से स्पष्ट रूप से अपना विषय बोलें।

6. रोकने के लिए माइक्रोफोन पर पुनः क्लिक करें।

7. गूगल वॉयस टाइपिंग में विराम चिन्हों का प्रयोग (Punctuations) स्वयं की-बोर्ड के माध्यम से होगा।

### वॉयस टाइपिंग की गलतियों में सुधार :

आवाज के साथ टाइप करते हुए अगर गलती हो जाए तो गलती पर कर्सर ले जाकर और माइक्रो पुनः बोल कर सुधार सकते हैं। गलती सुधारने के बाद, अगर हम आवाज टाइपिंग जारी रखना चाहते हैं कर्सर वापस ले जाकर पुनः टाइप कर सकते हैं।

# राजभाषा- संक्षेप सार

| | |
|---|---|
| संविधान में हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकृति | : 14 सितंबर 1449 |
| संविधान के किस भाग में राजभाषा का उल्लेख है | : भाग 17 (अनु. 343-351) भाग 05 (अनुच्छेद 120) भाग 06 (अनुच्छेद 210) |
| संविधान में किन अनुच्छेदों में राजभाषा का प्रावधान है | : अनुच्छेद 343 से 351 अनुच्छेद 210, अनुच्छेद 120· |
| हिंदी दिवस कब मनाते है | : प्रतिवर्ष 14 सितंबर को |
| विश्व हिंदी दिवस कब मनाते है | : प्रतिवर्ष 10 जनवरी को |
| प्रथम राजभाषा आयोग का गठन और अध्यक्ष | : सन 1955, श्री बी. जी. खेर |
| राजभाषा के संबंध में राष्ट्रपति के आदेश | : सन 1960 |
| राजभाषा अधिनियम, 1963 | : धारा(3) 26-01-1965 से प्रभावी, शेष धाराएं अलग-अलग तिथियों पर लागू हुई। |
| राजभाषा अधिनियम, 1963 | : पारित होने की तिथि 10 मई 1960 |
| राजभाषा अधिनियम, 1963 कब संशोधित हुआ | : सन 1967 |
| राजभाषा अधिनियम, 1963 में कुल धाराएँ | : 09 (नौ) धाराएँ |
| राजभाषा संकल्प | : सन 1968 |
| राजभाषा नियम कब बनाया गया | : सन 1976 |
| राजभाषा नियम 1976 कब संशोधित हुआ | : सन 1987 |
| राजभाषा नियम 1976 में कुल कितने नियम हैं | : 12 (बारह) |
| राजभाषा नियम 1976 किस राज्य में लागू नहीं होता | : तमिलनाडू |
| राजभाषा नियम 1976 के अनुसार भाषाई क्षेत्र | : 'क', 'ख' एवं 'ग' क्षेत्र |
| संविधान की आठवीं अनुसूची में कुल भाषाएँ | : 22 भाषाएँ |
| राजभाषा कार्यान्वियन समिती की बैठक की अवधि | : 3 महीने में एक बार |
| केंद्र सरकार के कर्मचारियों के भाषा प्रशिक्षण के पाठ्यक्रम | : प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ तथा पारंगत |
| नगर राजभाषा कार्यान्वियन समिती की बैठक की अवधि | : 6 महीने में एक बार |
| केन्द्रीय हिंदी समिती के अध्यक्ष | : प्रधानमंत्री |
| रेलवे हिंदी सलाहकार समिति के अध्यक्ष | : रेल मंत्री |
| केंद्र सरकार का राजभाषा विभाग किस मंत्रालय के अधीन कार्य करता है | : गृह मंत्रालय |

# राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के तहत जारी किए जानेवाले द्विभाषी कागजातों की सूची

| | |
|---|---|
| 1) संकल्प | - Resolution |
| 2) अधिसूचनाएं | - Notifications |
| 3) नियम | - Rules |
| 4) साधारण/सामान्य आदेश | - General orders |
| 5) प्रेस विज्ञप्तियां | - Press Communiques |
| 6) प्रशासनिक रिपोर्ट | - Administrative Report |
| 7) निविदा सूचनाएं | - Tender Notice |
| 8) संविदाएं | - Contracts |
| 9) करार | - Agreement |
| 10) अनुज्ञप्तियां | - Licenses |
| 11) अनुज्ञापत्र | - Permits |
| 12) निविदा प्रारूप | -Tender Forms |
| 13) संसद के पत्र | - Papers laid before Parliament |

## मेरा संघर्ष

संयुक्ता दास
प्रबंधक (कार्मिक)

मेरा सब्र रहा , संघर्ष रहा ,
लोगों को फिर भी हर्ज रहा ।
निकले नए सफर पर लेकिन,
मेरा अपना भी एक तर्ज रहा ।

हर मोड़ पर चुनौतियाँ मिली ,
हर मोड़ पर कुछ नए चौराहे ।
मेरे कदम रहे जिन रास्तों पर ,
उन रास्तों का मुझ पर कर्ज रहा ।

जो हालात लिखे, जज़्बात लिखे ,
मेरी हार, जीत की बात लिखे ।
मेरी कहानी के कुछ पन्नों पर ,
मेरे कलम का नाम दर्ज रहा ।

जब निकले पहली बार घर से ,
डरे भी थे , सहमे भी थे ।
थके भी थे कदम मेरे,
मगर चलना तो मेरा फर्ज रहा ।

मेरे कदम रहे जिन रास्तों पर ,
उन रास्तों का मुझ पर कर्ज रहा ।

जो हालात लिखे, जज़्बात लिखे ,
मेरी हार, जीत की बात लिखे ।
मेरी कहानी के कुछ पन्नों पर ,
मेरे कलम का नाम दर्ज रहा ।

जब निकले पहली बार घर से ,
डरे भी थे , सहमे भी थे ।
थके भी थे कदम मेरे,
मगर चलना तो मेरा फर्ज रहा ।

# खान स्तर पर हिंदी के प्रसार-प्रचार हेतु आयोजित विभिन्न प्रतियोगितांए एवं कार्यक्रम

दिनांक 01.12.2023 को बालाघाट खान में नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया गया।

दिनांक 29.12.2023 को गुमगांव खान में काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया।

दिनांक 28.01.2024 को मनसर खान में नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया गया।

दिनांक 29.01.2024 को चिखला खान में नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया गया।

दिनांक 09.02.2024 को कान्द्री खान में काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया।

दिनांक 16.02.2024 को बालाघाट खान
में वाद विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

दिनांक 24.04.2024 को बेलडोंगरी खान
में मंचीय नाटक का आयोजन किया गया।

दिनांक 25.04.2024 को डोंगरी बुजुर्ग खान
में काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया।

दिनांक 29.05.2024 को तिरोड़ी खान में
नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया गया।

दिनांक 27.05.2024 को कान्द्री खान
में संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

# मॉयल लिमिटेड में एक दिवसीय संगोष्ठी एवं काव्य गोष्ठी का आयोजन

मॉयल लिमिटेड, मुख्यालय, (राजभाषा विभाग) द्वारा दिनांक 09/02/2024 को कांद्री खान में एक दिवसीय संगोष्ठी एवं काव्य गोष्ठी का भव्य आयोजन किया गया।

भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभाते हुए मॉयल लिमिटेड, मुख्यालय, नागपुर के अधीनस्थ कांद्री खान में दिनांक 09/02/2024 को हिन्दी संगोष्ठी एवं काव्य गोष्ठी का भव्य आयोजन किया गया। आयोजित भव्य कार्यक्रम के मुख्य अतिथि माननीय श्री देशपाल सिंह राठौर, सदस्य हिंदी सलाहकार समिति, इस्पात मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली उपस्थित थे।

संगोष्ठी में श्री देशपाल सिंह राठौर ने राजभाषा कार्यान्वयन पर विस्तार से चर्चा करते वार्षिक कार्यक्रम एवं क क्षेत्र, ख क्षेत्र एवं ग क्षेत्र में प्रयोग की जाने वाली भाषा पर प्रकाश डाला। साथ ही साथ टंकक भाषा, प्रेरणा, प्रोत्साहन पर भी लोगो का मार्गदर्शन किया। बड़े ही सरल शब्दों में समझाया कि जिस भाषा में राजकाज किया जाये उस भाषा को राजभाषा कहा जाता है। हिंदी ही हमे एक सूत्र में बांधती है। महात्मा गांधी जी द्वारा कहे गये शब्द राष्ट्रभाषा हिंदी के बिना राष्ट्र गूंगा है''।

# मॉयल लिमिटेड में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

दिनांक 21-12-2023 को हिंदी कार्यशाला में मुख्य वक्ता के रूप में श्री नंदेश्वर, हिंदी अधिकारी, क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान, नागपुर को आमंत्रित किया गया था। हिंदी कार्यशाला का मुख्य विषय ''राजभाषा कार्यान्वयन'' पर उपस्थित सभी अधिकारी एवं कर्मचारियों को सारगंर्भित जानकारी प्रदान की। साथ ही कार्यालयीन कार्य एवं दैनिक कार्य में हम त्रुटि रहित हिन्दी का उपयोग कैसे कर सकते है, इस संबंध में जानकारी साझा की। उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बहुत ही शालीनता से ''राजभाषा कार्यान्वयन''विषय पर जानकारी प्राप्त की एवं भविष्य में कार्यालयीन कार्य में अधिक से अधिक त्रुटि रहित हिन्दी शब्दो का प्रयोग करने का निर्णय किया।

दिनांक 06.06.2024, दिन गुरुवार को मॉयल लिमिटेड, मुख्यालय, नागपुर में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया,जिसमें मॉयल मुख्यालय, नागपुर के विभिन्न विभागो में कार्यरत कर्मचारी उपस्थित थें। हिंदी कार्यशाला में हिंदी अनुवादक द्वारा उपस्थित सदस्यो को जानकारी प्रदान की गई। हिंदी कार्यशाला का मुख्य विषय ''मंगल फॉन्ट के अनुप्रयोग एवं वाईस टाईपिंग''पर उपस्थित सभी कर्मचारियों को महत्वपूर्ण एवं सारगंर्भित जानकारी प्रदान की गई। साथ ही कार्यालयीन दैनिक कार्य में हम संबंधित टूल का उपयोग कैसे कर सकते है इस संबंध में जानकारी साझा की।

# कुछ यादगार पल

YOUR OWN HERO
MOIL TIGERMAN TRIATHLON

MOIL
Tigerman
Triathlon
CYCLE

MOIL LTD.
Adding

# ज्योतिष : प्रारब्ध का फल या पुरुषार्थ की प्रेरणा

ज्योतिष शब्द के बहुत से अर्थ किए गए हैं लेकिन मेरे अपने अनुभव के आधार पर मैं इसका अर्थ ईश्वर की ज्योति से लेता हूँ। यह दो शब्दों से मिलकर बना है ज्योति और ईष अर्थात ईश्वर की ज्योति। जब तक ईश्वरीय कृपा न हो, उसकी दैवीय ज्योति का आभास न हो और अंतर्मन से संकेत प्राप्त न हों, भविष्यवाणी करना संभव नहीं है। यही कारण है कि ज्योतिषशास्त्र में कहा जाता है कि वास्तविक सत्य तो केवल ब्रह्मा जी जानते हैं, बाकी सब तो अनुमान लगाया जाता है। ये अनुमान भी कृपा पर आधारित होते हैं क्योंकि ईश्वर की ज्योति प्राप्त होना परम आवश्यक है। ईश्वर के विधान को ईश्वर की कृपा से ही अनुभव किया जा सकता है। ज्योतिषशास्त्र के ज्ञाता को 'दैवज्ञ' के नाम से भी जाना जाता है। दैव का अर्थ होता है भाग्य और अज्ञ का अर्थ होता है जानने वाला। अर्थात भाग्य को जानने वाले को दैवज्ञ कहते है। अज्ञ आपके दैव को तभी बताता है जब देव कृपा होती है। सच्चाई यही है कि आपकी जन्म की तिथि और जन्म का समय सही हो और ज्योतिषी पर ईश्वर कृपा हो तो दैवज्ञ के सामने आपकी कुंडली परत दर परत रहस्य खोलने लगती है।

ज्योतिष विज्ञान भी है और अध्यात्म भी। भौगोलिक स्थिति विशेष रूप से मायने रखती है। मगर फिर भी आस्थाए विश्वास और कृपा ऐसी बातें हैं जिनका संबंध विज्ञान से नहीं बल्कि अध्यात्म से है। साधारण शब्दों में स्वयं को जानने का प्रयास ही अध्यात्म है। एक बार ईश्वर कृपा से आत्म–साक्षात्कार होने लग जाए तो फिर उसके आगे सारी दुनिया बौनी हो जाती है। शायद इसी कारण अक्सर कहा जाता है कि जहाँ विज्ञान समाप्त होता है अध्यात्म वहाँ से शुरु होता है। आपने अनुभव किया होगा कि आपके या आपके किसी परिचित के जीवन में तमाम ऐसी घटनाएं घटती हैं जिनका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं होता, कोई कारण भी नहीं होता लेकिन विस्मयकारी परिणाम निरंतर सामने आते हैं और एक ज्योतिषी ग्रहदशा और स्थितियों के आधार पर इनके कारणों का उद्घाटन करता है।

ईश्वरीय तत्त्व प्रत्येक स्थान पर मौजूद होता है। हमारे और आपके न देख पाने या अनुभूति न कर पाने से उसका सत्ता का अस्तित्व समाप्त नहीं हो जाता। अस्तित्व हमेशा ही होता है बस हमारी फ्रीक्वेंसी अभी उस फ्रीक्वेंसी तक नहीं पहुँची है। एक उदाहरण से समझिए– आपने अपना रेडियो बंद किया हुआ है तो आपको क्या लगता है, क्या आपके आसपास गाने या कार्यक्रम नहीं चल रहे हैं? चल रहे हैं, निश्चित रूप से चल रहे हैं, बस अभी आप उस फ्रीक्वेंसी तक नहीं पहुँचे हैं जहाँ से ये सुनाई देते हैं। जैसे ही आप रेडियो खोलते हैं और उस फ्रीक्वेंसी पर पहुँच जाते हैं जहाँ आप एफएम रेडियो की फ्रीक्वेंसी से जुड़ जाते हैं तो आपको गाने और कार्यक्रम सुनाई देने लगते हैं। वे कहीं गए नहीं थे, मौजूद थे, बस हमारी फ्रीक्वेंसी ही उससे जुड़ी हुई नहीं थी। ईश्वरीय सत्ता का टेलीफोन हमेशा ऑन रहता है, बस आपकी लाइन ही डैड पड़ी है। जिस दिन शुरु हुई, संकेत मिलने आरंभ हो जाते हैं। यही ईश्वर की ज्योति है। गॉड पार्टिकल की खोज भी इसी बात को साबित करती है।

हमने अक्सर अपने वेदों और पुराणों की कथाओं में पढ़ा–सुना है कि ऋषि–मुनियों की सीधी पहुँच भगवान तक, भगवान से स्वरूप तक थी क्योंकि उनकी साधना उस स्तर पर थी जहाँ उनकी फ्रीक्वेंसी ईश्वरीय फ्रीक्वेंसी से मैच करती थी तो संपर्क भी सुलभ था। धीरे–धीरे ये साधनाए ये विश्वास, ये आस्था और ये फ्रीक्वेंसी कम होती गई और हम उस संपर्क सूत्र से दूर होते गए। ध्यान दीजिएगा, दूर हम हुए हैं, परमसत्ता की फ्रीक्वेंसी ज्यों की ज्यों विद्यमान है। मंदिर जाने पर कुछ व्यक्तियों के रोएं खड़े हो जाते हैं और कुछ भावावेश में रोने लगते हैं, ये अवस्था परमसुख की अवस्था है, ईश्वरीय सत्ता को महसूस करने की अवस्था है। जाते तो हजारों हैं पर यह अवस्था कुछ ही को प्राप्त होती है। जब यह कृपया प्राप्त होने लगती है तो ईश्वरीय संकेत भी

प्राप्त होने लगते हैं। ज्योतिष इन्हीं दैवीय संकेतों का प्रतिफलन है।

वेदांग के छह अंगों में एक ज्योतिष भी है। इसमें विज्ञान के साथ कृपा का अंश भी जुड़ा हुआ है। यह मैं इसलिए भी कह रहा हूँ कि ज्योतिषशास्त्र का एक ही फार्मूला विज्ञान के फार्मूल की तरह हर किसी पर ज्यों का त्यों लागू नहीं होता, उसमें व्यक्ति का अपना प्रारब्ध तो होता ही है, उसके संचित कर्मों की पूँजी उसके पास होती है लेकिन पूजा और कृपा से फल में अंतर आ जाता है। ये ब्रह्मांड कभी रुकता नहीं है, हमेशा चलता रहता है लेकिन जिस क्षण कोई बच्चा जन्म लेता है, यदि उस समय एक क्षण को हम सारे आकार या ब्रह्मांड को रुका हुआ मान लें या एक स्थिर पिक्चर के रूप में क्लिक कर लें तो उस अवस्था में ग्रहों की जो स्थिति होती है, वास्तव में वही उस बच्चे की जन्मकुंडली होती है। उस समय कौन सा ग्रह किसी राशि में कितने अंश पर चल रहा है, यह आपकी कुंडली व्यक्त करती है।

चूंकि एक पैदा होते नवजात ने उस क्षण में न तो कोई अच्छे कर्म किए हैं, न बुरे। लेकिन फिर भी कोई बच्चा किसी साधारण परिवार में जन्म लेता है और कोई समृद्ध से अत्यन्त समृद्ध परिवार में। सामान्य परिवार में भी सभी बच्चों के भाग्य एक जैसे नहीं होते। एक ही माता-पिता की संतान का भाग्य अलग होता है। इसका कारण है उनका प्रारब्ध अर्थात उनके संचित कर्म।

सनातन धर्म में कर्म तीन प्रकार के माने गए हैं. क्रियमाण, संचित और प्रारब्ध। जो कर्म वर्तमान में किए जा रहे होते हैं, उन्हें क्रियमाण कहा जाता है लेकिन हर क्षण के बाद आपका कर्म अतीत हो जाता है और आपके संचित अर्थात किए जा चुके कर्मों में जुड़ जाता है। माना जाता है कि जीवात्मा अनेक योनियों से होकर गुजरती हैए अनेक जन्म लेती है और पूर्व जन्म में उसके द्वारा किए गए कर्मों का भंडार ही संचित कर्म कहलाते हैं। ये कर्म अगले जन्म या जन्मों तक चलते हैं और उसे प्रभावित करते हैं। उसके यही कर्म उसके इस जन्म में उसके प्रारब्ध कर्म या भाग्य के रूप में दिखाई पड़ते हैं। प्रारब्ध या भाग्य पहले फल देना आरंभ करता है क्योंकि वह तो संचित कर्मों के साथ आपके जन्म के समय से ही आपके खाते में मौजूद है। दूसरी तरफ, जन्म के पश्चात व्यक्ति स्वतंत्र रूप से अपने कर्म लगभग युवा होने के पश्चात ही करता है, उससे पहले तो उसके माता-पिता या परिवार की देखरेख में ही उसकी परवरिश होती है, इसलिए उसके इस जन्म के अपने कर्मों का प्रभाव थोड़ा देर से या कभी-कभी बहुत देर से सामने आता है। भाग्य जैसा भी लिखाकर लाए हैंए वह तुरंत फल देना आरंभ कर देता है।

किसी कुंडली के बारह खानों में बैठे ग्रह इसका प्रतिनिधित्व करते हैं। यदि कोई ग्रह बहुत अच्छी स्थिति में है(जिसे ज्योतिषीय भाषा में उच्च का ग्रह कहा जाता है) तो उसका ज्योतिषीय परिणाम यह होता है कि आप मेहनत कम करते हैं और परिणाम बड़ा शानदार मिल जाता है। इसके पीछे आपके पूर्व जन्मों के संचित कर्मों का पुण्य भी होता है जो आपकी मदद करता है तथा परिणाम बड़ी जल्दी और आपकी आशा से भी बेहतर मिल जाते हैं। इसे ही लोग भाग्य या ईश्वर की कृपा कहते हैं। जीवन में इसके विपरीत भी होता है। कोई व्यक्ति बहुत अधिक प्रयास करता है लेकिन परिणाम आशा के अनुकूल होते ही नहीं, बहुत अधिक प्रयास करने पड़ते हैं, बहुत पूजा-पाठ और दान-पुण्य करना होता है। इसका कारण भी संचित कर्म या प्रारब्ध हैं जिसका खाता संभवत : खाली या बहुत कम रहा होगा। इस स्थिति में आपका पुरुषार्थ महत्वपूर्ण हो जाता है। जो आप अपने भाग्य या प्रारब्ध में लिखा कर नहीं लाए हैं, उसके लिए बहुत प्रयास या कर्म करने होते हैं। तब कहीं जाकर वह आपके पुण्य या प्रारब्ध में बदलते हैं। लेकिन यह बता पाना सरल नहीं होता कि ये पुण्य कब जाग्रत होंगे, इसीलिए कभी-कभी काफी प्रयास और काफी प्रतीक्षा करनी पड़ती है।

खाली खाते को भरने के लिए एक ओर तो आपके कर्म होते हैं, दूसरी तरफ पूजा-पाठ और दान-पुण्य जिनसे आप विधाता को प्रसन्न करने का प्रयास करते हैं। आपके कर्मों के साथ इसका भी पूरा-पूरा फल व्यक्ति को मिलता है अन्यथा ईश्वर को कौन पूजता। हमारे शास्त्र कहते हैं कि आपके अपने कर्म ही एक दिन आपके संचित कर्म या प्रारब्ध बन कर आपको फल प्राप्ति कराते हैं। हम किसी दूसरे के कर्मों का फल नहीं भोगते, अपने ही कर्मों का परिणाम मिलता है। अच्छा किया है तो कुछ अच्छा मिलेगा, चाहे जब भी मिले और कुछ बुरा किया है तो उसका दुष्परिणाम भी उठाना पड़ता है। दोनों के फल मिलते हैं। अच्छे से बुरा और बुरे से अच्छा समाप्त नहीं होता। बुरे कर्म हमारे रोग, दोष इत्यादि के रूप में सामने आते है तो अच्छे कर्म आपको मिलने वाली तमाम सुख-सुविधाओं के रूप परिलक्षित होते हैं। इसीलिए तो कहा भी गया है, जैसे कर्म करोगे वैसा फल देगा भगवान, ये है गीता का ज्ञान। यही अंतर है प्रारब्ध और पुरुषार्थ में।

अब अगर कुंडली की बात करें तो जन्म के समय बनी कुंडली में बैठे ग्रह आपके प्रारब्ध को ही प्रदर्शित करते हैं जो आप अपने साथ लेकर आते है। ये आपके आने वाले समय में आपकी जमापूँजी के रूप में काम करते हैं अर्थात आपका भाग्य कितना आपका साथ देगा,इसका संकेत देते हैं। उदाहरण के लिए यदि आपकी कुंडली के दसवें घर अर्थात मुख्य रूप से रोजगार के घर की स्थिति शानदार है, उसका स्वामी अच्छी स्थिति में है तो वह संकेत देता है कि आप निश्चित रूप से धनोपार्जन करेंगे। वह यह भी बताता है कि आप नौकरी में जाएंगे या व्यवसाय में, नौकरी या व्यवसाय में भी किस क्षेत्र में जाएंगे और कितनी उन्नति करेंगे। यदि इस भाव या भावस्वामी के साथ कुछ और ग्रहों का भी संबंध हो रहा है तो आप एक से ज्यादा माध्यम से कमाई करेंगे। ये आपका प्रारब्ध है जो समय आने पर (ज्योतिष की भाषा में इसे अनुकूल ग्रह दशा कहा जाता है) अपना फल अवश्य देगा और इसमें आपके इस जन्म के किए गए कर्म जुड़ते रहते हैं। यही कारण है कि यदि किसी व्यक्ति का प्रारब्ध अच्छा है तो उसे कम प्रयास में ही सफलता मिल जाती है जबकि दूसरे व्यक्ति को बहुत प्रयास करने पर भी बहुत कम सफलता मिलती है क्योंकि उसका प्रारब्ध अच्छा नहीं है या कहि, कि पिछले जन्मों के कर्मों की जमापूँजी बहुत ज्यादा नहीं है। खाता अभी खाली है, उसे भरने के लिए काफी सारे प्रयास करने होंगे। ईश्वर की कृपा की भी आवश्यकता होगी, बिल्कुल उसी तरह जिस तरह व्यक्ति को अपने परिवार के बुजुर्गों के आशीर्वाद की भी कामना होती है।

जीवन में सफलता के लिए प्रारब्ध और पुरुषार्थ दोनों की ही आवश्यकता होती है। आपका प्रारब्ध आपके द्वारा वर्तमान में किए जा रहे कर्मों को गंतव्य तक पहुँचाने में सहायता करता है। चूंकि आपका यह प्रारब्ध आपके पूर्व जन्मों के कर्मों के कारण ही बना है, इसलिए कर्म या पुरुषार्थ की उपेक्षा कभी भी नहीं की जा सकती। हर क्षण किए जाने वाला कर्म आपका प्रारब्ध बनता जाता है, लेकिन यह फलीभूत कब होगा, यह ईश्वर ही बता सकता है। ऐसे ईश्वरीय संकेत आपकी कुंडली में हमेशा मौजूद होते हैं जिन्हें कोई दैवज्ञ ही बता सकता है। अनेक राजयोग मौजूद होते हैं जो आपके पिछले अच्छे कर्मों और आने वाले शानदार भविष्य के साक्षी होते हैं। अनेक रोगों के संकेत भी होते हैं जो आपको उस राह पर चलने से रुकने का संकेत भी देते हैं जिनके कारण ये बड़ा दुष्परिणाम दे सकते हैं। किसी भी व्यक्ति की जन्मकुंडली उसके प्रारब्ध और पुरुषार्थ- दोनों के कारण ही संपूर्ण प्रतिफल प्रदान करती है।

❖ राजेश श्रीवास्तव

# सन्त काव्य का भाव पक्ष एवं कला पक्ष

हिन्दी का आदिकाल एक प्रकार से लड़ाई–झगड़े का युग था। उसमें अशान्ति थी, और एक प्रकार की राजनीतिक आँधी चल रही थी। किन्तु आँधी हमेशा नहीं रहती, आँधी के बाद शान्ति और स्थिरता आती ही है। भारतवर्ष के राजनीतिक वातावरण में भी अपेक्षाकृत शान्ति उपस्थित हुई और लोगों को दम लेने की फुरसत मिली। राजपूती वीरता का ह्रास हो चुका था, और लोग जैसे–तैसे अपनी परिस्थिति से अनुकूलता प्राप्त करते जाते थे। राजपूतों में जब तक कुछ शक्ति थी, हिम्मत और साहस था, तब तक वीरगाथाओं की रसायन से थोड़ा–बहुत काम चला; किन्तु बल के क्षीण होने पर भी उत्साह प्रदान से भी कोई काम नहीं चलता। दीपक बुझ जाने पर तेल देने से कोई लाभ नहीं होता– 'निर्वातदीपे किमु तैलदानमब।' युद्ध के समय वीरगाथाओं का काव्य में अपना महत्व स्वाभाविक ही था, किन्तु शान्ति के समय एक दूसरे ही प्रकार के काव्य की आवश्यकता थी। मुसलमान लोग युद्ध से ऊब गये थे। वे जानते थे कि पराजित देश में शान्ति हो, और वहाँ के लोगों के सम्पर्क में आकर कुछ अपनी जड़ जमायें। हिन्दू लोग भी यही चाहते थे कि उनका धर्म ऐसे रूप में आये कि मुसलमान लोग उसका खण्डन न कर सकें। इतना ही नहीं, यदि सम्भव हो तो विरोध छोड़कर उनके साथ मिलें। मुसलमानों की भी यह इच्छा थी कि वे हिन्दुओं के निकट आयें। इसी प्रकार, तत्कालीन जनता में दोनों ओर से मिलने की प्रवृत्ति चल रही थी।

इसके अतिरिक्त, एक प्रवृत्ति और भी रही। कुछ लोग अपना स्वत्व और धार्मिक व्यक्तित्व अलग रखना चाहते थे। ये लोग मुसलमानों के विरोधी नहीं थे। वे सारे संसार को 'सियाराम मय' जानकर 'जोरि जुग पानी' प्रणाम करने को तैयार थे, किन्तु ऐक्य की वेदी पर अपने इष्टदेवों के प्रति अपनी अनन्य भावना का बलिदान नहीं करना चाहते थे। मृतप्राय हिन्दू जाति में भक्ति के द्वारा एक नवीन जीवन का संचार करना उनका अभीष्ट था। देश में चारों ओर सगुण–भक्ति का आन्दोलन चल रहा था, उससे उनकी हृदय–तन्त्री झंकृत हो उठी। जो उपदेश श्री रामानुजाचार्य, वल्लभाचार्य, चैतन्य महाप्रभु, तुकाराम आदि सन्तों और महात्माओं ने जनता को दिये थे, वे अब सूर और तुलसी की काव्यमयी धारा में एक नवीन रूप में अवतरित हुए। इस विवेचना का यह अभिप्राय न समझा जाय कि हिन्दी का भक्तिकाल मुसलमानों से प्रभावित है। हमारे कवियों ने सामग्री तो अपने घर से ही ली– हाँ, उनको कुछ उत्तेजना मुसलमानों से अवश्य मिली। उस समय की परिस्थितियों में मुसलमानों के अस्तित्व की अवहेलना नहीं की जा सकती थी।

यह एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि हार की मनोवृत्ति में दो ही बातें होती हैं– या तो मनुष्य उन बातों में प्रवृत्त हो, जिनमें उसकी श्रेष्ठता अक्षुण्ण बनी हुई है। एक ओर की श्रेष्ठता दूसरी ओर की गिरावट की क्षति–पूर्ति कर लेती है। ऐसी परिस्थिति में दूसरी प्रवृत्ति यह होती है कि विजेताओं के हास–विलास में शामिल होकर एक प्रकार की समता का अनुभव कर खोये हुए स्वाभिमान को भूल जायें, अथवा स्वतन्त्र रूप से हास–विलास की मादकता में अपने पराजयजन्य दुःख को विलीन कर दें। सन्त काव्य वर्तमान परिपेक्ष्य में अपनी प्रासंगिकता को प्रकट कर रहा है– यह सत्य है। जहाँ आज चहुँ और भय, संत्रास, घुटन, युद्ध के बादल मंडरा रहे हैं वहीं संत काव्य तप्त रेगिस्तान में जल की शीतल बिन्दुओं की भांति शान्ति एवं शीतलता प्रदान करता है।

'मैं कहता हूँ आखिन देखी। तू कहता है कागद की लेखी,' वाली उक्ति प्रायः सभी संत कवियों पर लागू होती है इसीलिए इनकी भाषा में साहित्यिकता का न होना आश्चर्यजनक नहीं, तथापि इनकी भाषा आडम्बरविहीन, सरल और अपरिष्कृत होते हुए भी भावों और संतों के उद्देश्य की अभिव्यक्ति में सक्षम है। अलंकारिकता और बाह्य सज्जा न लादने पर भी अनुभूति की तीव्रता के कारण उनकी वाणियों में स्वतः काव्यगत सौन्दर्य उभर आये हैं। संत प्रायः भ्रमण करते रहते थे, अपने मत का प्रचार करते थे, साधु–सत्संग करते थे। अतएव प्रान्तीय बोलियों और देशज शब्दों का पुट उनकी भाषा में होना स्वाभाविक ही था। इसीलिये उनकी भाषा में अवधी, ब्रजभाषा, खड़ी बोली, पूरबी हिन्दी, फारसी, अरबी, पंजाबी, राजस्थानी आदि भाषाओं के शब्दों का मिश्रण मिलता है। इन्हीं कारणों से इन सन्तों की भाषा खिचड़ी या सधुक्कड़ी कहलाती है। उदाहरणार्थ निम्न पद दृष्टव्य हैं।

अति का भला न बोलना, अति की भली न चूप।
अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप।।
– खड़ी बोली (कबीर)

सूतल रहलूँ मैं सखियाँ, तो विष कर आगर हो।सतगुर दिहलै जगाइ, पायो सुख सागर हो।। – पूर्वी हिन्दी (धरमदास)

अकथ कहाँणी प्रेम की, कछू कही न जाइ।
गूंगे के री सरकरा, बैठे मुसकाई ।। – राजस्थानी (कबीर)
गावहिं तुह न पउष पाणी वैसंतक गावै राजाधर्म दुआरे।
गावहिं चित्रगुपत लिखि जाणहिं, लिखि लिखि धर्म विचारे।।
– पंजाबी (नानक)

जिस समय संत काव्य की सृष्टि हुई वह अज्ञान, अशिक्षा और अनैतिकता का युग था अतएव संतो ने अपनी अमृतमयी वाणी से धर्म का निश्छल, स्वाभाविक व्यावहारिक एवं सरल रूप जनता के समक्ष रख कर उनमें पुनर्जागरण और नैतिकता की प्रतिष्ठा करना और उनके नैराश्य को आशा में परिणत करना अपना पावन कर्तव्य समझा। इसके लिए उन्होंने भाषा के साहित्यिक रूप को ग्रहण न कर जनता की भाषा को ही स्वीकार किया। उस समय उनकी दृष्टि में

भावों का प्रकाशन प्रमुख था, भाषा की सज्जा गौण।

### रैदास

इनको रविदास भी कहते हैं। ये भी रामानन्दजी के शिष्यों में से थे। ये जाति के चमार थे– 'कह रैदास खलास चमारा'। ये मीराबाई के गुरु कहे जाते हैं। इनके पद भी गुरु–ग्रन्थ साहब में संग्रहीत हैं। इनकी कविता जन–सुलभ है। कबीर की भाँति इनका भी सम्प्रदाय है। इनकी कविता का एक उदाहरण लीजिए:

प्रभुजी तुम चन्दन हम पानी । जाकी अंग–अंग वास समानी।।
प्रभुजी तुम वन–घन हम मोरा। जैसे चितवत चन्द चकोरा।।
प्रभुजी तुम माली हम बागा । जैसे सोनहि मिलत सुहागा।।
प्रभुजी तुम स्वामी हम दासा । ऐसी भगति करै रैदासा।।

'तुम और मैं' की परम्परा में वर्तमान युग में बहुत–सी कविताएँ लिखी गयी हैं। उस शीर्षक की निरालाजी की भी कविता प्रसिद्ध है। नाभादासजी ने रैदास की प्रशंसा में कहा है:

''वर्णाश्रम अभिमान तजि, पद रज वन्दहि जा सकी।।
सन्देह ग्रन्थि खण्डन निपुन, बानी विमल रैदास की।।''

### शैली और छन्द :

संत–काव्य में गेय मुक्तक–शैली ही प्रमुखतः प्रयुक्त हुई है और रीति काव्य के मुख्य तत्व संगीतात्मकता, सूक्ष्मता, वैयक्तिकता, भावात्मकता इनकी वाणी में यथेष्ट मिलते है।

संत–काव्य में दोहों और पदो का प्राधान्य है जिनका विशिष्ट नाम 'साखी' और 'सबद' है। दोहा तो छन्द है और सबद रागों के अनुसार पद हैं। इसके अतिरिक्त झूलना, चैपाई ('आरती में अधिकतर प्रयोग हुआ है।) कवित्त, सवैया, हंसपद (जिसका प्रयोग अधिकतर ककहरा में हुआ है) और सार (जिसका प्रयोग पहाड़ा में हुआ है) जैसे छन्द भी कबीर एवं अन्य सन्त कवियों द्वारा उनकी वाणी में प्रयुक्त हुए हैं:

1. पद

मन थिर न रहै घर है मेरा, इन मन घर जारे बहुतेरा।। टेक।।
घर तजि बन बाहरि कियो बास, घर बन देखौ दोऊ निरास।। १।।
जहाँ जाऊँ तहाँ सोग संताप, जुरा मरण को अधिक वियाप।। २।।
कहैं कबीर चरन तोहि बन्दा, घर मैं घर दें परमानन्दा ।। ३।।

2. साखी

विरह जलाई मैं जलौं, जलती जलहरि जाऊँ।
मो देख्या जलहरि जलै, संतौ कहाँ बुझाऊँ।।

3. झूलना

अंधा पूछें आफताब को रे, उसे किस मिसाल बतलाइये जी।
वा नूर समान नहि औरे, कौने तमसील सुनाइये जी।।
सब अंधरे मिलि दलील करें, बिन दीदा दीदार न पाइये जी।
यारी अंदर यकीन बिना, इलिम से क्या बतलाइये जी।।

4. सवैया

ज्यों कपरा दरजी गहि ब्यौतत, काष्ठह को बढ़ई कसि आनै।
कंचन को जु सुनार कसै पुनि, लोह को घाट लुहारिहि जानै।।
पाहन को कसिलेत सिलावट, पात्र कुम्हार के हाथनि पानै।
तैसेहिं शिष्य कसै गुरुदेव जु सुन्दरदास तबै मन माने।।

इसके अतिरिक्त सन्त कवियों के काव्य में अरिल्ल, सोरठा, कुण्डलियाँ, छप्पय, रेखते, त्रिभंगी, बरवै, इन्दव, हरिपद, सवैया छन्द के किरीट वीर, केतकी आदि रूपों, मनहर, श्याम उल्लास, हंसाल, रमैनी आदि छन्दों का भी प्रयोग हमें प्राप्त हो जाता है।

### रस और अलंकार :-

ईश्वर की भक्ति प्रधान होने के कारण निर्वेद ही स्थायी भाव है। इसीलिए सम्पूर्ण सन्त काव्य में शान्त रस की सत्ता है। रहस्यवाद के अन्तर्गत श्रृंगार रस का चित्रण भी हुआ है। श्रृंगार के अन्तर्गत संयोग और वियोग दोनो ही पक्षों का चित्रण है, लेकिन आत्मा के विरह–वर्णन में तो सन्त कवि, विशेषतया कबीर की उक्तियाँ उत्कृष्ट और मार्मिक बन गयी है। सन्त काव्य में विरह श्रेष्ठ माना है, संयोग का वर्णन कम है क्योंकि परमात्मा से मिलन का साधन ही अधिक है, मिलन की सिद्धि नहीं

बिरहा बुरहा जिनि कहौ, बिरहा है सुलितान ।
जिस घट बिरह न संचरें, सो घट सदा मसान ।।

कहीं–कहीं परमात्मा की विराटता में– एक बिन्दु ते विश्व रच्यो हैङ्क जैसी भावनायें अभिव्यक्त कर अद्भुत रस की भी सृष्टिकी है। सृष्टिऔर माया की विचित्रता और उलटबांसियाँ भी अद्भुत रस की उत्पत्ति में सहायक हैं। कुछ स्थानों पर वीभत्स रस भी है जैसे सुन्दरदास द्वारा

कामिनी शीर्षक अंग में भी अनेक स्थानों पर वीभत्स रस का प्रयोग हुआ है। यथा:

भगति दुहेली राम की, जैसि अगिनि की झाल।
डाकि पड़े तो ऊबरे, दाधे कौतिगहार।। – शान्त रस

विरहिन ऊभी पंथ सिर, पंथी बूझैं धाइ।
एक शब्द कहि पीव का, कब रै मिलैगें आइ।। – विरह (श्रृंगार)

पहलै पूत पीछे भइ माई, चेला कै गुरु लागै पाई। जल की मछली तरूवर ब्याई, पकड़ि बिलाई मुरगे खाई।। – अद्भुत रस

ना में छगरी, ना मैं मेठी, ना मैं छुरी गँड़ास में।
न ही खाल में, न ही पूँछ में, ना हड्डी, ना माँस में।। – वीभत्स रस

सुस्पष्ट है कि संत-काव्य में शांत और श्रृंगार का वियोग पक्ष प्रधान है। वीर रस, अद्भुत और वीभत्स रस गौण है।

सन्तों का प्रमुख वर्ण्य विषय वह सत्नाम की वस्तु है जो इन्द्रियगम्य न होने के कारण सर्वथा अनिर्वचनीय है अतएव उन्हीं अर्थालंकारों और शब्दालंकारों का प्रयोग हुआ है जो आध्यात्मिक अभिव्यक्ति में सहायक सिद्ध हुए हैं। इस प्रकार संत काव्य में रूपक, विभावना, अन्योक्ति, उपमा, उदाहरण, अर्थान्तरन्यास, दृष्टांत, तुल्ययोगिता, एकावली, काव्यलिंग, उत्प्रेक्षा, विरोधाभास, अनन्ययोपमा, विचित्र, विषम, परिणाम, क्रम, व्यतिरेक, कारणमाला, भेदकातिशयोक्ति, लोकोक्ति, अनुप्रास, यमक, विप्सा आदि अंलकारों का समावेश है। निम्न उदाहरणों ने सन्त काव्य को अलौकिक बना दिया हैं:

घट दीपक बाती पवन, ज्ञान जोति सु उजास।
रज्जब सीचें तेल लै, प्रभुता पुष्टि प्रकाश।। – रूपक (रज्जब)

बिना नीर बिनु मालिहीं, बिनु सींचे रंग होय। बिनु नैनन तहँ दरसनों, अस अचरज इक सोय। – विभावना (बुल्ला साहब)

मालन आवत देखि कर, कलियन करी पुकारि। फूले फूले चुणि लिये, काल्हि हमारी बारि।। – अन्योक्ति (कबीर)

अलल बसै अकास में, नीची सुरत निवास। ऐसे साधू जगत में, सुरत सिखर पिउ पास।। – उदाहरण (दरिया साहब)

पलटू तीरथ को चला, बीचे मिलिंगे संत। एक मुक्ति के खोजते, मिलि गई मुक्ति अनन्त।। – व्यतिरेक (पलटू साहब)

कुल खोयां कुल ऊबरै, कुल राख्यां कुल जाइ।
राम निकुल कुल मेटि लै, सब कुल रह्या समाइ।।
– विरोधाभास (कबीर)

नी वृच्छ अरू साध जन, तीनों सक सुभाव।
जल न्हावे फल वृक्ष दैं, साध लखावै नाँव ।। – क्रम (गरीबदास)

कामिनी की देह मानौ, कहिबै सघन बन,
उहाँ कोऊ जाइ सुतौ, भूलि कैं परतु है। – उत्प्रेक्षा (सुन्दरदास)

नानक पारखे आप कउ, ता पारखु जाणु।
रोगु दारू दोवै बुझै, ता बैदु सुजाणु।। – अर्थान्तरन्यास (नानक)

रज्जव लौ में लाभ है, लीन हुवा रहु माँहि।
लौ में लत लागै नहीं, और खता मिटि जाहिं।।
– छेकानुप्रास (रज्जब)

यदि सत्य की अभिव्यंजना उत्तम कला का मापदण्ड है तो संत-काव्य अपनी किंचित न्यूनताओं के होते हुए भी काव्य-कला की कसौटी पर पूरा उतरता है। संतो की वाणी में जो उपदेश हैं वे केवल दर्शन के शुष्क और नीरस विषय न रहकर, जीवन-रस से ओत-प्रोत हैं। आत्मविश्वास, आशावाद, आत्माभिव्यक्ति, शोषित वर्ग के उद्धार की जीवन्त शक्तियाँ उनकी वाणी में अन्तर्निहित हैं। दो दशक पहले अन्तर्राष्ट्रीय दादागिरी की कसम लिये बैठा अमेरिका ईराक को नेस्तनाबूत करके ही माना, ठीक उसी प्रकार वर्तमान में रूस यूक्रेन को तबाह करने पर तुला हुआ है। वहीं जब कभी इन ताकतवर देशों को शान्ति की तलाश होगी तो विश्वगुरू भारत के श्रीचरणों में बैठ कर इसे सन्त साहित्य का ही अनुशीलन करना होगा- यह स्वयं सिद्ध है।

❖ प्रो. प्रणव शास्त्री,

# गुरु पूर्णिमा का महत्व

सनातन संस्कृति के प्राचीन ग्रंथों ने महर्षि वेदव्यास को गुरुओं का भी परम गुरु साक्षात् वादरायण कहा है। पुराणों में व्यास परमपूज्य घोषित किये गए हैं। यतिधर्म समुच्चय में कहा है.

'देवं कृष्णं मुनिं व्यासं भाष्यकारं गुरोर्गुरूमब।'

कई विद्वानों के अनुसार कृष्ण द्वैपायण वेदव्यास वेद, पुराण, महाभारत, वेदान्त-दर्शन (ब्रह्मसूत्र), सैंकड़ों गीताएँ, शारीरिक सूत्र,योगशास्त्र के साथ ही कई व्यास स्मृतियों के भी रचयिता हैं। ऐसी मान्यता है कि वर्तमान का सम्पूर्ण विश्व विज्ञान एवं साहित्यिक वाङग्य भगवान व्यास का उच्छिष्त है। इसीलिए कहा गया है.

व्यासोच्छिष्टं जगत्सर्वमब ।।

महर्षि वेदव्यास का जन्म आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा को उत्तराषाढ़ नक्षत्र में हुआ। इसीलिए आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा गुरु पूर्णिमा या व्यास पूर्णिमा के नाम से जानी जाती है। यह अवसर विशेष गुरु सत्ता की पूजा-अर्चना और उनके प्रति अपनी श्रद्धा भाव को दृढ़ करने का है। भारतीय धर्म-दर्शन, अध्यात्म का प्रायः विचार रहा है कि सम्पूर्ण चराचर जगत में ईश्वरीय सत्ता का वास है। किंतु जीव पर ईश्वरीय माया के प्रभाव से वह इस गूढ़ ज्ञान से अनभिज्ञ रहता है। ईश्वरीय माया के वशीभूत व्यक्ति को सांसारिक प्रपंच से निकाल कर ईश्वरीय अनुग्रह और ईश अंश को जागृत करने वाली सत्ता का नाम ही गुरु है। या सरल शब्दों में कहा जाए तो व्यक्ति की सांसारिक और आध्यात्मिक उन्नति का द्वार खोलने वाली समर्थ सत्ता का नाम ही गुरु सत्ता है। जो व्यक्ति के अंदर विराजमान ईश्वरीय तत्व को जागृत कर देता है। जिससे मिलने के बाद साधारण पुरुष भी महनीय हो जाता है। व्यक्ति को अज्ञान जनित सभी पाप कर्मों से छुटकारा मिल जाता है। कुल मिलाकर गुरु नर से नारायण होने की सहज क्रिया है।

अद्वयतारकोपनिषद में अज्ञान रूपी अन्धकार को मिटाकर ज्ञान रूपी प्रकाश फैलाने वाले को गुरु कहा गया है-

गुशब्दस्त्वन्धकारः स्यादुशब्दस्तन्निरोधकः।।

गृ शब्दे इस धातु से गुरु शब्द बना है। निरुक्त में घ्यो धर्म्यानब शब्दान गृनात्युपदिशति स गुरुःषब ष्स पूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदातषब कहा गया है।

अर्थात जो सत्य धर्म प्रतिपादक, वेदों का उपदेशक सृष्टि के प्रारम्भ में अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा और ब्रह्मादि गुरुओं का भी गुरु एवं जिसका कभी लोप नहीं होता उस परमेश्वर स्वरूप को ही गुरु बताया गया है ।

अगर बात वेद की करें तो वेदों में गुरु का स्पष्ट उल्लेख नहीं है। परन्तु अनेक देवताओं की स्तुति करते हुए उनसे ज्ञान दान करने की प्रार्थना की गई है । इस प्रकार अप्रत्यक्ष रूप से उन्हें गुरु सत्ता का भाग ही समझा गया है। तथापि पुराणोक्त कई प्रसंगों में गुरु की कृपा और उनके लाभ का स्पष्ट वर्णन मिलता है। श्रीमद्भागवत में ध्रुव प्रसंग, प्रह्लाद प्रसंग या कि बाल्मीकि रामायण में गुरु वशिष्ठ व विश्वामित्र की महिमा का स्पष्ट उल्लेख गुरु सत्ता की महनीयता को उजागर करती है। बृहस्पति को देवताओं का तो वहीं शुक्राचार्य को दानवों का गुरु बताते हुए धर्मग्रंथों में उनके विशेष प्रभाव के अनेकों उल्लेख मिल जाते हैं।

सृष्टि के प्रथम पुरुष मनु महाराज ने गुरु को महानतम बताते हुए कहा है।

'गुरु शुत्रूयात्वेवं ब्राह्मलोकं समश्नुते।'

अर्थात्, गुरु की सेवा द्वारा ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती है। यह इसी के तुल्य है कि 'आचार्य देवो भव' अर्थात आचार्य को देवता मानो। अपने गुरु को देवता के सामान मानने वाले आरुणि अथवा उद्दालक की गुरु-भक्ति से कौन परिचित नहीं है जिनकी निष्ठा और गुरु के प्रति लगाव ने गुरु धौम्य को अमर बना दिया।

सामान्यतः हमारा जीवन दुःख-सुख, हानि-लाभ, जय-पराजय के आसपास ही अटका रहता है। हम सभी दिनभर सांसारिक प्रपंचों को ही यथार्थ मानकर उसी के अनुरूप आचरण करने लगते हैं। जीवन का लक्ष्य, उसका प्रारंभिक सत्य और स्वयं के दायित्व को भूल जाते हैं। सांसारिक पदार्थों में सुख की खोज करते हुए अपना

जीवन नष्ट कर रहे होते हैं। कई बार जीवन में विपरीत समय आने पर हम परिस्थितियों से घबराकर स्वयं ही गहरे अवसाद, दुःख और कष्ट का अनुभव करते हैं। कुल मिलाकर हम अपने वास्तविक स्वभाव से कोसों दूर चले जाते हैं। और तब हमें आवश्यकता होती है एक ऐसे पथ-प्रदर्शक की जो हमारा मार्गदर्शन कर सके, हमें सही-गलत का भेद समझा सके, हमें निराशा के अंधकार से ऊर्जा, आनंद और ज्ञान के प्रकाश की ओर लेकर चले।

इसी अज्ञानता रूपी अंधकार के शमन और ज्ञान के उद्दीपन हेतु ही सच्चे साधकों के जीवन में ईश्वर सद्गुरु रूपी प्रकाश को भेज देते हैं। जो हमारे स्वभाव, संसार की वास्तविकता और उस परम सत्ता से एकाकार करता है, जिसे हम ईश्वर कहते हैं।

वास्तव में गुरु कोई व्यक्ति नहीं परम्परा का नाम है। यही कारण है कि भगवान दत्तात्रेय ने अलग-अलग योनियों में जन्म लेने वाले 24 गुरु बनाये। हमारे यहाँ काकभुसुंडि, शुकदेव जैसे संतों का भी उल्लेख यह सिद्ध करता है कि भारतीय संस्कृति व्यक्ति नहीं संस्कार और गुण देखती है। और व्यक्ति को यह अधिकार भी देती है कि वह अपने आवश्यकतानुसार आत्मोन्नति हेतु सद्गुरु का श्रद्धानुसार चयन कर सके। हमारी संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता है कि वह कभी अल्पता, हीनता या संकुचन नहीं देती, इसीलिए तो गुरु किसी को शिष्य नहीं गुरु बनने की योग्यता देता है। बिना गुरु दीक्षा कोई भी साधक न तो सिद्ध बनता न ही गुरु दीक्षा देने का अधिकारी बनता।

गुरु समस्या नहीं समाधान है। भारतीय दर्शन, वाङ्मय और पुराणों की मानें तो गुरु ही नारायण, गुरु ही शिव और गुरू ही सर्वशक्तिमान ब्रम्ह है।यही विचार बाबा तुलसी ने रामचरित मानस के द्वारा अनेकों बार कही।

'बंदउँ गुरु पद कंज कृपा सिंधु नररूप हरि।'
'महामोह तम पुंज जासु बचन रबि कर निकर?'

यही नहीं गोस्वामी जी ने पूरे मानस में अवसर मिलने पर गुरु की मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। एक अन्य चौपाई में तुलसी बाबा कहते हैं।

'वन्दौ गुरु पद पदुम परागा।
सुरुचि सुवाष सरस अनुरागा ।।'

यही नहीं गुरु की महिमा का बखान करते हुए वह कहते है कि गुरु की कृपा द्वारा ह्रदय के नेत्र खुलने से साधक को दिव्यदृष्टि प्राप्त होती है-

'उधरहि विमल विलोचन हिय के ।
मिटहिं दोष दुःख भव रजनी के ।।'

इस प्रकार साधक प्रमात्व का साक्षात्कार ठीक वैसे ही सहजता से कर लेता है । जैसे-

'यथा सुअंजन अंजि दृग साधक सिद्ध सुजान।
कौतुक देखहिं सैल बनएभूतल भूरि निधान ।।'

वास्तव में एक सच्चा साधक जीवन पथ पर बढ़ रहे यात्री की भांति होता है जो लक्ष्य की प्राप्ति हेतु लालायित तो है परन्तु वह जानकारी के अभाव में एक सच्चे मार्गदर्शक की तलाश में रहता है। जो न केवल सत्य और ज्ञान मार्ग का ज्ञाता हो अपितु परमब तत्व को पूर्णतः पहचानता भी हो। सच्चा गुरु वही है जिसके प्राप्त होते ही साधक के ह्रदय से सभी प्रकार के संशय, सभी चिंताएं स्वतः समाप्त हो जाएँ। ताकि वह अपने लक्ष्य पर पूर्णरूपेण ध्यान केंद्रित कर पाए। जब कभी मार्ग में उसके पैर डगमगाने लगे गुरु उसका सहारा बन सके। निराश के कालखण्ड में साधक का आत्मविश्वास बने और माता-पिता की भाँति साधक को ज्ञान रूपी स्नेह प्रदान करे। वास्तव में गुरु का योग्य होना उतना ही आवश्यक है जितना कि शिष्य का। क्योंकि यदि गुरू स्वयं ही अयोग्य होगा तो वह तो शिष्य का कल्याण कर ही नहीं सकता । इसीलिए सच्चे गुरु के प्राप्त होते ही शिष्य को मनसा, वाचा, कर्मणा  गुरु की सेवा में सर्वात्मना समर्पित हो जाना चाहिए।

तत्वतः ज्ञान के दो प्रकार है- एक जो स्वयं प्रकाश्य हो अर्थात स्वयं पैदा हो दूसरा परतः प्रकाश्य अर्थात दूसरों के द्वारा प्राप्त हो। परतः प्रकाश्य का माध्यम तो गुरु ही है। लेकिन स्वयं प्रकाश्य ज्ञान में भी गुरु विशेष है। क्योंकि उस तत्व ज्ञान को इंगित करके शिष्य की बुद्धि को ज्ञानमार्ग की ओर प्रेरित करने वाला गुरु तत्व ही तो है। जिसे अपनी निष्ठा और मेहनत से साधक प्राप्त करने में समर्थ होता है। इस प्रकार ज्ञान के दोनों स्वरूपों का बोध साधक को गुरु कृपा से ही संभव है।

आइये इस गुरु पूर्णिमा हम भी अपने अंदर स्थित द्वेष,वैमनस्व, प्रमाद और अवगुणों को मिटाकर सच्चे सद्गुरु की जीवन में खोज करें और जिनको ईश्वरीय कृपा से यह दिव्यतम उपहार (सतगुरु) प्राप्त हैं वो अपने-अपने गुरु में अपनी आस्था को और प्रगाढ़ करते हुए जीवन को धन्यता तक ले जाने का प्रयत्न करें। गुरु के प्रति पूर्ण निष्ठा, समर्पण और आदर के साथ सत-पुरुषों के दिखाए मार्ग पर चलने का प्रयत्न करें ताकि समूचे विश्व में दिग्विजयी, कालजयी भारतीय संस्कृति विश्वगुरु के मूल स्वरूप में पुनर्स्थापित हो सके।

❖ राधाकांत पाण्डेय

# मॉयल : समाचार पत्रों की कुछ झलकियाँ

## मॉयल का उत्पादन मार्च में 16 लाख टन से ऊपर पहुंचा

भरवेली (जबलपुर एक्सप्रेस)। भारत सरकार के इस्पात मंत्रालय के अंतर्गत आने वाली मॉयल लिमिटेड जिसकी बालाघाट में भरवेली, उकवा, तिरोडी, सीतापठोर में मैगनीज की खदानें है। इसमें भरवेली उकवा ऐसी खदान है जहां पर ओपन कास्ट के साथ अंडरग्राउंड माईनिंग कार्य भी किया जाता है। प्रबंधन द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार मॉयल का उत्पादन चालू वित्त वर्ष 7 मार्च,2024 तक 16 लाख टन से अधिक हो गया है जो पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में 37 प्रतिशत अधिक है। इसके साथ मॉयल ने वित्त वर्ष 2007-08 में प्राप्त 13.64 लाख टन के पिछले उत्पादन के तुलना में पहले ही 17 प्रतिशत की वृद्धि हासिल कर ली है। यह स्थापना के बाद से मॉयल का अब तक का सबसे अधिक उत्पादन है। उल्लेखनीय है कि फरवरी माह में मॉयल ने 1.51 लाख टन मैंगनीज अयस्क का उत्पादन किया था जो साल दर साल 15 प्रतिशत अधिक था। फरवरी,2024 तक 15.84

लाख टन के उत्पादन में साल दर साल 37 प्रतिशत की उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई थी। इतना ही नहीं बिक्री के क्षेत्र में भी कंपनी ने 1.36 लाख टन की बिक्री हासिल की थी जो फरवरी,2023 की तुलना में 18 प्रतिशत अधिक है। कहने का तात्पर्य यह है कि कंपनी व्यवस्थित रूप से अपनी कार्य योजना को धरातल पर विस्तार प्रदान करते हुए उत्पादन के क्षेत्र में निरंतर उपलब्धि अर्जित कर रहा है। जिसको देखकर लगता है कि कंपनी का 2030 तक अपने उत्पादन को दुगना से अधिक 3.50 मिलियन टन तक पहुंचने का महत्वाकांक्षी जो लक्ष्य रखा गया है उसको यह प्राप्त करने में आसानी के साथ सफल हो जायेगा। इस उपलब्धि के लिये निश्चित रूप से मॉयल में काम करने वाले कामगार कर्मचारी एवं अधिकारियों का कार्य के प्रति समर्पण महत्वपूर्ण है जो निर्धारित किये गये लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहयोग प्रदान कर रहा है।

## मॉयल में 17 .56 लाख टन उत्पादन एक ऐतिहासिक उपलब्धि : सक्सेना

सम्मान समारोह हुआ सम्पन्न

[illegible]

## मॉयल लिमिटेड बालाघाट खान में मनाया गया अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस

बालाघाट (जबलपुर एक्सप्रेस)। 8 मार्च को मॉयल लिमिटेड खान बालाघाट के तत्वावधान में बड़े हर्षोल्लास से अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आगाज किया गया।कार्यक्रम के आरम्भ में सीईओ जनपद पंचायत, बालाघाट श्रीमती ममता कुलस्ते जी का स्वागत अभिकर्ता एवम सयुक्त एवम महा प्रबंधक खान समूह 1 बालाघाट खान द्वारा किया गया द्व अभिकर्ता एवम सयुक्त एवम महा प्रबंधक खान समूह 1 बालाघाट खान का स्वागत खान प्रबंधक मयंक जैन द्वारा किया गया । बाद में सभी अतिथियों का स्वागत किया गया। कुमारी रचना चौधरी, श्रीमती शीला पटले, गीता डोंगरे, शालिनी जैन, रैना मैडम आप सभी का स्वागत किया गया। श्रीमती रश्मि तांडी द्वारा अतिथियों के स्वागत में स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि ममता कुलस्ते मैडम जनपद सीईओ बालाघाट ने अपने वक्तव्य में नारी शिक्षा पर जोर देते हुए महिला शक्ति के योगदान में अपने अनुभव साझा किया। विशिष्ट अतिथि रचना चौधरी मैडम महिला बाल विकास ने अपने ओजस्वी वक्तव्य से देश में हो रहे महिला उत्पीड़न और प्रेरणा युक्त शब्दों से महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए प्रेरित किया। विशिष्ट अतिथि शीला पटेल सामाजिक कार्यकर्ता ने अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाने का महत्व, परिवार में सामंजस्य कैसे बनाए रखें इस विषय पर अपना वक्तव्य देकर पर्यावरण संरक्षण पर प्रकाश डालते हुए सभी को

कपड़ों के थैले वितरित किए। इसी कड़ी में कु. चिंतामणि हरनखेड़े ने महिलाओं पर आधारित कविता पाठ करके सभी को मंत्र मुग्ध कर दिया। विशिष्ट तिथि गीता डोंगरे पूर्व सरपंच हुड़ा, महिला मंडल अध्यक्ष श्रीमती शालिनी जैन ने महिलाओं से अपने अनुभव साझा किए कार्यक्रम के अंत में कार्यक्रम अध्यक्ष आर. के. सिंह ने सभी महिलाओं को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की हार्दिक बधाइयां देते हुए विकसित भारत में महिलाओं की अहम भूमिका पर प्रकाश डालते हुए आभार व्यक्त किए। श्रीमती निजत खान ने बड़ी ही जिंदादिली से मंच संचालन करके कार्यक्रम में चार चांद लगा दिए दिया। कार्यक्रम में उपस्थित महिला मंडल अध्यक्ष श्रीमती शालिनी जैन, महिला मंडल सचिव श्रीमती रैना मेडम, मॉयल मैनेजर बालाघाट मयंक जैन, यूनियन प्रतिनिधि अशोक गेड़ाम, राजेश आचार्य प्रवीण गेड़ाम, कार्यक्रम आयोजक दिनेश गेड़ाम एवं समस्त महिलाओं के योगदान से सफलतम कार्यक्रम को अंजाम दिया गया, सभी मातृ शक्ति स्वरूपनी माताओं, बहनों का पुष्प देकर स्वागत किया गया और अंत में अतिथियों को मॉयल लिमिटेड की ओर से स्मृति चिन्ह भेंट कर एवम सुरुचि भोज करवाकर कार्यक्रम का समापन किया गया।

## मॉयल ने वित्तीय वर्ष 2024 में 1328 मीट्रिक टन इलेक्ट्रो लाइटिक मैंगनीज डाइऑक्साइड

उत्पादन, वर्ष दर वर्ष 30 प्रतिशत अधिक हासिल किया

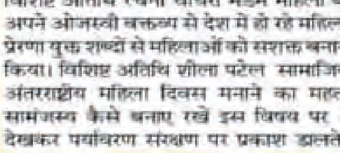

[illegible]

## मॉयल के उत्पादन में 37% और बिक्री में 32% की हुई बढ़ोतरी

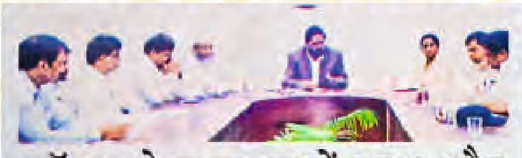

[illegible]

## मॉयल ने 1328 मीट्रिक टन इलेक्ट्रोलाइटिक मैंगनीज डायआक्साइड का उत्पादन किया..

जनप्रेरणा भरवेली।

*मॉयल प्रबंधन द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार मॉयल ने चालू वित्त वर्ष 10 मार्च,2024 तक में 1328 एमटीके इलेक्ट्रोलाइटिक मैंगनीज डायआक्साइड ईएमडी का अब तक का सबसे अधिक उत्पादन दर्ज किया। जो पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में 30 प्रतिशत अधिक है।*

मॉयल MOIL MOIL LTD.

इसके साथ मॉयल ने वित्त वर्ष 2006 एवं 07 में प्राप्त 1312 एमटीके के पिछले उच्चतम ईएमडी उत्पादन को भी पार कर लिया है। ईएमडी के 100 प्रतिशत आयात प्रतिस्थापन उत्पाद है जिसका उपयोग ज्यादातर फार्मास्युटिकल्स और बैटरी में किया जाता है। मॉयल ने डोंगरीबुजुर्ग खान में इलेक्ट्रोलाइटिक मैंगनीज डायआक्साइड ईएमडी की 1500 मीट्रिक टन प्रतिवर्ष क्षमता के लिये स्वदेशी तकनीक पर आधारित एक संयंत्र स्थापित किया है यह संयंत्र 1991 में चालू हुआ है। उल्लेखनीय की बात यह है कि भारत में ईएमडी का उत्पादन करने वाला यह एकमात्र संयंत्र है। उल्लेखित है कि मॉयल का उत्पादन मार्च में 16 लाख टन से अधिक हो गया है जो पिछले वर्ष की तुलना में इसी अवधि के 37 प्रतिशत अधिक है।

# मॉयल : समाचार पत्रों की कुछ झलकियाँ

मॉयल में 17.56 लाख टन उत्पादन एक ऐतिहासिक उपलब्धि : सक्सेना

मॉयल लिमिटेड ने एक दिवसीय संगोष्ठी एवं काव्य गोष्ठी का आयोजन किया

मॉयल ने नई संभावनाओं के मध्य 15 लाख टन के उत्पादन लक्ष्य को पार किया

मॉयल अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक सक्सेना का खदानों का सघन भ्रमण कार्यक्रम आज

भरवेली, तिरोड़ी, उकवा, सीतापटौर सहित सभी खदानों का समावेश

मॉयल ने 15 लाख टन के उत्पादन लक्ष्य को पार किया

मॉयल लिमिटेड बालाघाट खान में मनाया गया अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस..

मॉयल ने नई संभावनाओं के मध्य 15 लाख टन के उत्पादन लक्ष्य को पार किया

मॉयल ने फरवरी में अब तक का सबसे सर्वश्रेष्ठ उत्पादन किया

अप्रैल-फरवरी में उत्पादन 37 प्रतिशत व बिक्री 32 प्रतिशत बढ़ी

मॉयल ने 15 लाख टन के उत्पादन लक्ष्य को पार किया

मॉयल में 17.56 लाख टन उत्पादन ऐतिहासिक उपलब्धि : सक्सेना

मॉयल लिमिटेड बालाघाट खान में मनाया गया अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस..

मॉयल लिमिटेड में कवि सम्मेलन

मॉयल ने मई में पार किया बिक्री का उच्चतम स्तर

# बचत

कहते है, कि आज के समय में पैसे कमाना जितना जरूरी हैं, उतना ही जरूरी है, पैसे बचाना। अधिकांश लोग हमेशा यह कहकर ''बचना'' चाहते हैं, कि कमाई बहुत जरूरी है, खर्चा बहुत है, पैसा कैसे बचायें?

लेकिन यह तर्क किसी भी स्थिति में बिल्कुल भी सही नही है, चाहे आपकी कमाई कम ही क्यों न-हो,खर्चा ज्यादा ही क्यों न हो, पर आप बचत को नजर अंदाज ना करें, बल्कि आप इन तरिकों से अपना पैसा बचा सकते है।

सबसे पहले आप यह तय करें कि, चाहे कुछ भी हो जाये, आप अपनी कमाई का कम से कम 15 से 20% प्रतिशत बचत करेंगे। यदि आपने अपनी यह आदत बना ली तो आपको कभी यह नही लगेगा की कम कमाई में से पैसा बचाना मुश्किल है । पहले 2-3 महीने भले ही थोड़ी आपको मुश्किल आयेगी। लेकिन बाद में आपको कोई परेशानी नही होगी, जब आपको ऐसी बचत कि आदत हो जायेगी तो आप इस पैसे को बेहतर से बेहतर रिटर्न के लिये उपयुक्त निवेश कर सकेंगे।

## फिजुल खर्ची से बचे

किन्तु बचत करने के लिये सबसे पहले आपको अपने फिजुलखर्ची पर लगाम लगाना होगा, कई बार हम बीना सोचे-समझे ऐसे सामान खरीद लेते है। जिनकी हमें जरूरत ही नही होती है। इसलिये हमेशा पहले अपनी जरूरत देखे और लिस्ट तैयार करें उसके बाद ही स्मार्ट शार्पिंग करें सामानों के दाम ऑनलाईन भी चेक करे। कई बार ऑनलाईन खारीददारी करने पर अच्छा डिस्काउंट भी मिल जाता है। इससे कम कीमत पर अच्छे सामानों की खरीददारी हो जायेगी और पैसों की बचत भी होगी।

## बजट से ज्यादा खर्च न करें

हर महीने की आय और व्यय का बिलकुल सही बजट बनाएं और फिर पूरे महीने उसके अनुसार ही खर्च करें। महीने के अंत में देखे कि कही आपने अपने बजट से बाहर तो कुछ खर्च नहीं किया है? अगर किया है तो अगले महीने पहले से ही कोशिश करें कि बजट से ज्यादा खर्चा नहीं हो. इससे आप आसानी से बचत कर सकते है।

## क्रेडिट कार्ड के इस्तेमाल से बचें

आज कल लोग पैसा नहीं होने पर क्रेडिट कार्ड का इस्तेमाल कर शॉँपिंग कर लेते है। लेकिन आपको यह आदत मुश्किल में डाल सकती है। क्योंकि आप अगर समय पर क्रेडिट कार्ड का भुगतान नहीं कर पाए तो उस पर आपको भारी ब्याज देना पड़ सकता है, इसलिए हमेशा जितने पैसे हो, उसके अनुसार ही शॉपिंग करे।

## दो अकाउंट रखें

बचत के लिए जरूरी है, कि आप अपना बचत और खर्च का बैंक खाता अलग-अलग रखें सैलरी आते ही बचत का तय हिस्सा दूसरे अकाउंट में ट्रान्सफर कर दें, इससे आपके खर्चो में कमी आएगी और दूसरे अकाउंट में बचत के रूप में पैसा जमा होता जाएगा।

## SIP & SWP & फंड में बचत करें

आज के दौर में यदि सबसे अच्छा बचत उपाय कोई है, तो वह है, एस.आई.पी. (SIP) सिस्टेमेटिक इन्वेस्टमेंट प्लान अथवा एस.डब्लू.पी (SWP) सिस्टेमेटिक विड्राल प्लान अथवा म्यूच्वल फंड में निवेश करें। जिसमें रिस्क तो है, लेकिन बचत के लिये सबसे अच्छा और सही है, जो आपके भविष्य कि योजनाओं के लिये, बच्चों की पढ़ाई के लिये घर और शादी ब्याह के लिये, टेंशन मुक्त आत्मनिर्भर खुशहाल सेवानिवृत्त जीवन के लिये बचत को सुनिश्चित जरूरी करें।

❖ रामअवतार देवांगन
महामंत्री, मॉयल कामगार संघठन

# नशामुक्ती अभियान

मॉयल, अपने सभी कामगार और कर्मचारियों के लिए सर्वपरि है, मॉयल ने नशामुक्ति अभियान के तहत सभी खान इकाईयों में सेमिनार आयोजित कर विभिन्न कार्यक्रमों के तहत कामगार और कर्मचारियों को नई दिशा में जोडने का महत्वपूर्ण कदम उठाया है। नशा मानव समाज के लिए एक बड़ा समस्या है, जिसका प्रभाव सभी वर्गों को प्रभावित करता है, लेकिन कामगारों को नशा की समस्या को और भी गंभीरता से देखना चाहिए। कामगारों के नशामुक्ति अभियान एक ऐसा प्रयास है जो कामगार वर्ग को नशा से मुक्ति प्राप्त करने में मदद करने के लिए शुरू किया गया है। इस लेख में, हम कामगारों के नशामुक्ति अभियान के महत्व, उद्देश्य, और इसके प्रमुख उपायों पर विचार करेंगे।

**नशामुक्ति अभियान का महत्व :**

समाज में सामाजिक न्याय: नशा कामगारों के बीच में असमानता और अदालती काम को बढ़ावा देता है। नशामुक्ति अभियान के माध्यम से, समाज में एक सामाजिक सद्गति का प्रयास किया जा रहा है।

स्वास्थ्य और शारीरिक कुशलता: नशा के कारण कामगार वर्ग के लोग अपनी स्वास्थ्य और शारीरिक कुशलता को खो देते हैं। नशामुक्ति अभियान के माध्यम से उन्हें उनके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य की सुरक्षा की तरफ मदद मिलेगी।

**आर्थिक सुरक्षा :** नशा कामगार वर्ग के लोगों के लिए आर्थिक सुरक्षा को भी खतरे में डाल सकता है। यदि वे नशा छोड़ते हैं, तो उन्हें उनके परिवारों और समाज के साथ आर्थिक सुरक्षा की ओर कदम बढ़ाने में मदद मिलेगी।

**कामगारों के नशामुक्ति अभियान के उद्देश्य**

**शिक्षा और सचेतनता:** नशा की जानकारी को बढ़ाने और लोगों को इसके नकारात्मक प्रभावों से सचेत करने का प्रमुख उद्देश्य है।

**नशा का उपचार और सहयोग :** नशामुक्ति अभियान के अंतर्गत, नशा के पीड़ितों को चिकित्सा और सहयोग की सुविधा प्रदान की जाती है।

**रोजगार के अवसर:** नशा से मुक्ति प्राप्त करने के बाद, कामगार वर्ग के लोगों को उनके लिए रोजगार के अवसर प्रदान करने का उद्देश्य है।

**सामाजिक संबंध:** नशा के कारण टूटे सामाजिक संबंधों को फिर से जोड़ने का प्रयास किया जाता है।

**कामगारों के नशामुक्ति अभियान के प्रमुख उपाय :**

शिक्षा  नशा की जानकारी को बढ़ावा देने के लिए शिक्षा कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है, ताकि लोग नशे के हानिकारक प्रभावों के बारे में जान सकें।

नशा के उपचार नशे के प्रति आसक्ति के मामूली प्रतीकों को पहचानने और इसके उपचार के लिए साथी और सहयोग प्रदान किया जाता है।

**आवास और आर्थिक समर्थन:** नशे से मुक्त होने के बाद, लोगों को आवास और आर्थिक समर्थन प्रदान किया जाता है। ताकि वे फिर से समाज में बिना किसी संकट के जीवन जी सकें।

**समर्थन समुदाय :** नशे से मुक्ति प्राप्त करने के बाद, लोगों को समर्थन समुदाय में शामिल किया जाता है, ताकि वे अपने समस्याओं को साझा कर सकें और एक दूसरे की मदद कर सकें।

कामगारों के नशामुक्ति अभियान एक महत्वपूर्ण पहल है जो कामगार वर्ग के लोगों को नशे से मुक्ति प्रदान करने का प्रयास कर रहा है। इस अभियान के माध्यम से, हम समाज में सामाजिक न्याय, आर्थिक सुरक्षाए और स्वास्थ्य के क्षेत्र में सुधार कर सकते हैं। सभी समाज के सदस्यों को इस अभियान का साथ देना चाहिएए ताकि हम समृद्धि और सामाजिक समृद्धि की दिशा में कदम बढ़ा सकें।

**अनिल घरडे**
सहायक हिंदी अनुवादक

# राजभाषा का अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर महत्व

राजभाषा का अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर महत्व बहुत है क्योंकि यह विभिन्न राष्ट्रों और संगठनों के बीच संचार के लिए महत्वपूर्ण है। जब भी विभिन्न राष्ट्रों के बीच संवाद होता है, तो एक साझा भाषा का होना आवश्यक होता है ताकि संवाद को सहज बनाया जा सके। राजभाषा इस कार्य को संपादित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

अंतरराष्ट्रीय संगठनों जैसे कि संयुक्त राष्ट्र विश्व व्यापार संगठन, विश्व स्वास्थ्य संगठन आदि में राजभाषा का प्रयोग संयुक्तता और सहयोग को बढ़ावा देता है। एक साझा भाषा के माध्यम से लोग अपने विचारों और धारणाओं को बेहतर ढंग से साझा कर सकते हैं, जिससे उनके बीच समझौता होने की संभावना बढ़ती है।

साथ ही, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और वाणिज्य में भी राजभाषा का महत्व है। एक साझा भाषा के माध्यम से व्यापारिक संवाद को सुगम बनाने से न केवल व्यापारिक संचार की प्रक्रिया अधिक दक्ष और अधिक सहज होती है, बल्कि यह भाषा विविधता को समझने में भी मदद करती है, जिससे अंतरराष्ट्रीय व्यापार में समानता और न्याय का मानक बनता है।

इसके अलावा, राजभाषा का उपयोग अंतर्राष्ट्रीय साक्षात्कार, सांस्कृतिक आयोजन, और अन्य अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं में भी होता है। एक साझा भाषा के माध्यम से विविध संस्कृतियों और जनताओं के बीच जोड़बंदी बढ़ती है और अंतर्राष्ट्रीय समझौते के लिए मदद करती है। सम्मिलित, राजभाषा का अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर महत्व विभिन्न संगठनों और संयुक्तताओं के बीच संवाद, समझौता, और सहयोग को बढ़ावा देता है। यह संभावनाओं को विस्तारित करता है और अंतर्राष्ट्रीय समृद्धि और सहयोग की प्रक्रिया को तेजी से आगे बढ़ाता है।

**राजभाषा का अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर महत्व कई प्रमुख कारणों से होता है :**

■ **विश्व संघ और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों में काम करने के लिए :** अनेक अंतर्राष्ट्रीय संगठनों में विभिन्न भाषाओं का प्रयोग होता है। राजभाषा का अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर महत्व उन संगठनों में सहयोग और संवाद को सुगम बनाता है।

■ **विदेशी दूतावासों में संचार के लिए :** एक राष्ट्र के विदेशी दूतावासों में, राजभाषा का अधिकारिक बोलचाल होना जरूरी होता है। यह अन्य देशों के साथ संदेश और निगरानी को सुनिश्चित करने में मदद करता है।

■ **विदेशी संबंधों में सामाजिक और सांस्कृतिक अनुबंधों में :** विभिन्न भाषाओं की समझदारी और संवाद एक सामाजिक और सांस्कृतिक संदेश को गहराई देते हैं और अंतर्राष्ट्रीय समझौतों में मदद करते हैं।

■ **आर्थिक और वाणिज्यिक संबंधों में :** राजभाषा का अंतर्राष्ट्रीय मान्यताओं में होना व्यापार, वित्त, और अन्य आर्थिक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण है। इसके माध्यम से विभिन्न देशों के बीच वाणिज्यिक संबंध स्थापित किए जा सकते हैं।

■ **सांस्कृतिक और सामाजिक विनियमन में:** राजभाषा का महत्व भी सांस्कृतिक और सामाजिक संबंधों में होता है, जिससे विभिन्न देशों और समाजों के बीच भाषा, साहित्य, और सांस्कृतिक विनियमन को समझा और समायोजित किया जा सकता है।

■ **राजनीतिक और बौद्धिक विनियमन में :** अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर राजभाषा का महत्व राजनीतिक और बौद्धिक विनियमन में होता है। यह विभिन्न देशों के बीच संचार को सुगम बनाने और सहयोग को बढ़ाने में मदद कर सकता है।

■ **शिक्षा में :** राजभाषा का अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर महत्व शिक्षा में भी है। यह विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों के बीच शैक्षिक विनियमन को समझने और समायोजित करने में मदद करता है।

■ **सांस्कृतिक एकता:** एक राष्ट्र की भाषा के माध्यम से उसकी सांस्कृतिक एकता और अभिव्यक्ति की अनुपस्थिति को स्थापित किया जाता है। यह लोगों को एक-दूसरे के साथ संवाद करने और अपने विचारों और भावनाओं को साझा करने में सहायक होता है।

■ **राजनीतिक महत्व :** राजभाषा के माध्यम से सरकारों और जनता के बीच संचार का माध्यम बनता है। इससे राजनीतिक प्रक्रियाओं में सहयोग, समझौता और समर्थन बढ़ता है।

■ **आंतर्राष्ट्रीय संबंधों में माध्यम :** राजभाषा का होना राष्ट्र के आंतर्राष्ट्रीय संबंधों में एक महत्वपूर्ण कारक होता है। इससे संबंधों को मजबूती से संरक्षित किया जा सकता है और विभिन्न देशों के बीच समझौते को सुगठित किया जा सकता है। इन सभी कारणों से, राजभाषा का अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर महत्व निहित है और यह एक राष्ट्र की सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

❖अनिल घरडे
सहायक हिंदी अनुवादक

# पर्यावरण के प्रति कैसे जागरूक रहेंगे।

5 जुन 1973 को पहला विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया, इसकी शुरुवात संयुक्त राष्ट्र द्वारा घोषित की गयी थी, यह दिवस पर्यावरण के प्रति जागतिक स्तर पर जागरूकता जगाने के लिए मनाया जाता है। पर्यावरण के जैविक घटको में सुक्ष्म जीवाणु से लेकर कीडे-मकोडे, जीव-जंतु, पेड-पौधों के अलावा उनसे जुडी सारी जैविक क्रियाए प्रक्रियाए शामिल होती हैं। पर्यावरण के अजैविक घटको में निर्मित तत्व और उनसे जुडे घटक आते है, जैसे पर्वत, नदी, हवा, जलवायु आदि। पर्यावरण से हमे हर संसाधन उपलब्ध होते है, जो हर प्राणी मात्र के लिए अति आवश्यक है।

धरती पर रहने वाले व्यक्ति द्वारा उठाये गए छोटे-छोटे कदमों के द्वारा हम आसानी से पर्यावरण को सुरक्षित करते है। पर्यावरण धरती पर स्वस्थ्य जीवन जीने के लिए बहुत महत्वपूर्ण भुमिका निभाता है। सामाजिक, शारिरिक, आर्थिक, बौध्दिक तथा भावनात्मक रूप से पर्यावरण हमारे जीवन के अलग-अलग दिशा को प्रभावित कर रहा है। पर्यावरण मे प्रदुषण वातावरण में विभिन्न प्रकारो के बिमारियो को जन्म देती है जिसे इन्सान जीवन भर सहता रहता है। यह किसी समुदाय या शहर की समस्या नही बल्कि दुनिया भर की समस्या है तथा इस समस्या का समाधान किसी व्यक्ति के प्रयास करने से नही होगा। अगर इसका निवारण पूर्ण तरिके से नही किया गया तो एक दिन जीवन का अस्तित्व ही नही रहेगा, इसलिए हर आम नागरिक को सरकार द्वारा आयोजित या स्वयं को पर्यावरण बचाओ के आन्दोलन में सहभागी होना ही होगा।

पृथ्वी का 70 प्रतिशत से ज्यादा का भाग पानी से ढका हुआ है। पानी से ही पृथ्वी पर जीवन की शुरूआत हुई। स्वच्छ जल वास्तव में बहुत सी चीजे है, यह एक महत्वपुर्ण आवश्यकता है स्वच्छ जल और स्वस्थ महासागर, नदीयों के लाभो का आनंद लेते रहना है, तो हमे स्वच्छ जल के उपयोग और उपचार के तरीको को मौलिक रूप से बदलने की आवश्यकता है। भूमिगत जल का बहुत तरीके से उपयोग होने के कारण जलस्तर तेजी से गिरता जा रहा है, जिसके कारण कुओं का पानी सुखना, जलपूर्ति की समस्या सिंचाई की समस्या आदी गंभीर समस्याए उत्पन्न हो रही है। आज भी देश के लगभग 6 करोड लोगों को पीने का साफ पानी उपलब्ध नही है।

आज के दौर मे प्रदुषण बहुत तेजी से बढ रहा है। बढ़ती जनसंख्या और बड़ी-बड़ी इमारतो के कारण पर्यावरण नष्ट हो रहा है। हर जगह के पेड काट कर बिल्डिंग और सिमेंट के रास्तो का निर्माण करके पर्यावरण और प्रकृति के साथ छेड-छाड मानव प्रजाती कर रही है। आज के वातावरण में बढता तापमान यह भी बहुत बड़ी समस्या को जन्म देने का संकेत दे रही है कि आज अगर हम दस पेड काट रहे है तो उसके लिये सौ पेड लगाना आवश्यक है , क्योंकी पेड बढ़ने को भी छह से सात साल लगेंगे तो वह बढ़ते तापमान को नियंत्रण रखने में मदद कर पायेंगे, नही तो अगर तापमान 50 डिग्री सेल्सियस के उपर गया तो मानव जाती के लिये जिंदा रहना भी मुश्कील हो जायेगा, इसके लिये सरकार के तथा सभी मानव जाती ने बहुत गंभीर तरीके से विचार करना चाहिये। आज हर जगह का सिमेंटीकरण हो कर जमीन में पानी ही नही जा रहा है उसके वजह से तापमान में बढ़ोतरी होकर बहुत से समस्याओं का सामना करना पड रहा है यह बात बहुत चिंता की है। वायु प्रदुषण से अवांछित गॅस, धुल के कणो आदि के वजह से लोग तथा प्रकृति को खतरा बन गया है। जल प्रदुषण से विभिन्न औद्योगिक ईकाई द्वारा अपने कचरे तथा गंदे पानी को नदी में विसर्जन करके जल प्रदुषण हो रहा है।

ध्वनि प्रदुषण से अनियंत्रित, अत्याधिक ध्वनि प्रदुषण से मानव के कानो तथा दिमाग पर असर हो रहा है। भूमि प्रदुषण से कृषि योग्य भूमि की कमी हो रही है, भूस्खलन से जीवित तथा वित्तिय हानी हो रही है। प्रकाश प्रदुषण से आखों के आगे अंध:कार छा जाना जो गाडी चलते समय ॲक्सीडेंट की आम बात हो रही है। इसलिये अनावश्यक वनो की कटौती, शहरीकरण, औद्योगिकीकरण, हानिकारक विषैले, कचरा मिट्टी, हवा और पानी को कैसे संतुलन मे रखे इसके लिये बहुत गंभीर रूप से इस सामाजिक मुद्दे को जड़ से खत्म करना है और समृद्ध जीवन जीना है।

❖ शैलेश भिवगड़े
वरि. आशुलिपिक

# हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने के लिये नियम

भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुसार हिन्दी को राष्ट्र भाषा का दर्जा प्राप्त है। सरकार हिंदी को बढ़ावा देने के लिये 14 सितंबर को हिंदी दिवस का सभी सरकारी कार्यालयों में आयोजन कराती है। सरकार तो हिंदी को बढ़ावा देने के लिये जो कुछ कर सकती वो करती है, पर हिंदी को बढ़ावा देने के लिये सबसे ज्यादा ये जरुरी है, कि हम हिंदी भाषी लोग भी कुछ प्रयत्न करे। ये बात सर्वमान्य है कि हिंदी को हम हिंदी वालों ने ही छोड़ दिया है। हमें हिंदी से तो प्यार है लेकिन नौकरी के बाजार में अंग्रेजी की महत्ता देखकर हम सब हिंदी के प्रति उदासीन हो जा रहे है, जबकि हमें हिंदी को हर क्षेत्र में बढ़ावा देना चाहिये।

हिंदी को बढ़ावा देने के विभिन्न उपाय : – हम अपने जीवन में छोटे–छोटे उपायों से हिंदी को बढ़ावा दे सकते है।

1) अगर हम कोई व्यवसाय करते है तो हम कोशिश कर सकते है कि समस्त साइन बोर्ड, नाम पट्टियायें, काउंटर बोर्ड, सूचना पटल आदि को हिंदी में अवश्य लिखे।

2) सभी प्रपत्रों दस्तावेजों, मुद्रित सामग्री तथा अन्य लेखन सामग्री को हिंदी में मुद्रित (प्रिंट) करवायें।

3) विजिटिंग कार्ड पूर्ण रूप से हिंदी में लिखे जायें। अगर पूर्ण रूप हिंदी में लिखना संभव नही है तो कुछ तो हिंदी में होना ही चाहियें (कम से कम आपका नाम तो हिंदी में होना चाहिये।)

4) संभव हो तो कम्प्यूटर पर यूनिकोड हिंदी टायपिंग होनी चाहियें।

5) लिखने एवं बोलने में आसान हिंदी प्रयोग सभी लोगों को करना चाहियें।

6) हिंदी के वाक्यों में अंग्रेजी की वाक्य संरचना से बचे, अर्थात हमारे वाक्यों को हिंदी भाषा के अनुसार ही बोलना चाहियें।

7) सबसे खास बात यह है कि हमें कोई भी बात अंग्रेजी में सोचकर हिंदी में नहीं लिखना चाहियें, अगर हम हिंदी में सोच रहे है तो हिंदी में ही लिखना चाहिये।

8) हिंदी में लिखते समय शब्दों के लिये अटकिये नही, किसी भी शैली के लिये रूकिये नही और अशुद्धियों से घबरायें नही।

9) कोशिश करे की नैतिक रूप से हिंदी लेखन करें। अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद का सहारा बहुत कम लेना चाहियें। क्योंकि दोनों भाषाओं की शैली अलग–अलग है।

10) शुरू में हिंदी में काम करने से आपको झिझक महसूस हो सकती है किंतु काम करते–करते आप देखेंगे की अंग्रेजी की तुलना में हिंदी सरल भाषा है। इसमें समय बचता है। हिंदी भाषा हमारी अभिव्यक्ति को स्पष्ट और प्रभावी बनाती है।

तो हम सब को प्रण लेना चाहिये की हम हिंदी में ही काम करेंगे और हिंदी को बढ़ावा देने हिंदी के प्रसार–प्रचार हेतु सारे उपाय हिंदी को सफल बनाये रखनें में प्रयत्नशील रहेंगे। ताकि हमारी प्यारी भाषा हिंदी का प्रचार–प्रसार हो सके।

धन्यवाद!

❖ रीता ठाकरे
सहायक - I (रचना)

# ।। राजभाषा हिंदी ।।

**राष्ट्रभाषा हिंदी :** 1949 में स्वतंत्रता प्राप्ति के तुरंत बाद संविधान सभा द्वारा इसे अपनाया गया था। देश में प्रतिवर्ष 14 सितंबर का दिन हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। देश में राष्ट्रीय एकता बनाए रखने के लिए भी राष्ट्रभाषा आवश्यक होती है। राष्ट्रभाषा को बोलने से मानसिक संतोष का अनुभव होता है। हिंदी पुरे विश्व में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। हिंदी की लिपी देवनागरी है, जो कि देवों की लिपी है। इस भाषा का विशेष रूप से उत्तर भारत में ज्यादा उपयोग होता है। दक्षिण भारत लोग ज्यादातर अंग्रेजी भाषा का उपयोग करते है, जो हिंदी को ठीक से नहीं समझते है।

भारत में लाखो लोग अभी भी हिंदी नहीं जानते है। ऐसा इसलिए है क्योंकि इसमें संस्कृत शब्दों को शामिल करने से इसे कठीन बना दिया गया है। आज देश में हर जगह पर अंग्रेजी भाषा ने अपना कब्जा जमा लिया है। इसमें कोई शक नहीं है, कि अंग्रेजी आंतर्राष्ट्रीय बातचीत के लिए  जरूरी है। हिंदी को सिखने के लिए आज बच्चों को सख्ती की जाती है। हमें अपनी ही भाषा को बचाने के लिए कदम उठाना पड़ रहा है।

**क्यों नहीं है हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा :-** राष्ट्रभाषा और राजभाषा अंतर की बात जाए तो इनमें दो प्रमुख अंतर है। एक अंत इन्हें बोलने वालों की संख्या से है और इस अंतर इनके प्रयोग का है। राष्ट्रभाषा जहाँ जन साधारण की भाषा होती है और लोग इससे भावात्मक और सांस्कृतिक रूप से जुड़े होते है। तो वही  राजभाषा का सीमित प्रयोग होता है। राजभाषा प्रयोग अक्सर सरकारी कार्यालय और सरकारी कर्मियों द्वारा किया जाता है। देश जैसे ब्रिटेन की इंग्लिश, जर्मनी की जर्मन और पाकिस्तान की उर्दू की राष्ट्रभाषा और राजभाषा एक ही है। मगर बहुभाषी देशों को यह समस्या है। यहां  राष्ट्रभाषा और राजभाषा अलग-अलग होती है।

''भारतीय भाषाओं में केवल हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जिसे राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाया जा सकता है क्योंकी यह समस्त भारत में आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक सम्पर्क  माध्यम के रूप में प्रयोग के लिए सक्षम है तथा सारे देश के लिए सीखना आवश्यक है।

**चुनौतियाँ :-** अगर हिंदी भाषा की एक भाषा के तौर पर सामायिक स्थित का विश्लेषण किया जाए तो इसके समक्ष अनेक चुनौतियाँ है। सबसे बड़ी चुनौती तो इसे राष्ट्रभाषा की स्वीकार्यता का न मिलना है। इसके अलावा एक उच्च शिक्षित अभिजात्य वर्ग ऐसा भी है जो हिंदी बोलणे  में शर्म और हिचकिचाहट महसूस करता है। हिंदी भारत की सार्वभौतिक संवाद भाषा भी नहीं है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की 41 फिसदी आबादी की ही मातृ भाषा हिंदी है। इसके अलावा लगभग 75 फिसदी भारतीयों की दूसरी भाषा हिंदी है जो इसे बोल और  समझ सकते है।

**प्रमुख चुनौती :-** हिंदी भाषा के सामने एक प्रमुख चुनौती यह है कि अब तक रोजगार की भाषा नहीं बन पाई है। आज तमाम मल्टिनॅशनल कंपनियों के दैनिक कामकाज से लेकर कार्य संचालन की भाषा अंग्रेजी है। इसके अलावा जमाम क्षेत्रीय राजनीतिक और सामाजिक संगठन भी अपने निहित स्वार्थों के लिए हिंदी का विरोध करत है। अभी भी भारत में उच्च शिक्षा और तकनीकी शिक्षा का माध्यम ज्यादातर अंग्रेजी ही रहता है। हिंदी भाषा की हालत आज ऐसी है कि इसके संबंध में जागरुकता सृजन के लिए विभिन्न सेमिनारों समारोहों और कार्यक्रमों का सहारा लेना पड़ता है।

**हिंदी का प्रचार-प्रसार :-** हिंदी के विद्वान दुर्भाग्य मानते है कि हिंदी अभी तक हमारी राजभाषा नहीं बन पाई है। संविधान में अनुच्छेद 343 से लेकर 351 तक राजभाषा अधिनियम के तहत देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी भारत संघ की राजभाषा है।

कपिल जोशी से सम्पर्क  करते हैं। कई तकनीकी संस्थानों में कैंपस सिलेक्शन के लिए जाते रहते हैं, कपिल कहते है कि वह कम्पनी में आने के लिए किसी के द्वारा दिए जा रहे साक्षात्कार के समय यह ध्यान रखते है कि उसे कंपनी में आने के बाद कम से कम संचार के साधनों का प्रयोग करने लायक अंग्रेजी  तो आती ही है। क्योंकि मेल आदि जैसे कार्यो को समझने के लिए अंग्रेजी तो आवश्यक ही है बाकी का काम हिंदी में चल सकता है।

''हिंदी आसान होगी तभी लोकप्रिय होगी<br>
पर बेतुके अनुवाद से तो यह सम्भव नहीं''

'' वह मुश्किल इसलिये लगती है क्योंकि कार्यालयी हिंदी का मतलब किताबी अंग्रेजी का बे तुका हिंदी अनुवाद रह गया है।''भारत बहुभाषी देश है इसलिये यह थोड़ा आवश्यक हा जाता है कि सर्वमान्य एक भाषा हो ताकि संवाद सहजता से हा सके और उसके लिये हिंदी उपयुक्त भाषा प्रतीत होती है, बाकी हर भाषा में इतने कठिन शब्द हैं कि उनके प्रयोग से हम उस भाषा में सहज किसी भी व्यक्ति को  असहज कर सकते हैं, एक उन्नत भाषा वहीं होती है जो सहज संवाद करने में समक्ष हो, अंग्रेजी विश्व स्तर पर स्वीकार्य हो रही है क्योकि उसने अपने को सहज रखा है और लचीला भी।

**फिलहाल तो अपनों में ही बेगानी हिंदी :** हिंदी की स्थिती ऐसी हो गई है सिविल सेवा परीक्षा में हिंदी माध्यम में परीक्षा दे रहे छात्रों से यह कह दिया जाता है हिंदी अनुवाद गलत होने की स्थिती में उनके अंग्रेजी में लिखे को सही माना जाएगा। हिंदी को इस तरह लगातार नजरअंदाज करते रहने का नतीजा हमें दिखने लगा है। सिविल सेवा परीक्षा में वर्ष 2010 तक हिंदी माध्यम के उम्मीदवारों में कम से कम जी या चार उम्मीदवारों द्वारा शीर्ष 10 रँकिंग प्राप्त की जाती थी। अब यह आंकड़ा शीर्ष 300 में भी नहीं हैं।

। करते है तन-मन से वंदन जन-गण-मन<br>
अपनी संस्कृति का आराधन अपनी भाषा का।

❖ निजहत खान<br>
सहायक सह टंकक (का. एवं प्र.)

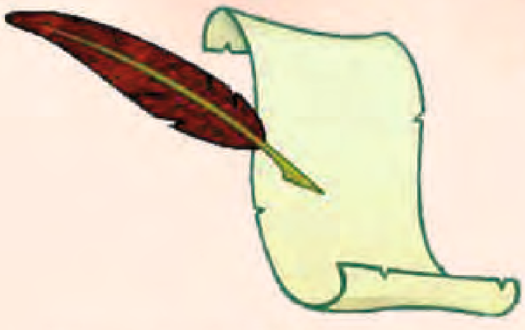

# हिंदी का प्रचार-प्रसार

जनतांत्रिक आधार पर हिंदी विश्व भाषा है क्योंकि उसके बोलने-समझने वालों की संख्या संसार में 'तीसरी' है। विश्व के 132 देशो में जा बसे भारतीय मूल के लभगग 2 करोड़ लोग हिंदी माध्यम से ही अपना कार्य निष्पादित करते है। एशियाई संस्कृति में अपनी विशिष्ट भूमिका के कारण हिंदी एशियाई भाषाओं से अधिक एशियों की प्रतिनिधी भाषा है।

विश्वभर की भाषाओ का इतिहास रखने वाली संस्था एन्थोलाग के अनुसार चीनी और अंग्रेजी भाषा के बाद हिंदी दुनियाभर में सर्वाधिक बोलने जानेवाली तीसरी भाषा है। पाकिस्तान, नेपाल, बांग्लादेश, सूरीनाम, त्रिनिनाद, मॉरिशश, युगांडा, गुयाना, अमेरिका, ब्रिटेन, जर्मनी, न्यूजीलैंड, युएई, साउथ अफ्रीका में हिंदी बोलने वाले संख्या बढ़ी है।

अमेरिका के अलावा यूरोपीय देशो, एशियाई देशो और खाड़ी देशों में भी हिंदी का तेजी से विकास हो रहा है। रूस के कई विश्वविद्यालयों में हिंदी साहित्य पर लगातार शोध हो रहे है। हिंदी साहित्य का जितना अनुवाद रूस में हुआ है, उतना शायद ही दुनिया में किसी अन्य भाषा के ग्रंथों का हुआ हो। लैंग्वेज यूज इन यूनाइटेड स्टेट्स - 2011 की रिपोर्ट में कहा गया है कि हिंदी अमेरिका में बोली जाने वाली शीर्ष 10 भाषाओं में एक है। जहाँ बोलने वाले की संख्या छह लाख से भी अधिक है। हिंदी ऐसी भाषा है जो प्रत्येक भारतीय को वैश्विक स्तर पर सम्मान दिलाती है। दुनियाभर में आज 75 करोड़ से भी ज्यादा लोग हिंदी बोलते है और जिस प्रकार वैश्विक परिदृश्य में हिंदी की स्वीकार्यता निरंतर बढ़ रही है। विश्वभर में हमारी हिंदी फिल्म इण्डस्ट्री, बॉलीवूड का नाम है।हर साल डेढ़ हजार फिल्मे बनती है और ये फिल्मे भारत के अलावा विदेशों में भी खूब पसंद की जाती है। यही कारण है कि बॉलीवूड सितारे अक्सर अपनी फिल्मों के प्रचार-प्रसार के लिये अब विदेशों में शो आयोजित करने लगे है। यूएई में हिंदी एफ. एम चैनल वहां के लोगों की खास पसंद है।

आज दुनिया का हर वह कोना जहां भारतवंशी बसे है वहां हिंदी धूम मचा रही है। एशियाई देशों में अपनी व्यापारिक गतिविधियों को बढ़ाने के लिये अब बहुराष्ट्रीय कंपनिया भी हिंदी के प्रचार-प्रसार पर खास ध्यान देने लगी है। हिंदी की बढ़ी ताकत को महसूस करते हुए ही ॲमेजान, फ्लिपकार्ट, स्नैपडील, ओएलक्स, क्विकर, आदि दुनिया की दिग्गज कॉमर्स कंपनियों हिंदी जानने वाले ग्राहकों तक अपनी ज्यादा से ज्यादा पहुँच बनाने के लिये ही हिंदी के अपने अपने ऐप लेकर आ चुकी है।

हिंदी है हम वतन के,
हिंदोस्ता हमारा है।

❖ सचिन सोनटक्के

# फूलोंवाली साड़ी

माँ फूलोंवाली साड़ी लाई हुँ, मुझे देखकर न तो आँखे में पहचान उभरी
न चहेरे पर मुस्कान आई है।
शून्य को देखत उनकी आँखें पता नही क्या कहना चाही है,
हाथ-पैर मुरझा, पड़े थे, मुँह में वाणी नहीं पाई है।
माँ फूलों वाली साडी लाई हूँ
एक अदवितीय खुशबू उनकी मासूमियत का परिचय,
फूलों से भरी वो प्यारी लाई हूँ।
संग लाती है वो रंगीनी, माँ के सपनों की सजावट,
हर बात में उनकी ममता छुपी, फूलों की तरह वह पाई हूँ,
माँ फूलोंवाली साडी लाई हूँ।
माँ के नाम में एक खास छाया, माँ की आँचल में बसी एक दुलहन,
फूलों की सवारी में चमकती जीवन पाई हूँ,
माँ फूलोंवाली साडी लाई हूँ।
फलोंवाली साडी में बसी, माँ की सारी खुशियाँए
माँ की सुखीयों से भरी हर रात की काली घटा छाई है,
माँ फूलोंवाली साडी लाई हूँ।

अनिल घरडे
सहायक हिंदी अनुवादक

# खान का मजदूर

चारो ऋतुओं का सामना कर,
जान जोखिम मे डालकर
उत्पादन बढाने में सक्षम रहता
खान का मजदूर है।

कभी प्रेम कभी गम के सहारे,
जी रहा रोजी रोटी की आस में
घर परिवार का सहारा बनता
खान का मजदूर है।

अच्छे उत्पादन की खुशी में,
पसीने की परत जमाकर
पत्थरों की मार सहन कर
उद्योग बढ़ाता खान का मजदूर है।

सदा प्रयत्नशील रहा, रहता है, रहेगा
''मिनी रत्न से नवरत्न'' के उद्योग बनाने
अपने अथक परिश्रम प्रयासो मे
खान का मजदूर है।

दिव्येश लिम्बाचिया
वरि. सहायक (वित्त)

# आज कुछ अलग सी बात है।

आज कुछ अलग सी बात है।
आज, सूरज धधकता
अग्निपूंज नहीं
पथ दिखाता सहचर सा है।
आज, फुलवारी में फुदकती
चिड़िया की चहचहाहट पर
क्रोध नहीं आ रहा है,
मन को गुदगुदाता
लग रहा है उनका कलरव।
आतुर लग रहें हैं आज,
मुझे देखकर कभी
मुंह सिकोड़ने वाले द्वारपट,
अपनी दोनों बाहें फैलाए
खड़े हैं मुस्कुराते हुए।
आज, हौले–हौले चलती पवन
मेरे बिखरे लटों को
संवारने की कोशिश में हैं।
आज, गाय के बछड़े का
रंभाना भी सूर लिए हुए है।
आखिर आज क्या बात है।
मैंने स्वयं से ही पूछ लिया।
मेरे अंतर्मन ने उत्तर दिया –
ये तुम्हारे अपने जज्बात है।
उत्साह है तुम्हारा अपना,
उल्हास है तुम्हारे अंतस का।
प्रकृति स्थिर है हमेशा,
तुम्हारे भाव ही प्रभाव देते हैं,
सबके हाव भाव को।
तुम स्वयं स्फूर्त हो,
कुछ अलग सी आभा लिए।
बस – कुछ और नहीं है आज।

**दिनेश कनोजे देहाती**
वरि. चार्जहैंड (यांत्रिकी)

# अपने हिस्से का पानी

हमने अपने हिस्से की
ज़मीं पर घर बना लिया।
हमने अपने हिस्से की
रोशनी को समेट लिया।
हमने अपने हिस्से की
हवा सांसों में बदल दिया।
बस...
हमने अपने हिस्से की
वर्षा को नहीं संभाला।
सरकार पर छोड़ दिया,
पानी ने हमें छोड़ दिया ।
बचाएं प्यास का पानी,
लो आ रही है वर्षा रानी।
करें जल संरक्षण का समर्थन,
बूंद बूंद से सागर, हो परिवर्तन।

**दिृश कनोजे देहाती**
वरि. चार्जहैंड (यांत्रिकी)

## आप पहली लाइन पढ़ते ही खुद इसके मुख्य नायक हो जाएंगे

# एक कहानी-हमारी आपकी

बचपन में स्कूल के दिनों में क्लास के दौरान शिक्षक द्वारा पेन माँगते ही हम बच्चों के बीच रॉकेट गति से गिरते पड़ते सबसे पहले उनकी टेबल तक पहुँच कर पेन देने की अघोषित प्रतियोगिता होती थी।

जब कभी मैम किसी बच्चे को क्लास में कापी वितरण में अपनी मदद करने पास बुला ले, तो मैडम की सहायता करने वाला बच्चा अकड़ के साथ 'अजीमो शाह शहंशाह' बना क्लास में घूम-घूम कर कापियाँ बाँटता और बाकी के बच्चे मुँह उतारे गरीब प्रजा की तरह अपनी बेंच से न हिलने की बाध्यता लिए बैठे रहते। शिक्षक की उपस्थिति में क्लास के भीतर चहल कदमी की अनुमति कामयाबी की तरफ पहला कदम माना जाता था।

उस मासूम सी उम्र में उपलब्धियों के मायने कितने अलग होते थे, ।) शिक्षक ने क्लास में सभी बच्चों के बीच अगर हमें हमारे नाम से पुकार लिया...

शिक्षक ने अपना रजिस्टर स्टाफ रूम में रखकर आने बोल दिया तो समझो कैबिनेट मिनिस्टरी में चयन का गर्व होता था।

आज भी याद है जब बहुत छोटे थे तब बाज़ार या किसी समारोह में हमारी शिक्षक दिख जाए तो भीड़ की आड़ ले छिप जाते थे। जाने क्यों किसी भी सार्वजनिक जगह पर टीचर को देख हम छिप जाते थे? कैसे भूल सकते है, अपने उन गणित के टीचर को जिनके खौफ से 13, 17 और 19 का पहाड़ा याद कर पाए थे।

कैसे भूल सकते है उन हिंदी के शिक्षक को जिनके आवेदन पत्रों से ये गूढ़ ज्ञान मिला कि बुखार नही ज्वर पीडित होने के साथ विनम्र निवेदन कहने के बाद ही तीन दिन का अवकाश मिल सकता था।

वो शिक्षक तो आपको भी बहुत अच्छे से याद होंगे जिन्होंने आपकी क्लास को स्कूल की सबसे शैतान क्लास की उपाधि से नवाज़ा था। उन शिक्षक को तो कतई नही भुलाया जा सकता जो होमवर्क कॉपी भूलने पर ये कहकर कि ''कभी खाना खाना भूलते हो''बेइज़्ज़त करने वाले तकिया कलाम से हमें शर्मिंदा करते थे।

शिक्षक के महज़ इतना कहते ही कि 'एक कोरा पेज़ देना ' तब पूरी कक्षा में फड़फड़ाते 50 पन्ने फट जाते थे।

शिक्षक के टेबल के पास खड़े रहकर कॉपी चेक कराने के बदले यदि सौ दफा सूली पर लटकना पड़े तो वो ज्यादा आसान लगता था। क्लास में शिक्षक के प्रश्न पूछने पर उत्तर याद न आने पर कुछ

लड़के/लडकियों के हाव भाव ऐसे होते थे कि उत्तर तो जुबान पर रखा है बस जरा सा छोर हाथ नहीं आ रहा। ये ड्रामेबाज छात्र उत्तर की तलाश में कभी छत ताकते, कभी आँखे तरेरते, कभी हाथ झटकते। देर तक आडम्बर झेलते-झेलते आखिर शिक्षक के सब्र का बांध टूट जाता .. you, yes you, get out from my class ....

सुबह की प्रार्थना में जब हम दौड़ते भागते देर से पहुँचते तो हमारे शिक्षकों को रत्तीभर भी अंदाजा न होता था कि हम शातिर छात्रों का ध्यान प्रार्थना में कम और आज के सौभाग्य से कौन-कौन सी शिक्षक अनुपस्थित है, के मुआयने में ज्यादा रहता था। आपको भी वो शिक्षक याद है न, जिन्होंने ज्यादा बात करने वाले दोस्तों की जगह बदल उनकी दोस्ती कमजोर करने की साजिश की थी।

मैं आज भी दावा कर सकती हूँ, कि एक या दो शिक्षक शर्तिया ऐसे होते है जिनके सिर के पीछे की तरफ अदृश्य नेत्र का वरदान मिलता है, ये शिक्षक ब्लैक बोर्ड में लिखने में व्यस्त रहकर भी चीते की फुर्ती से पलटकर कौन बात कर रहा है का सटीक अंदाज़ लगाते थे।

वो शिक्षक याद आये या नहीं जो चाक का उपयोग लिखने में कम और बात करते बच्चों पर भाला फेंक शैली में ज्यादा लाते।

हर क्लास में एक ना एक बच्चा होता ही था, जिसे अपनी बुद्धिमत्ता का प्रदर्शन करने में विशेष महारत होती थी और ये प्रश्नपत्र थामे एक अदा से खड़े होते 'मैम आई हैव आ डाउट इन क्वैशच्यन नम्बर 11...हमें डेफिनेशन के साथ उदाहरण भी देना है क्या ? उस इंटेलिजेंट की शक्ल देख खून खौलता।

परीक्षा के बाद जाँची हुई कापियों का बंडल थामे कॉपी बाँटने क्लास की तरफ आते शिक्षक साक्षात सुनामी लगते थे।

ये वो दिन थे, जब कागज़ के एक पन्ने को छूकर खाई 'विद्या कसम' के साथ बोली गयी बात, संसार का अकाट्य सत्य, हुआ करता था।

मेरे लिए आज तक एक रहस्य अनसुलझा ही है कि खेल के पीरियड का ४० मिनिट छोटा और इतिहास का पीरियड वही ४० मिनिट लम्बा कैसे हो जाता था।

सामने की सीट पर बैठने के नुकसान थे तो कुछ फायदे भी थे। मसलन चाक खत्म हुई तो मैम के इतना कहते ही कि 'कोई भी जाओ बाजू वाली क्लास से चाक ले आना' सामने की सीट में बैठा बच्चा लपक कर क्लास के बाहर, दूसरी क्लास में ''मे आई कम इन'' कह सिंघम एंट्री करते।

'सरप्राइज़ चेकिंग' पर हम पर कापियाँ जमा करने की बिजली भी गिरती थी, सभी बच्चों को चेकिंग के लिए कॉपी टेबल पर ले जाकर रखना अनिवार्य होता था। टेबल पर रखे जा रहे कॉपियों के ऊँचे ढेर में अपनी कॉपी सबसे नीचे दबा आने पर तूफ़ान को जरा देर के लिए टाल आने की तसल्ली मिलती थी।

वो निर्दयी शिक्षक जो पीरियड खत्म होने के बाद का भी पाँच मिनिट पढ़ाकर हमारे लंच ब्रेक को छोटा कर देते थे। चंद होशियार बच्चे हर क्लास में होते हैं जो मैम के क्लास में घुसते ही याद दिलाने का सेक्रेटरी वाला काम करते थे 'मैम कल आपने होमवर्क दिया था।' जी में आता था इस आइंस्टीन की औलाद को डंडों से धुन के धर दो। तमाम शरारतों के बावजूद ये बात सौ आने सही हैं कि बरसों बाद उन शिक्षक के प्रति स्नेह और सम्मान बढ़ जाता है, अब वो किसी मोड़ पर अचानक मिल जाएं तो बचपन की तरह अब हम छिपेंगे तो कतई नहीं।आज भी जब मैं अपने विद्यालय या महाविद्यालय की बिल्डिंग के सामने से गुजरती हूँ तो लगता है कि एक दिन था जब ये बिल्डिंग मेरे जीवन का अभिन्न हिस्सा थी। अब उस बिल्डिंग में न मेरे दोस्त हैं, न हमको पढ़ाने वाले वो शिक्षक। बच्चों को लेट एंट्री से रोकने गेट बंद करते स्टाफ भी नहीं दिखते जिन्हें देखते ही हम दूर से चिल्लाते थे 'गेट बंद मत करो भैय्या प्लीज' वो बूढ़े से बाबा भी नहीं हैं जो मैम से हस्ताक्षर लेने जब जब लाल रजिस्टर के साथ हमारी क्लास में घुसते, तो बच्चों में खुशी की लहर छा जाती 'कल छुट्टी है'

अब विद्यालय के सामने से निकलने से एक टीस सी उठती है जैसे मेरी कोई बहुत अजीज चीज़ छिन गयी हो। आज भी जब उस इमारत के सामने से निकलता हूँ, तो पुरानी यादों में खो जाता हूं। बरसात में भगवान पर गुस्सा आता था कि ठीक स्कूल के समय धूप निकल जाता था और हमारे rainy day का फुल कबाड़ा हो जाता था।

स्कूल/कालेज की शिक्षा पूरी होते ही व्यवहारिकता के कठोर धरातल में, अपने उत्तरदाइत्वों को निभाते, दूसरे शहरों में रोजगार का पीछा करते, दुनियादारी से दो चार होते, जिम्मेदारियों को ढोते हमारा संपर्क उन सबसे टूट जाता है, जिनसे मिले मार्गदर्शन, स्नेह, अनुशासन, ज्ञान, ईमानदारी, परिश्रम की सीख और लगाव की असंख्य कोहिनूरी यादें किताब में दबे मोरपंख सी साथ होती है, जब चाहा खोल कर उस मखमली अहसास को छू लिया...!!

❖ भारती रमेश पिल्ले
वरि. आशुलिपिक

# हिंदी भाषा

मैं हिंदी हूँ राजभाषा हूँ
मै हूँ ज्ञान का अक्षय स्त्रोत
मेरा अस्तित्व कभी मिट नही सकता
पूर्ण विश्वास से हूँ ओत प्रोत।

षडयंत्र सभी विफल हो गए
कर नही पाए मान मर्दन
जन गण में महक रही हूँ
मै हूँ वह सुगंधित चंदन।

हिंदी के आलोचक भी
हिंदी की शक्ति को पहचान गए
मुझे अपनाने को विवश हुए
अपनी कमजोरी को जान गए।

संस्कृत में अमृत से पोषित
वैज्ञानिक है मेरा आधार
सरल सहज सरस हूँ मैं
मैने दिए है मूर्धन्य साहित्यकार।

चिरंजीवी साहित्य की जननी हूँ
एक सूत्र में शब्द बांधती हूँ
विकास की यात्रा में सहभागी
यह विनती करता चाहती हूँ।

राष्ट्र वही महान है
जिन भाषा का जहां सम्मान है
हीन भावना से उपर उठना ही
समर्थ राष्ट्र की पहचान है।

मैं हिंदी हूँ के उद्घोष से
घर घर में सभी अलख जगाएं
कश्मीर से कन्याकुमारी तक
संपर्क भाषा के रूप में हिंदी अपनाए।

हिंदी का कोई विकल्प नहीं
साधना से पाया यह रूप
उदारवादी दृष्टिकोण है मेरा
आवश्यकता अनुरूप बदलती हूँ स्वरूप

आप सभी के विशाल हृदय में
मेरा है बसेरा
आप जब तक मेरे साथ हैं
गर्व से उँचा रहेगा मस्तक मेरा।

❖हेमलता वि. साखरे
वरिष्ठ आशुलिपिक (वाणिज्य)

# राष्ट्रीय साहित्यकार सम्मेलन सम्पन्न

मॉयल लिमिटेड, अपने मैंगनीज अयस्क खनन के साथ सामाजिक दायित्व का निर्वहन भली–भांति करती है। जिसमें सामाजिक सांस्कृतिक, क्रीड़ा और साहित्यिक कार्यक्रमों में सहभागी होकर प्रतिभाओं को प्रोत्साहित एवं सम्मानित किया जाना शामिल हैं। इसी श्रृंखला में मॉयल लिमिटेड, तिरोड़ी खान में सक्रिय प्रतिष्ठित साहित्यिक संस्था ''साहित्य संगम'' विगत 21 वर्ष से मॉयल लिमिटेड के सहयोग से 'राष्ट्रीय साहित्यकार सम्मेलन' का आयोजन करती आ रही है। इस वर्ष यह आयोजन 4 मई को स्थानीय मॉयल मंगल भवन में सफलता पूर्वक मनाया गया।

प्रथम चरण में युवा कवियों को मंच प्रदान करने की दिशा में एक प्रयास कवि सम्मेलन 'दस्तक' दोपहर 12 बजे से 4 बजे तक सम्पन्न हुआ जिसमें मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र और छत्तीसगढ़ के 20 कवियों ने शानदार काव्य पाठ किया। उन्हें स्मृति चिन्ह भेंट कर मंचीय मार्ग दर्शन वरिष्ठ कवियों द्वारा दिया गया।

अपराह्न 5 बजे पुस्तक प्रदर्शनी का शुभारंभ किया गया जिसमें संघ प्रकाशित साहित्यिक कृतियां प्रदर्शित एवं युवाओं को वितरित की गई। तत् पश्चात सायंकाल 7 बजे देश के विभिन्न अंचलों से पधारे साहित्यकारों, नगर के वरिष्ठ नागरिकों, प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को उपाधि, सम्मान के साथ शाल श्रीफल एवं सम्मान पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस सम्मान समारोह की अध्यक्षता साहित्य संगम के संरक्षक खान प्रबंधक श्री मनीष ढोके ने की तथा अतिथि सरपंच ग्राम पंचायत श्रीमती फौजिया खान, मॉयल कामगार संगठन के कार्याध्यक्ष मुकुंदा जाभूलकर एवं वरिष्ठ साहित्यकार प्रोफेसर ओमपाल सिंह निडर, कार्मिक प्रबंधक आशीष सिंह उपस्थित थे। साथ ही संचालन किया दिनेश कनोजे देहाती ने।

अंत में रात्रि 9 बजे से अखिल भारतीय कवि सम्मेलन में कवि संतोष सागर विदिशा, ओमपाल सिंह निडर फिरोजाबाद, पंकज जोशी देवास, डॉ बीना सिंह रागी भिलाई, डॉ अशोक आजाद भोपाल, डॉ लीना सिंह परिहार सागर, विजय बघेले तुमसर, मंजूश्री पुष्प नागपुर, कुशल जैन बालाघाट, अंतु झक्कास वारासिवनी और मदन तन्हाई इटारसी थे। संयोजन दिनेश कनोजे देहाती, अध्यक्ष साहित्य संगम के साथ व्यवस्था में अखिलेश कुमार, हुबलाल जेठूमल, देवकी देवांगन, मातेश्वरी पटले, किशोर टेंभूरकर, कु साक्षी मेश्राम, विकास सनोडिया एवं अविनाश देशमुख ने अथक परिश्रम किया।

# चंदा मामा दूर के

चंद्रयान, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) द्वारा चंद्रमा के प्राकृतिक उपग्रह पर मानव अध्ययन के लिए भेजा गया अंतरिक्ष मिशन है। विज्ञान और तकनीक का क्षेत्र इंसानों को सदैव अद्भुत सफर में ले जाता रहा है, यह चुनौतिपूर्ण और रोमांचक सफर नहीं बल्कि इंसान की अजेय उत्कृतक्ष्ता की प्रतीक है। यह मिशन भारत के अंतरिक्ष यातायात क्षेत्र में महत्वेपूर्ण हो गया है और इसका इतिहास भारतीय अंतरिक्ष यातायात के क्षेत्र में एक महत्वयपूर्ण मील का पत्थर है। इस अध्ययन के लिए बनाया गया एक अंतरिक्ष मिशन है। चंद्रयान.1, चंद्रयान. 2 एवं चंद्रयान. 3 इन तीनों मिशनों के तहत किए गए हैं।

**चंद्रयान.1 :** भारत का पहला चंद्रयान मिशन थाए जो 22 अक्टुबर 2008 को चांद पर सफलतापूर्वे लैंड किया गया। इस मिशन के जरिए चंद्रयान.1 ने चंद्रमा की सतह की जांच की और विज्ञानिक डेटा जुटाया। यह मिशन भारत के अंतरिक्ष यातायात क्षेत्र में एक प्रयाास की शुरूआत थी और इसके बाद भारत ने चंद्रयान. 2 के माध्य म से और भी बडे मिशन की शुरूआत की।

**चंद्रयान. 2** भारत का दूसरा चंद्रयान मिशन 22 जुलाई 2019 को लॉन्च किया गया था। इस मिशन का मुख्य उद्देश्य था चंद्रमा की दक्षिण पोल पर लैंड करना और वहॉं से वैज्ञानिक डेटा जुटाना। हालांकि लैंडर 'विक्रम' की लैंडिग में कुछ समस्याएं आई और मिशन सफल नहीं हो सका लेकिन ऑर्बिटर ने चंद्रमा की ओर अच्छी तरह से संचालन किया है और उपयोगी डेटा भेजा है।

## भारत की गर्वगाथा की उर्जावान कहानी

**चंद्रयान.3** भारत के अंतरिक्ष मिशन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसके सफलता का संदेश हमारे विज्ञान और प्रोद्योगिकी क्षमता को और उंचाईयों तक ले जाने के रूप में हमें प्रेरित करता है। चंद्रयान. 3 का मुख्यल उदेश्यं चंद्रमा पर गाडी भेजना थाए जिससे भारत अंतरिक्ष गर्व के साथ अपने प्रतिष्ठान को और बढा सकता था।

सफलता की ओर बढते कदम हम चंद्रयान. 3 के इन महत्वपूर्ण पहलुओं के बारे में बात कर सकते है:

**प्रौद्योगिकी की उन्नति :** चंद्रयान-3 की सफलता सिद्ध करता है कि भारत अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में अपनी माहिरता को दिखा रहा है। इस मिशन की विशेषता उद्यतन अंतरिक्ष गाडियों के बारे में और भी साक्षरता प्रदान की है।

**जागरूकता और शिक्षा :** चंद्रयान. 3 के माध्यम से भारत सारे दुनिया को अंतरिक्ष अनुसंधान के महत्वन के प्रति जागरूक कर रहा है। इससे युवाओं को अंतरिक्ष अनुसंधान में रूचि और प्रेरणा मिल रही है।

**वैश्विक यात्रा :** चंद्रयान. 3 की सफलता ने भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम के भविष्य को भी बनाया है। यह दिखाता है कि भारत अंतरिक्ष में और भी महत्वअपूर्ण मिशन के लिए तैयार है और सफलता हासिल करने की क्षमता रखता है। इस प्रकार, चंद्रयान. 3 के सफल मिशन ने भारत के अंतरिक्ष अनुसंधान क्षेत्र में एक नई उंचाइयों को छूने में सफलता प्राप्तद की है। यह एक ऐतिहासिक क्षण है जो हमें यह याद दिलाता है कि संघर्षए संघर्षशीलता और आत्मविश्वास के साथ हम किसी भी मिशन को साक्षरता तक पहुँचा जा सकता है।

❖ संदीप देवांगन
सहायक सह टंकक

# शिक्षा एवं राजनीति में युवाओं की भागीदारी

युवाओं का भविष्य हमारे समाज और देश के विकास के लिए महत्वपूर्ण है। युवा शक्तिए शिक्षा और राजनीति के क्षेत्र में अपनी भागीदारी के माध्यम से सकारात्मक परिवर्तन ला सकती है।

### युवाओं की भागीदारी और शिक्षा

शिक्षा है ज्ञान का खजानारुशिक्षा व्यक्तिगत और सामाजिक विकास के लिए आवश्यक है। युवा पीढ़ियों को शिक्षा के क्षेत्र में अपनी भागीदारी से शिक्षा के स्तर को उन्नत करने में मदद करनी चाहिए।

शिक्षा के लिए उपलब्धियों का बढ़ता सही उपयोग: युवाओं को शिक्षा के लिए उपलब्धियों का सही रूप से उपयोग करने में मदद करना चाहिए, जैसे कि स्वयंसेवाए शिक्षा के लिए संसाधनों का संग्रहण और शिक्षा में नए और विनोदी तरीकों का समर्थन करना।

शिक्षा के प्रति जागरूकता : युवाओं को शिक्षा के महत्व को समझने और दूसरों को भी शिक्षा के प्रति जागरूक करने के लिए समर्थ बनाना चाहिए।

शिक्षा संवाद में भागीदारी : युवाओं को शिक्षा नीति और प्रक्रिया के विकल्पों को समझने में भागीदारी करनी चाहिए। उन्हें शिक्षा संवाद में अपने दृष्किोण को साझा करने और नीतिकरण में सहयोग करने का मौका मिलना चाहिए।

### युवाओं की भागीदारी और राजनीति

मतदान की भागीदारी युवाओं को चुनावों में भाग लेने की भागीदारी को प्रोत्साहित करना चाहिए। उन्हें अपने मताधिकार का सही रूप से उपयोग करने की प्रेरणा देनी चाहिए।

### युवा नेतृत्व की प्रोत्साहना

युवा नेताओं को राजनीति में भागीदारी करने का मौका देना चाहिए। उन्हें नेतृत्व कौशलों को विकसित करने और समस्याओं के समाधान के लिए उन्हें समर्थ बनाना चाहिए।

### युवाओं के मुद्दों के प्रति संवाद

युवा पीढ़ियों के मुद्दों के प्रति सरकार और राजनीतिज्ञों के साथ संवाद को प्रोत्साहित करना चाहिए। युवाओं की दिलचस्पी और विचारों को समझने का प्रयास करना चाहिए।

### समापन

युवाओं की भागीदारी शिक्षा और राजनीति के क्षेत्र में महत्वपूर्ण है। उन्हें अपनी जिम्मेदारियों के साथ शिक्षा को सुधारने और राजनीति में नए और सकारात्मक परिवर्तन लाने का मौका मिलना चाहिए। शिक्षा और राजनीति के क्षेत्र में युवाओं की भागीदारी देश के सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए एक महत्वपूर्ण योगदान की ओर कदम बढ़ा सकती है।

❖अफरोज अख्तर
सहायक सह टंकक (का.एवं प्र.)

# नई पीढ़ियों पर मोबाईल का प्रभाव एवं दुष्प्रभाव

मोबाइल फोन ने आज की नई पीढ़ियों पर गहरा प्रभाव डाल दिया है। यह तकनीकी उपकरण हमारे जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है और खासकर युवा पीढ़ियों के लिए यह एक महत्वपूर्ण और आवश्यक उपकरण बन गया है। हालांकि मोबाइल फोनों के उपयोग के कई फायदे हैं, वे नकारात्मक प्रभावों के भी रूप में आ सकते हैं।

## मोबाइल के सकारात्मक प्रभाव

**शिक्षा :** मोबाइल फोनों के माध्यम से युवा पीढ़ियों को विशेषज्ञताए शिक्षा सामग्री और अन्य शिक्षा संसाधनों का उपयोग करने का मौका मिलता है।

**कनेक्टेड होना :** मोबाइल फोन युवाओं को उनके साथी और दुनिया के साथ जुड़ने का मौका देता है, जिससे वे सोशल नेटवर्किंग, सामाजिक संवाद और विचार-विमर्श कर सकते हैं।

मीडिया एक्सेस : मोबाइल फोन के माध्यम से वीडियो, ऑडियो, और अन्य माध्यमों का आसान पहुंच मिलता है, जिससे क्रिएटिविटी को प्रोत्साहित किया जा सकता है।

**कैरियर विकल्प :** आज की नई पीढि अपने मोबाईल फोन के माध्यम से ऑनलाईन जॉब

खोज सकते हे और अपने कैरियर को नया मोड दे सकते है।

## मोबाइल के नकारात्मक प्रभाव

**स्वास्थ्य समस्याएं :** अधिक मोबाइल फोन का उपयोग करने से लोग नकारात्मक स्वास्थ्य प्रभावों का शिकार हो सकते हैंए जैसे कि नींद की कमी, आँखों की परेशानी, और बढ़ती हुई तनाव।

**शिक्षा के लिए दुर्गमन :** अधिक मोबाइल उपयोग से युवाओं की पढ़ाई और शिक्षा पर असर पड़ सकता है, क्योंकि ये उनके लिए अधिक दिलचस्प और मनोरंजन विकल्पों के लिए बहेतर साधन हो सकते हैं।

**गंभीर सुरक्षा समस्याएं :** ऑनलाइन दुनिया में कैबिन के रूप में वृद्धि के साथ, युवाओं को साइबर बुलिंग, फिशिंग, और अन्य सुरक्षा समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।

**समय गवाना :** बिना सीमा मोबाइल फोन का उपयोग करने के कारण, युवा लोग अकेले समय में होने वाले अन्य गतिविधियों का कितना समय गवा देते हैं, यह देखा जा सकता है।

**सोशल मीडिया की आदत :** सोशल मीडिया का अत्यधिक उपयोग युवाओं को दिमागी परेशानियों, सामाजिक संबंधों की समस्याओं और आत्मसंवाद की कमी का सामना करना पड सकता है। मोबाइल फोनों के साथ आने वाले इन पॉजिटिव और नकारात्मक प्रभावों के बावजूद, ये उपकरण हमारे जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गए हैं और उन्हें सावधानीपूर्वक और युवाओं के लिए साहित्यपूर्ण रूप में उपयोग करने का तरीका सिखाना चाहिए। यह महत्वपूर्ण है कि हम युवाओं को सही उपयोग और सीमाएँ स्थापित करने के लिए मोबाइल फोनों का सवाल करें ताकि वे इन्हें सही तरीके से उपयोग कर सकें।

❖ संकटराम ब्रम्हवंशी
प्रशिक्षु सहा. सह हिंदी अनुवादक

# अधिष्ठान

''अधिष्ठान'' का मतलब होता है कार्य में अत्यधिक दबाव या बोझ, जिसका परिणाम स्वास्थ्य समस्याएं और मानसिक तनाव हो सकता है। यह अक्सर काम के अधिक आवश्यकताओं, अनिवार्य डेडलाइनों, और अधिक काम के दबाव के कारण हो सकता है।

''अधिष्ठान'' ; को अंग्रेजी में Overwork या Workaholism के रूप में भी जाना जा सकता है। तनाव के इस प्रकार के कारण से ग्रस्त कर्मचारी के स्वास्थ्य और कार्य प्रदर्शन पर बुरा असर पड़ सकता है, इसलिए ऐसे स्थितियों को समय पर पहचानना और समझना महत्वपूर्ण होता है।

कॉर्पोरेट कंपनियों में तनाव की समस्या कार्यसंचालन और कर्मचारियों के लिए सामान्य मुद्दा होती है। यह समस्या कई कारणों से हो सकती है और इसके परिणामस्वरूप कंपनी के कार्यक्षेत्र में नकारात्मक प्रभाव पैदा कर सकती है। तनाव किसी भी कामकाज में परिस्थितियों के संघटन के कारण हो सकता है, और यह एक कंपनी के संगठन, कर्मचारियों, और उत्पादकता पर बुरा प्रभाव डाल सकता है। तनाव की समस्या को समझने और उसे प्रबंधन करने के लिए कुछ महत्वपूर्ण कारण एवं उपाय निम्नलिखित हैं:

## तनाव की प्रमुख कारण

**काम की बाधाएं :** कामकाज में अधिक दबाव का होना, आवश्यक समय और संसाधनों की कमी, और कार्यकर्ताओं के बीच मुद्दे काम के दबाव को बढ़ा सकते हैं।

**संगठनात्मक परिस्थितियाँ :** कंपनी की आंतरिक या बाहरी समस्याएं, जैसे कि वित्तीय संकट, संगठन की बदलाव, और नेतृत्व में दबाव, तनाव को बढ़ा सकती हैं।

**कार्य की अधिकता :** कई कंपनियों में कर्मचारीगण को बढ़ती कार्य की अधिकता से जूझना पड़ता है, जिससे वे थक जाते हैं और तनाव में पड़ सकते हैं।

**अपातकालीन निर्णयों का दबाव :** अकसर कंपनियों में अपातकालीन निर्णयों के लिए कर्मचारियों को दबाव डाला जाता है, जो उनके मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है।

**कॉरपोरेट संप्रेषण :** अक्सर कर्मचारियों के बीच कॉरपोरेट संप्रेषण की वजह से तनाव बढ़ जाता है, क्योंकि वे नकारात्मक प्रतिक्रिया और अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति की अनुमति नहीं देते।

**कार्य दबाव :** कार्य के दबाव के कारण कर्मचारियों में तनाव हो सकता है। अत्यधिक काम, अकेले काम करना, या समय सीमा के कारण तनाव बढ़ सकता है।

**संगठन में बदलाव :** अचानक से संगठन में परिवर्तन, जैसे कि अधिकारियों का परिवर्तन से तनाव का कारण बन सकते हैं।

**न्यूनतम समर्थन:** कर्मचारियों को उनके कार्य के लिए चाहिए सहायता और संवाद का न्यूनतम समर्थन मिलने पर भी तनाव बढ़ सकता है।

**कर्मचारियों के बीच संघर्ष :** कर्मचारियों के बीच टकराव और विवाद तनाव की समस्याओं का कारण बन सकते हैं।

**अधिक काम की अपेक्षा :** कर्मचारी के पास उसके कार्य के लिए

काफी समय और संसाधन नहीं होने पर तनाव बढ़ सकता है।

**स्वास्थ्य समस्याएँ :** तनाव का अधिक होना कर्मचारियों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डाल सकता है, जैसे कि डिप्रेशन, उच्च रक्तचाप, और अन्य दिल के रोग।

**कार्य प्रदर्शन में कमी :** तनाव के कारण कर्मचारी कार्य प्रदर्शन में कमी कर सकते हैं, जिससे कंपनी को नुकसान हो सकता है।

**पद त्यागना :** अधिक तनाव के कारण कर्मचारी अपनी नौकरी छोड़ सकते हैं, जिससे कंपनी को नुकसान हो सकता है।

**उत्कृष्ट विचारशीलता में कमी :** तनाव के कारण कर्मचारी उत्कृष्ट विचारशीलता और सोचने की क्षमता में कमी कर सकते हैं।

## उपाय

**संवाद और सहयोग :** कंपनी को कर्मचारियों के साथ खुले और सहयोगपूर्ण संवाद को प्रोत्साहित करना चाहिए।

**काम के दबाव को कम करें:** कंपनी को कर्मचारियों के प्रदर्शन को सुधारने के लिए समय और संसाधन प्रदान करने की आवश्यकता है।

**काम का संतुलन प्रोत्साहित करें:** कंपनी को कर्मचारियों के लिए समय और जीवनस्तर का संतुलन बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए।

**मानसिक स्वास्थ्य समर्थन प्रदान करें:** कंपनी को कर्मचारियों के मानसिक स्वास्थ्य को समर्थन देने के लिए संवाद कार्यक्रम और सेवाएं प्रदान करना चाहिए।

**समय प्रबंधन:** कार्य-जीवन संतुलन को बढ़ावा देने के लिए समय प्रबंधन कौशल सिखाना चाहिए।

स्वास्थ्य और जीवन का संतुलन: कर्मचारियों के लिए स्वास्थ्य और जीवन का संतुलन की देखभाल को प्राथमिकता देनी चाहिए।

**प्रशासनिक परिवर्तन:** कंपनी को संगठन और प्रशासन में सुधार करने की जरूरत हो सकती है ताकि कर्मचारियों को अधिक समर्थन और सुविधा मिले।

**शिक्षा और प्रशिक्षण :** कर्मचारियों को स्वास्थ्य और तनाव प्रबंधन के लिए शिक्षा और प्रशिक्षण प्रदान करना चाहिए।

कॉर्पोरेट कंपनियों में तनाव की समस्या को समझने और समाधान करने के लिए, कंपनी के प्रबंधन और कर्मचारी दोनों का सहयोग आवश्यक होता है। संवाद, समर्थन, और सहयोग से तनाव को कम करने में मदद मिल सकती है और कंपनी की सफलता को बनाए रखने में मदद कर सकती है।

❖ सुखराम ब्रम्हे
भंडार सह सामग्री सहायक

विनम्रता का महत्व

# गरीब आदमी और उसकी दयालुता

एक समय की बात है, एक गाँव में राघव नाम का एक गरीब आदमी रहता था। चूँकि वह बहुत गरीब थे, उसने कभी किसी और से शादी करने के बारे में नहीं सोचा क्योंकि वह किसी अन्य व्यक्ति की जिम्मेदारी नहीं उठा पाएगा। भले ही राघव गरीब था, फिर भी वह बहुत दयालु और विनम्र था। उन्होंने हर एक काम पूरे दिल से किया और कभी भी अपने वेतन के लिए बहस नहीं की। यही कारण था कि राघव को हमेशा काम मिलता था क्योंकि लोग चाहते थे कि एक ईमानदार आदमी उनके लिए काम करे। राघव कपड़े धोता, लोगों के लिए लकडी लाता और जानवरों को नहलाता। राघव हर दिन घर जाने से पहले एक मंदिर के पास तालाब में स्नान करता था।

## भगवान को भोज

एक दिन राघव अपना सारा काम खत्म करने के बाद तालाब में नहा रहा था। इसके बाद उन्होंने मंदिर जाने का फैसला किया, लेकिन जब वहां गया तो उसने एक बहुत ही अनोखी चीज देखी। उसे ऐसा लग रहा था कि भगवान बहुत थक गए हैं क्योंकि अगरबत्तियों की गंध और गले में मालाओं के बोझ से वह असहज हो रहे थे। इसलिए,वह भगवान की सेवा करना चाहता था। वह मूर्ति के पास गया और हाथ जोड़कर बोला, भगवान,आप बहुत थके हुए और उदास लग रहे हैं। कृपया मेरे घर आएँ ताकि मैं आपको कुछ भोजन परोस सकूँ। यदि आप मेरे घर पर भोजन करेंगे तो यह मेरा सम्मान होगा।

भगवान यह सब देख रहे थे और भोले व्यक्ति की विनती से बहुत प्रसन्न हुए। भगवान ने उत्तर दिया, 'घर जाओ और कुछ भोजन तैयार करो और जब यह बन जाए तो मुझे बुलाओ। मैं तब तुम्हारे घर भोजन करने आऊँगा । " इसलिए " राघव घर गया और भगवान के लिए एक स्वादिष्ट दावत तैयार की। जब भोजन तैयार हो गया तो वह भगवान को निमंत्रण देने के लिए मंदिर की ओर निकल पड़ा।

## परीक्षा

रास्ते में राघव को एक बूढ़ा आदमी मिला जो भूखा लग रहा था। बूढ़े व्यक्ति ने राघव से कुछ खाने के लिए पूछा। विनम्र राघव बूढ़े व्यक्ति को अपने स्थान पर ले गया और उसे खाने के लिए भोजन दिया। इसके बाद वह फिर भगवान को निमंत्रण देने मंदिर गये'' रास्ते में राघव को एक बूढ़ी औरत दिखी जिसने भी उससे कुछ खाने के लिए कहा। राघव ने महिला को अपने घर वापस बुलाया और उसे खाना खिलाया। इस बार जब वह भगवान को निमंत्रण देने के लिए बाहर गया तो एक छोटा लड़का उसके पास आया और कुछ खाने को मांगा। वह लड़के को अपने घर ले गया और उसे बचा हुआ खाना दिया। लड़के ने उसे बताया कि वह एक अनाथ है और उसे अपना पेट भरने के लिए भीख माँगनी पड़ती है।

राघव को बहुत बुरा लगा और उसने लड़के से कहा कि वह हर दिन उसके घर आए और वह उसे खाने के लिए खाना देगा। इसके बाद वह मन्दिर गये और भगवान को भोजन के लिये आमंत्रित किया। भगवान ने कहा, 'तुम मुझे पहले ही भोजन दे चुके हो। जब आपने उन लोगों की मदद की तो मैंने भी खाना खाया'' मैं आप के साथ बहुत खुश हूं।'' लेकिन राघव ने जिद की कि भगवान उसके घर आएं और खाना खाएं। तो, भगवान राघव के घर आए और चूंकि कोई भोजन नहीं बचा था, इसलिए राघव ने भगवान को कुछ फल दिए। बदले में, भगवान ने उन्हें सुखी जीवन का आशीर्वाद दिया।

## ईर्ष्यालु

राघव के साथ जो हुआ उसे देखकर गाँव के जमींदार को बहुत ईर्ष्या हुई। वह चाहता था कि भगवान उसके घर भी आएं। इसलिए, उन्होंने भगवान को दावत के लिए आमंत्रित किया। भगवान ने उससे भोजन तैयार करने और उसे खाने के लिए बुलाने को कहा। जमींदार ने वैसा ही किया और भगवान को निमंत्रण देने मन्दिर जाने लगा। रास्ते मेंए बूढ़ा आदमी, औरत और जवान लड़का मकान मालिक के पास पहुंचे लेकिन उसने उन्हें भगा दिया। जब वह मन्दिर में गया तो भगवान ने उससे कहा कि वह ही इन लोगों के रूप में जमींदार के पास गया था। जमींदार ने अंततः सबक सीखा और हमेशा लोगों के प्रति दयालु रहा। कहानी का सार यह है कि विनम्रता का हमेशा प्रतिफल मिलता है। विनम्र होने की कहानियाँ पढ़कर बच्चे बहुत कुछ सीख सकते हैं। वे सीखेंगे कि हमें हमेशा दूसरों की मदद करनी चाहिए और उनके प्रति दयालु होना चाहिए। माता-पिता अपने बच्चों को विनम्रताए दयालुता और अन्य कहानियों को पढ़कर उनमें अच्छे गुण पैदा कर सकते हैं।

❖योगेश करमरकर
सहायक सह टंकक (का.एवप्र.)

# सबसे अनमोल तोहफा

रेलवे स्टेशन पर साइड मे लेटी हुई महिला दर्द से कराह रही थी। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि उसे कोई भारी पीड़ा हो रही है। अन्य यात्रियों की भाँति मैनें भी उसे नजर अंदाज कर दिया। मेरे साथ में मेरा आठ वर्ष का बेटा अंश भी था। वह उस बुढ़िया के दर्द को दिल से महसूस करके उसकी ओर टकटकी लगाकर देख रहा था।

'पापा ये बुढ़िया क्यों चिल्ला रही है इसे क्या परेशानी है '' अंश ने मुझसे पूछा और तब मैने जवाब दिया। 'बेटा इसे कही दर्द हो रहा होगा या फिर इसे कोई अन्य परेशनी होगी। पापा गाड़ी तो एक घंटा लेट है''अंश फिर बोला और मैने हाँ मे जवाब दिया।''

यह तो बहुत कमजोर हो गई है। बेचारी दर्द से कितना कराह रही है। पापा क्यों न इसे हम दवाई दिला दें।'' अंश ने जब मुझे ये कहा तो मैने उसे समझाते हुए कहा, 'बेटा हम इसे दवाई क्यों दिलायें जब हम तो इसे जानते तक नही है और देखो कितनी गन्दी है। लगता है कई दिनो से नहाई भी नही है, कोई देखेगा तो हमारा मजाक बनायेगा। ''पापा आप ही तो कहते थें कि गरीबों और असहायों की जो मदद करता है तो भगवान उस पर सदा मेहरबान रहते हैं। इसलिए हमेशा दूसरों की सहायता के लिए अग्रसर रहना चाहिए और आज आप कह रहे है कि कोई देखेगा तो क्या कहेगा, हमारा मजाक बनायेगा मेरी समझ से दूसरों की सहायता करने पर हमारा मजाक कोई नही बनायेगा। अगर पापा कोई बनाता है तो बनानें दो। हमें अपने कार्य पर ध्यान देना चाहिए। ऐसा आप और माँ दोनो लोग कहते थे। परन्तु आज आप...

''अंश ने मुझे उल्टा समझाते हुए कहा तब मैने फिर उसे समझाकर बताया कि बेटा वह नाटक कर रही है इसे कहीं दर्द नही हो रहा है। मै ऐसी औरतो को भलि–भाँति जानता हूँ''पापा यह नाटक नही कर रही है मै जाकर देखता हूँ'' इतना कहकर अंश दौड़कर बुढ़िया के पास जाकर फिर बोला ''पापा जल्दी आओं देखों इन्हें कितनी तेज बुखार है'' मैनें जानबूझ कर उसके बुलाने की आवाज को अनसुना कर दिया। परन्तु अंश के बार–बार बुलाने पर मै उसके पास गया और देखा कि बुढ़िया काफी गन्दी है और बुखार की तपन से कराह रही है।

''पापा चलों इन्हे दवाई दिला कर आते है।'' अंश ने फिर मुझसे एक उम्मीद भरी नजर से देखकर कहा। मैने भी आवेश मे आकर कह दिया चलों चलते हैं''मेरा इतना कहने पर अंश के चेहरे पर खुशी की झलक दिखाई देने लगी थी जो कि कुछ क्षण पहले अदृष्य थी। यह देख मेरे दिल मे उस असहाय महिला की मदद करने के लिए दिल मे श्रद्धा और प्रेम–भाव जागृत होने लगा था। पास के दवा घर से हमने उस बुढ़िया को दवा दिलाई । कुछ देर बाद उस बुढ़िया को जब कुछ राहत मिली तब बुढ़िया हमें दुवाओं की पोटली देती जा रही थी ''भगवान तुम्हारा भला करें, तुम दोनों सदा सुखी रहो, तुम्हारा घर सदा धन.धान्य से भरा रहें, भगवान तुम्हारे जैसे बच्चे हर माँ को दे।'' उस बूढ़ी औरत के इन शब्दो ने मुझ पर बाणों का कार्य किया और मेरे अन्दर बैठे असुर को मार भगाया।

उसकी मदद करने का मुझे अंश व खुद पर फख़्र महसूस हो रहा था। साथ ही असहायों की मदद करने की भावना मेरे अन्दर जागृत हो चुकी थी। जब हम रेलवे स्टेशन पर पहुचे तो वहाँ पर उपस्थित यात्रियों ने भी हम दोनों को दुवाओं की गठरी देना शुरू कर दिया। ''आप दोनों उस महिला के लिए फरिश्ता हो, आपके बेटे की तारीफ जितनी की जाये उतनी कम है, ये आपके ही संस्कार है जो आपके बेटे द्वारा उस असहाय महिला व यहॉं पर उपस्थित हर यात्री को प्राप्त हुए हैं। भगवान आपको हमेश खुश रखे।'' ये वाक्य थे वहॉं पर उपस्थित यात्रियों के, कुछ यात्री कह रहे थे कि हमे इस बालक से सीख लेनी चाहिए। यह बालक समाज के लिए भगवान की एक महत्वपूर्ण देन है। यह सब सुनकर मेरा दिल खुशी से गदगद हो रहा था। आज मै बहुत खुश था कि उपर वाले ने मुझे मेरे बेटे द्वारा व बेटे के रूप मे कितना अनमोल तोहफा दिया है जिसकी मैने कभी कल्पना भी नही की थी। यह सोचते–सोचते मैने अपने बेटे को सीने से लगा लिया और कहा 'थैंक्स बेटा' इतना सुनकर अंश मेरे सीने से चिपक जाता है और 'आई लव यू पापा' 'आई लव यू बेटा' मैनें भी पलट कर जवाब दिया ।

❖अनिता लाडगे
कनि. कार्या. अधिक्षक

# अनाथ लड़की

सेठ पुरुषोत्तमदास पूना की सरस्वती पाठशाला का मुआयना करने के बाद बाहर निकले तो एक लड़की ने दौड़कर उनका दामन पकड़ लिया। सेठ जी रुक गये और मुहब्बत से उसकी तरफ देखकर पूछा 'क्या नाम है' लड़की ने जवाब दिया 'रोहिणी।'

सेठजी ने उसे गोद में उठा लिया और बोले 'तुम्हें कुछ इनाम मिला? लड़की ने उनकी तरफ बच्चों जैसी गंभीरता से देखकर कहा तुम चले जाते हो, मुझे रोना आता है, मुझे भी साथ लेते चलो। सेठजी ने हँसकर कहा मुझे बड़ी दूर जाना है, तुम कैसे चालोगी?

रोहिणी ने प्यार से उनकी गर्दन में हाथ डाल दिये और बोली 'जहाँ तुम जाओगे वहीं मैं भी चलूँगी। मैं तुम्हारी बेटी हूँगी। मदरसे के अफसर ने आगे बढ़कर कहा 'इसका बाप साल भर हुआ नही रहा। माँ कपड़े सीती है, बड़ी मुश्किल से गुजर होती है। सेठ जी के स्वभाव में करुणा बहुत थी। यह सुनकर उनकी आँखें भर आयीं। उस भोली प्रार्थना में वह दर्द था जो पत्थर-से दिल को पिघला सकता है। बेकसी और यतीमी को इससे ज्यादा दर्दनाक ढंग से जाहिर करना नामुमकिन था। उन्होंने सोचा 'इस नन्हें से दिल में न जाने क्या अरमान होंगे। और लड़कियाँ अपने खिलौने दिखाकर कहती होंगी, यह मेरे बाप ने दिया है। वह अपने बाप के साथ मदरसे आती होंगी, उसके साथ मेलों में जाती होंगी और उनकी दिलचस्पियों का जिक्र करती होंगी। यह सब बातें सुन-सुनकर इस भोली लड़की को भी ख्वाहिश होती होगी कि मेरे बाप होता। माँ की मुहब्बत में गहराई और आत्मिकता होती है जिसे बच्चे समझ नहीं सकते। बाप की मुहब्बत में खुशी और चाव होता है जिसे बच्चे खूब समझते हैं।

सेठ जी ने रोहिणी को प्यार से गले लगा लिया और बोले अच्छा, मैं तुम्हें अपनी बेटी बनाऊँगा। लेकिन खूब जी लगाकर पढ़ना। अब छुट्टी का वक्त आ गया है, मेरे साथ आओ, तुम्हारे घर पहुँचा दूँ। यह कहकर उन्होंने रोहिणी को अपनी मोटरकार में बिठा लिया। रोहिणी ने बड़े इत्मीनान और गर्व से अपनी सहेलियों की तरफ देखा। उसकी बड़ी-बड़ी आँखें खुशी से चमक रही थीं और चेहरा चाँदनी रात की तरह खिला हुआ था।

सेठ ने रोहिणी को बाजार की खूब सैर करायी और कुछ उसकी पसन्द से कुछ अपनी पसन्द से बहुतसी चीजें खरीदीं, यहाँ तक कि रोहिणी बातें करते-करते कुछ थक.सी गयी और खामोश हो गई। उसने इतनी चीजें देखीं और इतनी बातें सुनीं कि उसका जी भर गया। शाम होत-.होते रोहिणी के घर पहुँचे और मोटरकार से उतरकर रोहिणी को अब कुछ आराम मिला। दरवाजा बन्द था। उसकी माँ किसी ग्राहक के घर कपड़े देने गयी थी। रोहिणी ने अपने तोहफों को उलटना-पलटना शुरू किया 'खूबसूरत रबड़ के खिलौने, चीनी की गुड़िया जरा दबाने से चूँ-चूँ करने लगतीं और रोहिणी यह प्यारा संगीत सुनकर फूली न समाती थी। रेशमी कपड़े और रंग- बिरंगी साड़ियों की कई बण्डल थे लेकिन मखमली बूटे की गुलकारियों ने उसे खूब लुभाया था। उसे उन चीजों के पाने की जितनी खुशी थी, उससे ज्यादा उन्हें अपनी सहेलियों को दिखाने की बेचैनी थी। सुन्दरी के जूते अच्छे सही लेकिन उनमें ऐसे फूल कहाँ हैं। ऐसी गुड़िया उसने कभी देखी भी न होंगी। इन खयालों से उसके दिल में उमंग भर आयी और वह अपनी मोहिनी आवाज में एक गीत गाने लगी। सेठ जी दरवाजे पर खड़े इन पवित्र दृश्य का हार्दिक आनन्द उठा रहे थे। इतने में रोहिणी की माँ रुक्मिणी कपड़ों की एक पोटली लिये हुए आती दिखायी दी। रोहिणी ने खुशी से पागल होकर एक छलाँग भरी और उसके पैरों से लिपट गयी। रुक्मिणी का चेहरा पीला था, आँखों में हसरत और बेकसी छिपी हुई थी, गुप्त चिंता का सजीव चित्र मालूम होती थी, जिसके लिए जिंदगी में कोई सहारा नहीं। मगर रोहिणी को जब उसने गोद में उठाकर प्यार से चूमा मो जरा देर के लिए उसकी आँखों में उन्मीद और जिंदगी की झलक दिखायी दी। मुरझाया हुआ फूल खिल गया। बोली 'आज तू इतनी देर तक कहाँ रही, मैं तुझे ढूँढ़ने पाठशाला गयी थी। रोहिणी ने हुमककर कहा मैं मोटरकार पर बैठकर बाजार गयी थी। वहाँ से बहुत अच्छी-अच्छी चीजें लायी हूँ। वह देखो कौन खड़ा है? माँ ने सेठ जी की तरफ ताका और लजाकर सिर झुका लिया। बरामदे में पहुँचते ही रोहिणी माँ की गोद से उतरकर सेठजी के पास गयी और अपनी माँ को यकीन दिलाने के लिए भोलेपन से बोली 'क्यों, तुम मेरे बाप हो न? सेठ जी ने उसे प्यार करके कहा 'हाँ, तुम मेरी प्यारी बेटी हो। रोहिणी ने उनसे मुंह की तरफ याचनाभरी आँखों से देखकर कहा 'अब तुम रोज यहीं रहा करोगे? सेठ जी ने उसके बाल सुलझाकर जवाब दिया 'मैं यहाँ रहूँगा तो काम कौन करेगा' मैं कभी-कभी तुम्हें देखने आया करूँगा, लेकिन वहाँ से तुम्हारे लिए अच्छी-अच्छी चीजें भेजूँगा।

रोहिणी कुछ उदास सी हो गयी। इतने में उसकी माँ ने मकान का दरवाजा खोला ओर बड़ी फुर्ती से मैले बिछावन और फटे हुए कपड़े समेट कर कोने में डाल दिये कि कहीं सेठ जी की निगाह उन पर न पड़ जाए। यह स्वाभिमान स्त्रियों की खास अपनी चीज है।

रुक्मिणी अब इस सोच में पड़ी थी कि मैं इनकी क्या खातिर तवाजो करूँ। उसने सेठ जी का नाम सुना था, उसका पति हमेशा उनकी बड़ाई किया करता था। वह उनकी दया और उदारता की चर्चाएँ अनेकों बार सुन चुकी थी। वह उन्हें अपने मन का देवता समझा करती थी, उसे क्या उमीद थी कि कभी उसका घर भी उसके कदमों से रोशन होगा। लेकिन आज जब वह शुभ दिन संयोग से आया तो वह इस काबिल भी नहीं कि उन्हें बैठने के लिए एक मोढ़ा दे सके। घर में पान और इलायची भी नहीं। वह अपने आँसुओं को किसी तरह न रोक सकी।

आखिर जब अंधेरा हो गया और पास के ठाकुरद्वारे से घण्टों और नगाड़ों की आवाजें आने लगीं तो उन्होंने जरा ऊँची आवाज में कहा बाईजी, अब मैं जाता हूँ। मुझे अभी यहाँ बहुत काम करना है। मेरी रोहिणी को कोई तकलीफ न हो। मुझे जब मौका मिलेगा, उसे देखने आऊँगा। उसके पालने-पोसने का काम मेरा है और मैं उसे बहुत खुशी से पूरा करूँगा। उसके लिए अब तुम कोई फिक्र मत करो। मैंने उसका वजीफा बाँध दिया है और यह उसकी पहली किस्त है।

यह कहकर उन्होंने अपना खूबसूरत बटुआ निकाला और रुक्मिणी के सामने रख दिया। गरीब औरत की आँखें में आँसू जारी थे। उसका जी बरबस चाहता था कि उसके पैरों को पकड़कर खूब रोये। आज बहुत दिनों के बाद एक सच्चे हमदर्द की आवाज उसके मन में आयी थी। जब सेठ जी चले तो उसने दोनों हाथों से प्रणाम किया। उसके ह्दय की गहराइयों से प्रार्थना निकली 'आपने एक बेबस पर दया की है, ईश्वर आपको इसका बदला दे। दूसरे दिन रोहिणी पाठशाला गई तो उसकी बाँकी सज-धज आँखों में खुबी जाती थी। उस्तानियों ने उसे बारी-बारी प्यार किया और उसकी सहेलियाँ उसकी एक-एक चीज को आश्चर्य से देखती और ललचाती थी। अच्छे कपड़ों से कुछ स्वाभिमान का अनुभव होता है। आज रोहिणी वह गरीब लड़की न रही जो दूसरों की तरफ विवश नेत्रों से देखा करती थी। आज उसकी एक-एक क्रिया से शैशवोचित गर्व और चंचलता टपकती थी और उसकी जबान एक दम के लिए भी न रुकती थी। कभी मोटर की तेजी का जिक्र था कभी बाजार की दिलचस्पियों का बयान, कभी अपनी गुड़ियों के कुशल-मंगल की चर्चा थी और कभी अपने बाप की मुहब्बत की दास्तान। दिल था कि उमंगों से भरा हुआ था।

एक महीने बाद सेठ पुरुषोत्तमदास ने रोहिणी के लिए फिर तोहफे और रुपये रवाना किये। बेचारी विधवा को उनकी कृपा से जीविका की चिन्ता से छुट्टी मिली। वह भी रोहिणी के साथ पाठशाला आती और दोनों माँ-बेटियाँ एक ही दरजे के साथ-साथ पढ़तीं, लेकिन रोहिणी का नम्बर हमेशा माँ से अव्वल रहा सेठ जी जब पूना की तरफ से निकलते तो रोहिणी को देखने जरूर आते और उनका आगमन उसकी प्रसन्नता और मनोरंजन के लिए महीनों का सामान इकट्ठा कर देता।

इसी तरह कई साल गुजर गये और रोहिणी ने जवानी के सुहाने हरे-भरे मैदान में पैर रखा, जबकि बचपन की भोली-भाली अदाओं में एक खास मतलब और इरादों का दखल हो जाता है। रोहिणी अब आन्तरिक और बाह्य सौन्दर्य में अपनी पाठशाला की नाक थी। हाव-भाव में आकर्षक गम्भीरता, बातों में गीत का.सा खिंचाव और गीत का.सा आत्मिक रस था। कपड़ों में रंगीन सादगी, आँखों में लाज-संकोच, विचारों में पवित्रता। जवानी थी मगर घमण्ड और बनावट और चंचलता से मुक्त। उसमें एक एकाग्रता थी ऊँचे इरादों से पैदा होती है। स्त्रियोचित उत्कर्ष की मंजिलें वह धीर-धीरे तय करती चली जाती थी।

सेठ जी के बड़े बेटे नरोत्तमदास कई साल तक अमेरिका और जर्मनी की युनिवर्सिटियों की खाक छानने के बाद इंजीनियरिंग विभाग में कमाल हासिल करके वापस आए थे। अमेरिका के सबसे प्रतिष्ठित कालेज में उन्होंने सम्मान का पद प्राप्त किया था। अमेरिका के अखबार एक हिन्दोस्तानी नौजवान की इस शानदार कामयाबी पर चकित थे। उन्हीं का स्वागत करने के लिए बम्बई में एक बड़ा जलसा किया गया था। इस उत्सव में शरीक होने के लिए लोग दूर-दूर से आए थे। सरस्वती पाठशाला को भी निमंत्रण मिला और रोहिणी को सेठानी जी ने विशेष रूप से आमंत्रित किया। पाठशाला में हफ्तों तैयारियाँ हुई। रोहिणी को एक दम के लिए भी चैन न था। यह पहला मौका था कि उसने अपने लिए बहुत अच्छे-अच्छे कपड़े बनवाये। रंगों के चुनाव में वह मिठास थी, काट- छाँट में वह फबन जिससे उसकी सुन्दरता चमक उठी। सेठानी कौशल्या देवी उसे लेने के लिए रेलवे स्टेशन पर मौजूद थीं। रोहिणी गाड़ी से उतरते ही उनके पैरों की तरफ झुकी लेकिन उन्होंने उसे छाती से लगा लिया और इस तरह प्यार किया कि जैसे वह उनकी बेटी है। वह उसे बार-बार देखती थीं और आँखों से गर्व और प्रेम टपक पड़ता था।

इस जलसे के लिए ठीक समुन्दर के किनारे एक हरे-भरे सुहाने मैदान में एक लम्बा-चौड़ा शामियाना लगाया गया था। एक तरफ आदमियों का समुद्र उमड़ा हुआ था दूसरी तरफ समुद्र की लहरें उमड़ रही थीं, वह भी इस खुशी में शरीक थीं। जब उपस्थित लोगों ने रोहिणी बाई के आने की खबर सुनी तो हजारों आदमी उसे देखने के लिए खड़े हो गए। यही तो वह लड़की है। जिसने अबकी शास्त्री की परीक्षा पास की है। जरा उसके दर्शन करने चाहिये। अब भी इस देश की स्त्रियों में ऐसे रतन मौजूद हैं। भोले-भाले देशप्रेमियों में इस तरह की बातें होने लगीं। शहर की कई प्रतिष्ठित महिलाओं ने आकर रोहिणी को गले लगाया और आपस में उसके सौन्दर्य और उसके कपड़ों की चर्चा होने लगी। आखिर मिस्टर पुरुषोत्तमदास तशरीफ लाए। हालाँकि वह बड़ा शिष्ट और गम्भीर उत्सव था लेकिन उस वक्त दर्शन की उत्कंठा पागलपन की हद तक जा पहुँची थी। एक भगदड़सी मच गई। कुर्सियों की कतारे गड़बड़ हो गई। कोई कुर्सी पर खड़ा हुआ, कोई उसके हत्थों पर। कुछ मनचले लोगों ने शामियाने की रस्सियाँ पकड़ीं और उन पर जा लटके कई मिनट तक यही तूफान मचा रहा। कहीं कुर्सियां टूटीं, हीं कुर्सियाँ उलटीं, कोई किसी के ऊपर गिराए कोई नीचे। ज्यादा तेज लोगों में धौल-धप्पा होने लगा। तब बीन की सुहानी आवाजें आने लगीं। रोहिणी ने अपनी मण्डली के साथ देशप्रेम में डूबा हुआ गीत शुरू किया। सारे उपस्थित लोग बिलकुल शान्त थे और उस समय वह सुरीला राग, उसकी कोमलता और स्वच्छता, उसकी प्रभावशाली मधुरता, उसकी उत्साह भरी वाणी दिलों पर वह नशा सा

पैदा कर रही थी जिससे प्रेम की लहरें उठती हैं, जो दिल से बुराइयों को मिटाता है और उससे जिन्दगी की हमेशा याद रहने वाली यादगारें पैदा हो जाती हैं। गीत बन्द होने पर तारीफ की एक आवाज न आई। वहीं ताने कानों में अब तक गूँज रही थीं। गाने के बाद विभिन्न संस्थाओं की तरफ से अभिनन्दन पेश हुए और तब नरोत्तमदास लोगों को धन्यवाद देने के लिए खड़े हुए। लेकिन उनके भाषाण से लोगों को थोड़ी निराशा हुई। यों दोस्तो की मण्डली में उनकी वक्तृता के आवेग और प्रवाह की कोई सीमा न थी लेकिन सार्वजनिक सभा के सामने खड़े होते ही शब्द और विचार दोनों ही उनसे बेवफाई कर जाते थे। उन्होंने बड़ी.बड़ी मुश्किल से धन्यवाद के कुछ शब्द कहे और तब अपनी योग्यता की लज्जित स्वीकृति के साथ अपनी जगह पर आ बैठे। कितने ही लोग उनकी योग्यता पर ज्ञानियों की तरह सिर हिलाने लगे।

अब जलसा खत्म होने का वक्त आया। वह रेशमी हार जो सरस्वती पाठशाला की ओर से भेजा गया था, मेज पर रखा हुआ था। उसे हीरो के गले में कौन डाले, प्रेसिडेण्ट ने महिलाओं की पंक्ति की ओर नजर दौड़ाई। चुनने वाली आँख रोहिणी पर पड़ी और ठहर गई। उसकी छाती धड़कने लगी। लेकिन उत्सव के सभापति के आदेश का पालन आवश्यक था। वह सर झुकाये हुए मेज के पास आयी और काँपते हाथों से हार को उठा लिया। एक क्षण के लिए दोनों की आँखें मिलीं और रोहिणी ने नरोत्तमदास के गले में हार डाल दिया।

दूसरे दिन सरस्वती पाठशाला के मेहमान विदा हुए लेकिन कौशल्या देवी ने रोहिणी को न जाने दिया। बोली अभी तुम्हें देखने से जी नहीं भराए तुम्हें यहाँ एक हफ्ता रहना होगा। आखिर मैं भी तो तुम्हारी माँ हूँ। एक माँ से इतना प्यार और दूसरी माँ से इतना अलगाव!

रोहिणी कुछ जवाब न दे सकी।

यह सारा हफ्ता कौशल्या देवी ने उसकी विदाई की तैयारियों में खर्च किया। सातवें दिन उसे विदा करने के लिए स्टेशन तक आयीं। चलते वक्त उससे गले मिलीं और बहुत कोशिश करने पर भी आँसुओं को न रोक सकीं। नरोत्तमदास भी आये थे। उनका चेहरा उदास था। कौशल्या ने उनकी तरफ सहानुभूतिपूर्ण आँखों से देखकर कहा मुझे यह तो ख्याल ही न रहा, रोहिणी क्या यहाँ से पूना तक अकेली जायेगी क्या हर्ज है, तुम्हीं चले जाओ, शाम की गाड़ी से लौट आना। नरोत्तमदास के चेहरे पर खुशी की लहर दौड़ गयी, जो इन शब्दों में न छिप सकी 'अच्छा, मैं ही चला जाऊँगा।

वह इस फिक्र में थे कि देखें बिदाई की बातचीत का मौका भी मिलता है या नहीं। अब वह खूब जी भरकर अपना दर्दे दिल सुनायेंगे और मुमकिन हुआ तो उस लाज–संकोच को, जो उदासीनता के परदे में छिपी हुई हैए मिटा देंगे। रुक्मिणी को अब रोहिणी की शादी की फिक्र पैदा हुई। पड़ोस की औरतों में इसकी चर्चा होने लगी थी। लड़की इतनी सयानी हो गयी है, अब क्या बुढ़ापे में ब्याह होगा कई जगह से बात आयी, उनमें कुछ बड़े प्रतिष्ठित घराने थे। लेकिन जब रुक्मिणी उन पैमानों को सेठजी के पास भेजती तो वे यही जवाब देते कि मैं खुद फिक्र में हूँ। रुक्मिणी को उनकी यह टाल–मटोल बुरी मालूम होती थी। रोहिणी को बम्बई से लौटे महीना भर हो चुका था। एक दिन वह पाठशाला से लौटी तो उसे अम्मा की चारपाई पर एक खत पड़ा हुआ मिला। रोहिणी पढ़ने लगी, लिखा था, जब से मैंने तुम्हारी लड़की को बम्बई में देखा है, मैं उस पर रीझ गई हूँ। अब उसके बगैर मुझे चैन नहीं है। क्या मेरा ऐसा भाग्य होगा कि वह मेरी बहू बन सके 'मैं गरीब हूँ लेकिन मैंने सेठ जी को राजी कर लिया है। तुम भी मेरी यह विनती कबूल करो। मैं तुम्हारी लड़की को चाहे फूलों की सेज पर न सुला सकूँ, लेकिन इस घर का एक–एक आदमी उसे आँखों की पुतली बनाकर रखेगा। अब रहा लड़का। माँ के मुँह से लड़के का बखान कुछ अच्छा नहीं मालूम होता। लेकिन यह कह सकती हूँ कि परमात्मा ने यह जोड़ी अपनी हाथों बनायी है। सूरत में, स्वभाव में, विद्या में, हर दृष्टि से वह रोहिणी के योग्य है। तुम जैसे चाहे अपना इत्मीनान कर सकती हो। जवाब जल्द देना और ज्यादा क्या लिखूँ।

नीचे थोड़े से शब्दों में सेठजी ने उस पैगाम की सिफारिश की थी।

रोहिणी गालों पर हाथ रखकर सोचने लगी। नरोत्तमदास की तस्वीर उसकी आँखों के सामने आ खड़ी हुई। उनकी वह प्रेम की बातें, जिनका सिलसिला बम्बई से पूना तक नहीं टूटा था, कानों में गूंजने लगीं। उसने एक ठण्डी साँस ली और उदास होकर चारपाई पर लेट गई।

सरस्वती पाठशाला में एक बार फिर सजावट और सफाई के दृश्य दिखाई दे रहे हैं। आज रोहिणी की शादी का शुभ दिन। शाम का वक्त, बसन्त का सुहाना मौसम। पाठशाला के दारो–दीवार मुस्करा रहे हैं और हरा–भरा बगीचा फूला नहीं समाता। चन्द्रमा अपनी बारात लेकर पूरब की तरफ से निकला। उसी वक्त मंगलाचरण का सुहाना राग उस रूपहली चाँदनी और हल्के–हल्के हवा के झोकों में लहरें मारने लगा। दूल्हा आया, उसे देखते ही लोग हैरत में आ गए। यह नरोत्तमदास थे। दूल्हा मण्डप के नीचे गया। रोहिणी की माँ अपने को रोक न सकी, उसी वक्त जाकर सेठ जी के पैर पर गिर पड़ी। रोहिणी की आँखों से प्रेम और आन्दद के आँसू बहने लगे। मण्डप के नीचे हवन.कुण्ड बना था। हवन शुरू हुआ, खुशबू की लपेटें हवा में उठीं और सारा मैदान महक गया। लोगों के दिलो–दिमाग में ताजगी की उमंग पैदा हुई।

फिर संस्कार की बारी आई। दूल्हा और दुल्हन ने आपस में हमदर्दीय जिम्मेदारी और वफादारी के पवित्र शब्द अपनी जबानों से कहे। विवाह की वह मुबारक जंजीर गले में पड़ी जिसमें वजन है, सख्ती है, पाबन्दियाँ हैं लेकिन वजन के साथ सुख और पाबन्दियों के साथ विश्वास है। दोनों दिलों में उस वक्त एक नयी, बलवान, आत्मिक शक्ति की अनुभूति हो रही थी। जब शादी की रस्में खत्म हो गयीं तो नाच.गाने की मजलिस का दौर आया। मोहक गीत गूँजने लगे। सेठ जी थककर चूर हो गए थे। जरा दम लेने के लिए बागीचे में जाकर एक बेंच पर बैठ गये। ठण्डी–ठण्डी हवा आ रही आ रही थी। एक नशा–सा पैदा करने वाली शान्ति चारों तरफ छायी हुई थी। उसी वक्त रोहिणी उनके पास आयी और उनके पैरों से लिपट गयी। सेठ जी ने उसे उठाकर गले से लगा लिया और हँसकर बोले 'क्यों, अब तो तुम मेरी अपनी बेटी हो गयीं?'

❖नीता गुजर
सहायक सह टंकक (का.एवंप्र)

# लाल चुनरी

एक छोटे गाँव में एक गरीब परिवार रहता था। उनके पास कुछ भी नहीं थी, लेकिन उनकी बेटी एक बड़ी ख्वाबों वाली थी। वह दिन रात अपने ख्वाबों को पूरा करने की चाहत में जी रही थी। उसकी सबसे बड़ी ख्वाहिश थी कि वह एक लाल चुनरी पहन सके, जैसी कि उसने बाजार में देखी थी। गरीब परिवार के बाप बेटी की ख्वाहिश को पूरा करने के लिए हर संभव प्रयास करता था, लेकिन धन की कमी के कारण वह यह काम नहीं कर पाया। एक दिन, उसने अपनी बेटी से कहा, ''मेरी बेटी, मैं तुम्हें एक लाल चुनरी नहीं खरीद कर नहीं दे सकता, लेकिन मैं तुम्हारी मेहनत करने की शिक्षा दे सकता हूँ।''

बेटी ने अपने पिता के शब्दों को सुना और उसने तय किया कि वह खुद ही लाल चुनरी के लिए मेहनत करेगी। वह गाँव के पास एक छोटी सी दुकान में काम करने लगी और हर महीने अपने पैसे बचाने लगी। धीरे-धीरे, वह पैसे इकट्ठा करने लगी और अपने लक्ष्य की दिशा में आगे बढ़ती गई। अंत में उसने अपनी मेहनत और लगन से एक लाल चुनरी खरीदने के लिए पर्याप्त पैसे इकट्ठा किए। जब वह लाल चुनरी पहनकर अपने घर लौटी, तो उसके पिता की आँखों में खुशी के आंसू थे। उसकी मेहनत और संघर्ष ने उसे न सिर्फ लाल चुनरी का मालिक बना दिया, बल्कि उसने एक सीख भी सिखाई कि मेहनत से सभी सपने पूरे किए जा सकते हैं। यह कहानी हमें यह सिखाती है कि सफलता के लिए मेहनत और लगन सबसे महत्वपूर्ण होती हैं।

❖विजय कांबड़े
टीआर

# बारिश की बूंदे

एक छोटे से गाँव में एक बच्चा था। उसका नाम रवि था। रवि का गाँव बहुत सुंदर था। गाँव के पास एक छोटी झील थी। हर बार जब बारिश होती, तो झील के पानी से उनका खेत बहुत हरा-भरा हो जाते थे। एक बार रवि ने देखा कि बारिश हो रही है, लेकिन उसके खेतों में पानी की कमी थी। वह चिंतित हो गया। उसने समझा कि अब क्या करें? तभी रवि को याद आया कि उसके दादाजी ने कहा था कि बारिश के पानी को संचित करने के लिए कुएं खोदना चाहिए। रवि ने तुरंत दोनों हाथों से कुएं खोदने का काम शुरू किया। वह खुदाई करता रहा और देखता रहा कि कितना पानी निकलता है। थोड़ी देर बाद, रवि के खेत में पानी भर गया और उसके खेतों में फिर से हरा-भरा पौधे उगने लगे।

इस कहानी से हमें यह सिखने को मिलता है कि हमें अपने समस्याओं का समाधान खोजने के लिए सक्रिय रहना चाहिए। रवि ने भी खुद को हर मुश्किल से निपटने के लिए तत्पर और संघर्षशील साबित किया। बस वैसे ही, हमें भी अपने जीवन में आने वाली हर बारीश की बूँद का सामना करना होगा, और हमें उसके साथ संघर्ष करना होगा, ताकि हमारे जीवन के खेत हमेशा हरा-भरा रहे।

❖अंकुर पासी
टीआर

# चिड़िया से सिख

एक राज्य में एक राजा शासन करते थे। उनके महल के पास एक खूबसूरत बगीचा था, जिसे देखकर हर कोई मोहित हो जाता था। इस बगीचे की देखभाल एक माली के ऊपर थी। माली बगीचे में अपने पौधों की सफाई–सुविधा करते थे और वे पौधे सुंदरता से खिलते रहते थे। राजामाली के प्रयासों से बहुत प्रसन्न रहते थे।

बगीचे में एक अंगूर की बेल थी, जिस पर अनेक प्रकार के मीठे अंगूर फल रहे थे। एक दिन, एक चिड़िया बगीचे में आकर उस अंगूर की बेल पर आ गई। उसने विभिन्न प्रकार के अंगूर खाने का आनंद उठाया और उनमें से कुछ बेहद मीठे थे। इसके बाद, वह रोज़ाना उसी बेल पर आकर खाना खाने लगी। वह अंगूरों की मिठास में पूरी तरह लिपटी रह गई।

माली ने देखा कि चिड़िया बगीचे में आकर अंगूर खाती जा रही है और उसने उसे खराब कर देने का प्रयास किया। वह उसे बाग से भगाने के लिए तंग करने लगा,

लेकिन चिड़िया किसी भी तरह उसके प्रयासों से बच गई। माली की महनत व्यर्थ थी।

बहुत सारे प्रयासों के बाद भी, जब माली ने चिड़िया को भगाने में सफल नहीं होने का अहसास हुआ तो, वह राजा के पास गया। माली ने राजा से चिड़िया के बारे में बताया और कहा, 'महाराज, चिड़िया ने मेरे बगीचे को अपने खाने का स्थान बना लिया है। मैं आपकी मदद चाहता हूँ।'

राजा ने सुनकर तय किया कि उन्हें चिड़िया को बगीचे से बाहर निकालने के लिए कुछ करना होगा। वह अगले दिन बगीचे में गए और बेल पर छिपकर बैठ गए। रोज़ की तरह, चिड़िया आई और अंगूर खाने लगी। जब चिड़िया अंगूर खा रही थी, राजा ने उसे पकड़ लिया।

चिड़िया अंगूर की बेल पर बैठी थी और राजा ने उसे पकड़ लिया, लेकिन वह उड़कर उसकी पकड़ से बच गई और पेड़ की ऊँची डाल पर बैठ गई। राजा ने चिड़िया को पकड़ कर देखा और विचारने लगा कि उसने कैसे गलती की। चिड़िया के पास एक महत्वपूर्ण सन्देश था, और उसने राजा को यह सिखाने का अवसर दिया कि ज्ञान को सिर्फ सुनने से काम नहीं आता, उसे अमल में लाना भी जरूरी होता है।

चिड़िया ने अपने प्राणों को बचाने के लिए राजा की पकड़ से बचने का एक चालबाज़ी सोची थी, जिसने राजा को सोचने पर मजबूर किया कि ज्ञान सिर्फ शब्दों में नहीं होता, बल्कि उसका अमल भी जरूरी होता है। उस दिन के बाद, राजा ने चिड़िया से बहुत सीखा। उन्होंने समझ लिया कि ज्ञान को अपने जीवन में अमल में लाना ही असली ज्ञान है।

❖शमा खोब्रागड़े
सहायक सह टंकक

# बोले हुए शब्द वापस नहीं आते

एक बार एक किसान ने अपने पडोसी को भला बुरा कह दिया, पर जब बाद में उसे अपनी गलती का एहसास हुआ तो वह एक संत के पास गया 'उसने संत से अपने शब्द वापस लेने का उपाय पूछा' संत ने किसान से कहा,''तुम खूब सारे पंख इकठ्ठा कर लो, और उन्हें शहर के बीचो-बीच जाकर रख दो 'किसान ने ऐसा ही किया और फिर संत के पास पहुंच गया। तब संत ने कहा ''जाओ और उन पंखों को इकठ्ठा कर के वापस ले आओ''

किसान वापस गया पर तब तक सारे पंख हवा से इधर-उधर उड़ चुके थे। और किसान खाली हाथ संत के पास पहुंचा'' तब संत ने उससे कहा कि ठीक ऐसा ही तुम्हारे द्वारा कहे गए शब्दों के साथ होता है, तुम आसानी से इन्हें अपने मुख से निकाल तो सकते हो पर चाह कर भी वापस नहीं ले सकते।

**इस कहानी से क्या सीख मिलती है :**

कुछ कड़वा बोलने से पहले ये याद रखें कि भला-बुरा कहने के बाद कुछ भी कर के अपने शब्द वापस नहीं लिए जा सकते'' हाँ, आप उस व्यक्ति से जाकर क्षमा ज़रूर मांग सकते हैं और मांगनी भी चाहिए, पर ''कुछ ऐसा होता है की कुछ भी कर लीजिये इंसान कहीं ना कहीं''हो ही जाता है, जब आप किसी को बुरा कहते हैं तो वह उसे कष्ट पहुंचाने के लिए होता है पर बाद में वो आप ही को अधिक कष्ट देता है'' खुद को कष्ट देने से क्या लाभ, इससे अच्छा तो है की चुप रहा जाए'

❖नितिन रोकड़े
सहायक सह टंकक

# खाली डिब्बा

मैनेजमेंट की शिक्षा प्राप्त कर रहे कुछ स्टूडेंट्स को प्रॉब्लम सॉल्विंग स्किल्स डेवलप करने के बारे में बताया जा रहा था। कुछ देर पढ़ाने के बाद प्रोफेसर ने बच्चों को एक केस स्टडी सोल्व करने को दी। जापान की एक साबुन बनाने वाली कम्पनी अपनी क्वालिटी और वर्ल्ड क्लास प्रोसेसेज के लिए जानी जाती थी। पर आज उनके सामने एक अजीब समस्या आ खड़ी हुई, उन्हें कम्प्लेंट मिली की एक कस्टमर ने जब साबुन का डिब्बा खरीदा तो वो खाली था। कंप्लेंट की जांच की गयी तो पता चला चूक कंपनी के तरफ से ही हुई थी, असेंबली लाइन से जब साबुन डिलीवरी डिपार्टमेंट को भेजे जा रहे थे तब एक डिब्बा खाली ही चला गया।

इस घटना से कम्पनी की काफी किरकिरी हुई। कम्पनी के अधिकारी बड़े परेशान हुए कि आखिर ऐसा कैसे हो गया। तुरंत एक हाई लेवल मीटिंग बुलाई गयी, गहन चर्चा हुई, और भविष्य में ऐसी घटना ना हो इसके लिए लोगों से उपाए मांगे गए। बहुत विचार-विमर्श के बाद निश्चय किया गया कि असेंबली लाइन के अंत में एक एक्स-रे मशीन लगायी जायेगी जो एक हाई रेसोलुशन मॉनिटर से कनेक्टेड होगी। मॉनिटर के सामने बैठा व्यक्ति देख पायेगा की डिब्बा खाली है या भरा। कुछ ही दिनों में ये सिस्टम इम्प्लीमेंट कर दिया गया, पर जब एक छोटी रैंक के कर्मचारी को इस समस्या का पता चला तो उसने इस समस्या का हल एक बड़े ही सस्ते और आसान तरीके से निकाल दिया। एक ऐसा तरीका जिसमे ना लाखों की मशीन खरीदने का खर्च था और ना ही किसी आदमी को रखने की ज़रूरत।

उस आदमी ने ये किया। उसने एक हाई पावर इलेक्ट्रिकल फैन खरीदा और असेंबली लाइन के सामने लगा दिया, अब हर एक डिब्बे को पंखे की तेज हवा के सामने से होकर गुजरना पड़ता और जैसे ही कोई खाली डिब्बा सामने आता हवा उसे उड़ा कर दूर फेंक देती। फ्रेंडस इस तरह के सोल्युशन को हम आउट ऑफ द बॉक्स या क्रिएटिव थिंकिंग कहते हैं। और सबसे अच्छी बात ये है कि इसका किताबी ज्ञान से कोई लेना-देना नहीं होता। हम में से हर एक व्यक्ति अपनी समस्याओं को सरल तरीकों से सुलझा सकता है पर शायद हम सबसे पहले दिमाग में आने वाले हल को ही पकड़ कर बैठ जाते हैं। आइये इस केस स्टडी से प्रेरणा लेते हुए हम भी अपनी समस्याओं के नए-नए समाधान ढूंढें और इस जीवन को सरल बनाएं।

## ग्लास को नीचे रख दीजिये

एक प्रोफेसर ने अपने हाथ में पानी से भरा ग्लास पकडते हुए क्लास शुरू की उन्होंने उसे ऊपर उठा कर सभी स्टूडेंट को दिखाय और पूछा आपके हिसाब से ग्लास का वजन कितना होगा।

50gm...100gm...125gm...छात्रों ने उत्तर दिया।

''जब तक मैं इसका वज़न ना कर लूँ मुझे इसका सही वज़न नहीं बता सकता'' प्रोफ़ेसर ने कहा, ''पर मेरा सवाल है : यदि मैं इस ग्लास को थोड़ी देर तक इसी तरह उठा कर पकडे रहूँ तो क्या होगा?

कुछ नहीं।। ...छात्रों ने कहा।

'अच्छा, अगर मैं इसे मैं इसी तरह एक घंटे तक उठाये रहूँ तो क्या होगा?... प्रोफ़ेसर ने पूछा।

'आपका हाथ दर्द होने लगेगा', एक छात्र ने कहा। ''तुम सही हो, अच्छा अगर मैं इसे इसी तरह पूरे दिन उठाये रहूँ तो का होगा?'

''आपका हाथ सुन्न हो सकता है, आपके 'मसल' में भारी तनाव आ सकता है, लकवा मार सकता है और पक्का आपको 'हॉस्पिटल' जाना पड़ सकता है'''किसी छात्र ने कहा और बाकी सभी हंस पड़े...

'बहुत अच्छा, पर क्या इस दौरान इसका वज़न बदला?.. प्रोफ़ेसर ने पूछा.

उत्तर आया 'नहीं'

'तब भला हाथ में दर्द और मांशपेशियों में तनाव क्यों आया?'

स्टूडेंट अचरज में पड़ गए, फिर प्रोफ़ेसर ने पूछा ''अब दर्द से निजात पाने के लिए मैं क्या करूँ?'''ग्लास को नीचे रख दीजिये! एक छात्र ने कहा.

बिलकुल सही! प्रोफेसर ने कहा- लाइफ की प्रॉम्बलम्स भी कुछ इसी तरह होती हैं. इन्हें कुछ देर तक अपने दिमाग में रखिये और लगेगा की सब कुछ ठीक है. उनके बारे में ज्यादा देर सोचिये और आपको पीड़ा होने लगेगी और इन्हें और भी देर तक अपने दिमाग में रखिये और ये आपको पॅरालाइस करने लगेंगी'' और आप कुछ नहीं कर पायेंगे. अपने जीवन में आने वाली चुनातियों और समस्याओं के बारे में सोचना ज़रूरी हैं पर उससे भी ज्यादा ज़रूरी है दिन के अंत में सोने जाने से पहले उन्हें नीचे रखना. इस तरह सेए आप स्ट्रेस में नहीं रहेंगे, आप हर रोज़ मजबूती और ताजगी के साथ उठेंगे और सामने आने वाली किसी भी चुनौती का सामना कर सकेंगे।

❖अर्चना उम्बर्गी
सहायक सह टंकक

# अपनी तुलना दूसरों से ना करें

एक बार की बात है किसी जंगल में एक कौवा रहता था, वो बहुत खुश था, क्योंकि उसकी इच्छाएं नहीं थी। वह अपनी जिंदगी से संतुष्ट था, लेकिन एक बार उसने जंगल में किसी हंस को देख लिया और उसे देखते ही सोचने लगा की ये प्राणी कितना सुन्दर है, ऐसा प्राणी तो मैंने पहले कभी नहीं देखा, इतना साफ और सफेद, यह तो जंगल में औरों से बहुत सफेद सुंदर है, इसलिए यह तो बहुत खुश रहता होगा।

कौवा हंस के पास गया और पुछा, भाई तुम इतने सुंदर है, इसलिए तुम बहुत खुश होगें। इस पर हंस ने जवाब दिया, हां मैं पहले बहुत खुश रहता था, जब तक मैंने तोते को नहीं देखा था। उसे देखने के बाद से लगता है कि तोता धरती का सबसे सुंदर प्राणी है। हम दोनों के शरीर का तो एक ही रंग है लेकिन तोते के शरीर पर दो-दो रंग है, उसके गले में लाल रंग का घेरा और वो सूर्ख हरे रंग का था सच में वो बेहद खूबसूरत था।

अब कौवे ने सोचा कि हंस तो तोते को सबसे सुंदर बता रहा है, तो फिर उसे देखना होगा। कौवा तोते के पास गया और पूछा, भाई तुम दो-दो रंग पाकर खुश होगें। इस पर तोते ने कहा, हाँ मैं तब तक खुश था जब तक मोर को नहीं देखा था। मेरे पास तो दो ही रंग हैं लेकिन मोर के शरीर पर तो कई तरह के रंग हैं। अब कौवे ने सोचा सबसे ज्यादा खुश कौन है, यह तो मैं पता करके ही रहूंगा। इसलिए अब मोर से मिलना ही पडेगा। कौवा ने मोर को जंगल में ढूंढा लेकिन उसे पूरे जंगल में एक भी मोर नहीं मिला और मोर को ढूंढते-ढूंढते वह चिडियाघर में पहुंच गया, तो देखा मोर को देखने बहुत से लाग आए हुए हैं और उसके आसपास अच्छी खासी भीड है। सब लोगों के जाने के बाद कौवे ने मोर से पूछा, भाई तुम दुनिया के सबसे सुंदर जीव हो और रंगबिरंगे हो, तुम्हारे साथ लोग फोटो खिंचवा रहे थे। तुम्हें तो बहुत अच्छा लगता होगा और तुम तो दुनिया के सबसे खुश जीव होगें। इस पर मोर ने दुखी होते हुए कहा, भाई अगर सुंदर हूँ तो भी क्या फर्क पडता है मुझे लोग इस चिडियाघर में कैद करके रखते हैं, लेकिन तुम्हें तो कोई चिड़ियाघर में कैद करके नहीं रखता और तुम जहां चाहो अपनी मर्जी से घूम फिर सकते हो। इसलिए दुनिया के सबसे संतुष्ट और खुश जीव तो तुम्हें ही होना चाहिए, क्योंकि तुम आजाद रहते हो। कौवा हैरान रह गया, क्योंकि उसके जीवन की अहमियत कोई दूसरा बता गया। दोस्तों ऐसा ही हम लोग भी करते है। हम अपनी खुशियों और गुणों की तुलना दूसरों से करते है, ऐसे लोगों से जिनका रहन-सहन का माहौल हमसे बिलकुल अलग होता है। हमारी जिंदगी में बहुत सारी ऐसी चीजें होती हैं, केवल हमारे पास है, लेकिन हम उसकी अहमियत समझकर खुश नहीं होते। लेकिन दूसरों की छोटी खुशी भी हमें बड़ी लगती है, जबकि हम अपनी बडी खुशियों को इग्नोर कर देते हैं।

❖सोनू वासनिक
कुक

भारत सरकार

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग

## नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.-1), नागपुर

संयोजक: पावर ग्रिड कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड, नागपुर

# प्रमाण पत्र

मॉयल लिमिटेड, नागपुर को वर्ष 2023 - 2024 हेतु बड़ा कार्यालय वर्ग में 'श्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन' के लिए नराकास (का.-1) द्वारा प्रोत्साहन पुरस्कार-I प्रदान किया जाता है।

(हर प्रसाद पाल)
सचिव, नराकास (का.-1)

दिनांक : 08 मई, 2024

(आलोक)
अध्यक्ष, नराकास (का.-1)

---

भारत सरकार

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग

## नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.-1), नागपुर

संयोजक: पावर ग्रिड कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड, नागपुर

# प्रमाण पत्र

मॉयल लिमिटेड, नागपुर को वर्ष 2023-24 के लिए श्रेष्ठ गृह पत्रिका की श्रेणी में कार्यालय की पत्रिका मॉयल भारती को प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

(हर प्रसाद पाल)
सचिव, नराकास (का.-1)

दिनांक : 08 मई, 2024

(आलोक)
अध्यक्ष, नराकास (का.-1)

भारत सरकार
गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.-1), नागपुर
संयोजक :-पावर ग्रिड कार्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड, नागपुर
वर्ष 2023-24
(बडा कार्यालय वर्ग)
☆ राजभाषा शील्ड ☆
राजभाषा में श्रेष्ठ कार्य निष्पादन के लिए
प्रोत्साहन 1
मॉयल लिमिटेड
नागपुर

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.-1),
नागपुर
नराकास पुरस्कार
08 मई, 2024
गृह पत्रिका
वर्ष 2023-24
☆ मॉयल भारती ☆
मॉयल लिमिटेड, नागपुर
प्रोत्साहन पुरस्कार